



लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com



नक्सली मानवाधिकारों के सबसे बड़े उल्लंघनकर्ता राष्ट्रीय-10

त्योहार में टमाटर की कीमतों ने बिगाड़ा थाली का स्वाद

राजेश कुमार। नई दिल्ली

देश के कई शहरों में टमाटर अपना रंग दिखा रहा है। दिल्ली-एनसीआर में टमाटर के दाम 100 रुपये प्रति किलोग्राम के पार पहुंच गए हैं। पंजाब कॉलोनियों में तो 120 रुपये प्रति किलोग्राम बिक रहा है। इसके अलावा प्याज और आलू समेत अन्य सब्जियों की कीमतों में भी उछाल आया है। इससे लोगों के किचन का बजट बिगड़ गया है। आसमान छूती महंगाई के बीच सब्जियों की कीमत बढ़ने से लोगों की चिंता बढ़ गई है। प्याज 80 रुपये प्रति किलो बिक रहा है, जबकि आलू की कीमत 30 से 40 रुपये प्रति किलो के बीच है। सितंबर के तीसरे हफ्ते तक टमाटर का खुदरा भाव 50 रुपये प्रति किलो था। इससे सितंबर में घर में पकाए

जाने वाले शाकाहारी खाने की कीमत में 11 फीसदी तक का इजाफा हुआ है। शाकाहारी खाने की औसत कीमत अगस्त के 31.2 रुपये से बढ़कर सितंबर में 31.3 रुपये हो गई। शाकाहारी भोजन की कीमत में सब्जियों की हिस्सेदारी करीब 37 फीसदी है, जबकि दालों की हिस्सेदारी 9 फीसदी है, जिसकी कीमतों में भी पिछले महीने 14 फीसदी का इजाफा हुआ। लखनऊ में टमाटर, प्याज और आलू के खुदरा दाम एक महीने में लगभग दोगुने हो गए हैं। इस बढ़ोतरी की मुख्य वजह आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र जैसे प्रमुख उत्पादक राज्यों में उच्च आर्द्रता जैसी प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियों और लंबे समय तक मानसून के कारण फसल का नुकसान बताया जा रहा है।

व्यापारियों ने इसका कारण कर्नाटक और महाराष्ट्र से आपूर्ति में कमी को बताया है, क्योंकि दूसरी फसल की खेती समाप्त हो गई है। आजादपुर मंडी, गाजीपुर मंडी और ओखला सब्जी मंडी समेत दिल्ली की प्रमुख थोक सब्जी मंडियों में भी टमाटर के दाम बढ़ गए हैं। आजादपुर मंडी के टमाटर व्यापारियों के मुताबिक, इस समय रोजाना 50 से 60 ट्रक के मुकाबले 30 से 35 ट्रकों की आवक है। थोक बाजार में टमाटर 70-80 रुपये प्रति किलोग्राम बिक रहा है और व्यापारियों को उम्मीद है कि आने वाले दिनों में कुछ पंजाब कॉलोनियों में टमाटर के दाम 125 से 150 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच सकते हैं। प्याज का थोक भाव 45 रुपये प्रति किलोग्राम और आलू का 30 रुपये प्रति किलोग्राम है। आपूर्ति



सामान्य होने में कम से कम पांच से छह सप्ताह या उससे अधिक समय लगेगा।

जुलाई के बाद से यह तीसरा मौका है जब दिल्ली और एनसीआर में खुदरा टमाटर की कीमतें 100

रुपये प्रति किलोग्राम को पार कर गई हैं। बारिश के कारण उत्पादक केंद्रों से आपूर्ति बाधित होने के कारण इस साल जुलाई और अगस्त में भी इसी तरह के रुझान देखे गए थे। उल्लेखनीय है कि कृषि मंत्रालय ने पिछले साल की कीमतों में उछाल के कारण टमाटर के उत्पादन में 4.38 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 21.32 मिलियन टन होने का अनुमान लगाया है। उपभोक्ता मामलों के विभाग के मूल्य निगरानी प्रभाग के अनुसार, सोमवार को दिल्ली में टमाटर का औसत मूल्य 90 रुपये प्रति किलोग्राम था। इसी तरह, प्याज 58 रुपये प्रति किलोग्राम और आलू 40 रुपये प्रति किलोग्राम पर बेचा जा रहा था। पिछले तीन महीनों में टमाटर के थोक मूल्य में 73.24 फीसदी की वृद्धि हुई है। टमाटर की बढ़ती कीमतों से निपटने के लिए, राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ (एनसीसीएफ) ने सोमवार को मंडियों से सीधे टमाटर खरीदकर और उन्हें दिल्ली-एनसीआर के 50 स्थानों पर 65 रुपये प्रति किलोग्राम

की रियायती दर पर बेचकर बाजार में हस्तक्षेप शुरू किया। उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे ने 65 रुपए प्रति किलोग्राम की दर से टमाटर बेचने वाली भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ लिमिटेड (एनसीसीएफ) की वेब को हरी झंडी दिखाई। उन्होंने कहा कि टमाटर की कीमतों को कम करने की कोशिश कर रहे हैं। इस बाजार हस्तक्षेप से अगले 3-4 दिनों में टमाटर की कीमतें कम हो जाएंगी। उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे ने कृषि भवन में मोबाइल वैन और एनसीसीएफ की खुदरा दुकानों के जरिए टमाटर की खुदरा बिक्री को शुरूआत की। अन्य सब्जियों की कीमतों में भी तेजी देखी गई है। बीन्स अब 120 रुपये प्रति किलो, शिमला मिर्च 80 से 100 रुपये प्रति

किलो, करेला 60 रुपये प्रति किलो, लौकी 50 रुपये प्रति किलो, गोभी 80 रुपये प्रति किलो, सहजन 70 रुपये प्रति किलो, खीरा 60 रुपये प्रति किलो, बैंगन 60 रुपये प्रति किलो और आम 80 रुपये प्रति किलो बिक रही है। धनिया पत्ती की कीमतें 100 रुपये से 120 रुपये प्रति किलो तक हैं। राष्ट्रीय राजधानी के कई निवासियों ने अपने स्थानीय बाजारों और ऑनलाइन खुदरा बिक्री प्लेटफॉर्म पर टमाटर की बढ़ती कीमतों पर निराशा व्यक्त की। साकेत निवासी राजीव परमार ने कहा, उन्हें खर्चों को प्रबंधित करने के लिए खपत कम करनी होगी। कृषि मंत्रालय के अनुसार, प्रमुख क्षेत्रों में कम पैदावार के कारण प्याज का उत्पादन 19.76 फीसदी घटकर 24.24 (शेष पृष्ठ 9)

सीबीआई की चार्जशीट में आरजी कर मामले में गैंगरेप का उल्लेख नहीं



कोलकाता में आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में बलात्कार और हत्या की घटना के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे कुछ जूनियर डॉक्टरों के स्वास्थ्य मानकों को दर्शाता एक आंकड़ा।

सौरभ सेनगुप्ता। कोलकाता

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में डॉक्टर से रेप और हत्या के मामले में मुख्य आरोपी संजय रॉय के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल कर दिया है। सीबीआई द्वारा दाखिल प्रारंभिक चार्जशीट में कहा गया है कि मामले में सामूहिक बलात्कार का संकेत नहीं है। हालांकि एंजेंसी ने कहा कि अन्य संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता है, क्योंकि अभी भी कुछ कड़ियां गायब हैं। फिलहाल संजय रॉय मुख्य आरोपी है, जिसने अपराध को अंजाम दिया है। सूत्रों ने बताया कि 45 पन्नों की चार्जशीट में संजय रॉय को पूछताछ में बताया कि उसने पहले पीड़िता का गला घोट दिया, क्योंकि वह विरोध कर रही थी और फिर उसने यह महसूस किए बिना बलात्कार किया कि वह मर चुकी है। सियालदह कोर्ट के वकीलों ने कहा, अगर ऐसा है, तो उसने पीड़िता के मरने के बाद उसका बलात्कार किया था। आरजीकेएमसीएच के चेस्ट मेडिसिन विभाग के सेमिनार हॉल के अंदर हुए

बलात्कार और हत्या के 58वें दिन आरोप-पत्र दाखिल किया गया। 31 वर्षीय स्नातकोत्तर प्रशिक्षु डॉक्टर का शव 9 अगस्त को घटनास्थल से मिलने के एक दिन बाद रॉय को गिरफ्तार किया गया था। इस घटना के बाद देश भर में विरोध प्रदर्शन हुए थे जो अभी भी जारी है। कोलकाता पुलिस के साथ काम करने वाले नागरिक स्वयंसेवक रॉय का भी पॉलीग्राफ टेस्ट किया गया। उन्होंने कथित तौर पर जांच अधिकारियों को बताया कि वह उस दुर्भाग्यपूर्ण वाले दिन सुबह चौथी मंजिल पर गए थे, जहां महिला डॉक्टर ब्रेक के दौरान सो रही थीं। पीड़िता के शव के पास मिले ब्रूट्यूथ डिवाइस के आधार पर रॉय को गिरफ्तारी किया गया था, जो अस्पताल की इमारत की तीसरी मंजिल पर जाते समय सीसीटीवी फुटेज में भी कैद हो गया। सीबीआई के आरोप-पत्र में किए गए दावों के बावजूद, आरजीकेएमसीएच के डॉक्टरों का मानना है कि जिस तरह से पीड़िता के साथ बलात्कार किया गया और उसे जितनी चोटें आईं वह किसी एक व्यक्ति का काम नहीं हो सकता। संदेह तब और गहरा गया जब

कॉलेज के तत्कालीन प्रिंसिपल संदीप घोष के आदेश पर अस्पताल प्रशासन ने उस इलाके में मरम्मत का काम शुरू कर दिया, जहां वारदात हुई थी। घोष को स्थानीय पुलिस स्टेशन के अधिकारी के साथ गिरफ्तार किया गया है, जिसके अधिकार क्षेत्र में यह इलाका आता है। इस मामले में सबूतों से छेड़छाड़ करने के आरोप में संजय के अलावा आरजी कर बलात्कार और हत्या मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इन पर सबूतों से छेड़छाड़ करने और स्वास्थ्य विभाग के अंदर भ्रष्टाचार का रिकॉर्ड चलाने का आरोप है। इस बीच, पीड़िता को न्याय दिलाने की मांग को लेकर जूनियर डॉक्टर का अनिश्चितकालीन अनशन सोमवार को दूसरे दिन भी जारी रहा।

इस दौरान वरिष्ठ डॉक्टर भी उनके साथ सांकेतिक अनशन में शामिल हो गए। पीड़िता के लिए न्याय की मांग के अलावा, डॉक्टरों ने राज्य सरकार के समक्ष दस सूत्री मांगें रखी हैं, जिनमें मरीजों के लिए केंद्रीकृत रेफरल प्रणाली शामिल है ताकि बिस्तरों की तलाश में अस्पतालों के बीच चक्कर लगाने की परेशानी से बचा जा सके, परिसर में सीसीटीवी कैमरे, अस्पतालों के अंदर पर्याप्त सुरक्षा कर्मियों की तैनाती, डॉक्टरों के लिए शौचालय और वाशरूम, सतारूढ़ पार्टी के समर्थक डॉक्टरों द्वारा चलाए जा रहे रिकॉर्ड को खत्म करना और अंत में सबसे महत्वपूर्ण बात प्रमुख स्वास्थ्य सचिव एनएस निगम को उनके पद से हटाना शामिल है। इस बीच अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान डॉक्टरों की एक टीम ने सोमवार को 11 वर्षीय लड़की का पोस्टमार्टम किया, जिसके साथ शनिवार शाम दक्षिण 24 परगना के जयनगर ब्लॉक के महिष्मरी गांव में बलात्कार के बाद हत्या कर दी गई थी।



केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान किसानों के प्रतिनिधित्व से मिलते हुए।

झारखंड में लागू करेंगे एनआरसी: शिवराज

पायनियर समाचार सेवा। रांची/नई दिल्ली

झारखंड में इस साल के अंत तक विधानसभा चुनाव होने की संभावना है। चुनाव से पहले राजनीतिक सरगमी बढ़ती जा रही है। केंद्र ने सोमवार कहा कि अगर भाजपा सत्ता में आई तो झारखंड में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) करेगी। केंद्रीय मंत्री और राज्य के भाजपा प्रभारी शिवराज सिंह चौहान ने झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की अगुवाई वाली सरकार पर राज्य में बांग्लादेशी घुसपैठियों को संरक्षण देने का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया कि झारखंड में माटी, बेटी और रोटी खतरों में हैं। भाजपा इसकी इनकी रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। झारखंड को बचाने का दावा करते हुए चौहान ने कहा कि एक राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर का मसौदा तैयार कर एनआरसी को लागू किया जाएगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि घुसपैठियों को राज्य से बाहर खदेड़ जाएगा।

राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) एक रजिस्टर है जिसमें सभी वास्तविक भारतीय नागरिकों के नाम शामिल हैं और वर्तमान में, केवल असम में ही लागू है। इसका मकसद यह सुनिश्चित करना है कि

देश में रह रहे लोग कानूनी रूप से नागरिक हैं और अवैध प्रवासियों की पहचान की जा सके। केंद्र अन्य राज्यों में भी एनआरसी लागू करने की योजना बना रहा है। नागालैंड पहले से ही स्वदेशी निवासियों के रजिस्टर के रूप में एक समान डेटाबेस बना रहा है। केंद्र एक राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) बनाने की भी योजना बना रहा है, जिसमें नागरिकों की जनसांख्यिकी और बायोमेट्रिक जानकारी होगी। भाजपा को केवल सत्ता में आने की चिंता नहीं है। झारखंड में घुसपैठ के कारण माटी, बेटी, रोटी खतरों में हैं। केंद्रीय कृषि मंत्री ने दिल्ली के लिए रवाना होते समय रांची के बिरसा मुंडा हवाई अड्डे पर कहा, झारखंड की रक्षा करना हमारा संकल्प है। झारखंड के चुनाव प्रभारी चौहान ने आरोप लगाया कि विदेशी धरती से घुसपैठ हुई है और हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली सरकार उनके आधार और मतदाता पहचान पत्र बनाकर उन्हें संरक्षण दे रही है। घुसपैठिए झारखंड आ रहे हैं, यहां बेटीयों से शादी कर रहे हैं, जमीन खरीद रहे हैं और स्थानीय निकायों में अपना प्रभाव बढ़ा रहे हैं। यह बहुत खतरनाक है और यह झारखंड को बर्बाद कर रहा है। (शेष पृष्ठ 9)

दिवाली पर चीन के सजावटी सामानों का करेंगे बहिष्कार : राम जन्मभूमि ट्रस्ट

बिस्वजीत बनर्जी। लखनऊ

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने इस साल राम जन्मभूमि परिसर में दिवाली समारोह के लिए लाइट सहित चाइनीज सजावटी सामानों के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाकर मेक इन इंडिया को बढ़ाव देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। साथ ही फैशन डिजाइनर मनीष मल्होत्रा द्वारा राम लला के लिए खास पोशाक तैयार करने का प्रस्ताव रखा है। ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने स्पष्ट किया है कि इस समारोह में चीनी वस्तुओं, विशेष रूप से चीनी लाइटों का उपयोग नहीं होगा। इसके स्थान पर स्थानीय उत्पादों और डिजाइनर परिधानों का इस्तेमाल कर भव्य समारोह की योजना बनाई गई है, जिसमें गिनीज रिकॉर्ड बनाने का भी लक्ष्य रखा गया है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, राम मंदिर में दिवाली उत्सव स्थानीय कारीगरों और पारंपरिक शिल्प को बढ़ावा देने पर केंद्रित होगा। 22 जनवरी, 2024 को मंदिर

के भव्य उद्घाटन के बाद यह पहला उत्सव भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को उजागर करेगा। भारत की पारंपरिक शिल्पकला का सम्मान करने के लिए स्थानीय कारीगरों द्वारा तैयार किए गए दो लाख दीयों से मंदिर को रोशन किया जाएगा। ट्रस्ट ने मंदिर की सुंदरता को बनाए रखने के लिए दीयों की व्यवस्था की सावधानीपूर्वक योजना बनाई है। इस वर्ष के उत्सव की एक खास विशेषता राम लला और उनके भाइयों के लिए प्रसिद्ध भारतीय फैशन डिजाइनर मनीष मल्होत्रा द्वारा तैयार किए गए विशेष रूप से डिजाइन किए गए परिधान हैं। अपनी जटिल शिल्पकला, परंपरा और आधुनिकता के मिश्रण के लिए जाने वाले मल्होत्रा के डिजाइन देवता के श्रृंगार में एक विशेष आकर्षण जोड़ेंगे। ट्रस्ट के एक सदस्य ने कहा, मनीष मल्होत्रा उत्सव की मेक इन इंडिया बढ़ावा देने के साथ देवताओं के लिए एपे विशेष परिधान तैयार कर रहे हैं। उत्सव में पूरे दिन विशेष प्रसाद और (शेष पृष्ठ 9)



हैदराबाद हाउस में बैठक से पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मालदीव के राष्ट्रप्रति मो. मुइज्जु के साथ। इस दौरान दोनों देशों के बीच कई समझौतों पर हस्ताक्षर हुए (समाचार पृष्ठ 9)

षष्ठी कात्यायनी



चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूल वरवाह्या।

कात्यायनी शुभ दृष्टाद् देवी दानवघातिनी। नवरात्र की षष्ठी तिथि को मां दुर्गा के कात्यायनी स्वरूप की पूजा की जाती है। माता का उग्र स्वरूप संयम और साधना का प्रतीक है। मां कात्यायनी का स्वरूप चमकोला और तेजमय है। मां कात्यायनी की पूजा करने से भक्तों को आशानी से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। मां कात्यायनी महर्षि कात्यायन की पुत्री के रूप में जानी जाती हैं।

विरोध के नाम पर अराजकता स्वीकार नहीं: योगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि किसी भी जाति, मत-मजहब अथवा संप्रदाय से जुड़े हुए ईष्ट देवी-देवता, महापुरुषों अथवा साधु-संतों के विरुद्ध अपमानजनक टिप्पणी अस्वीकार्य है, लेकिन विरोध के नाम पर अराजकता भी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। त्योहारों के दृष्टिगत सोमवार को मुख्य सचिव, डीजीपी, अपर मुख्य सचिव गृह, एवं अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कानून व्यवस्था की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हर मत, संप्रदाय की आस्था का सम्मान होना चाहिए। महापुरुषों के प्रति

● वरिष्ठ अधिकारियों के साथ योगी ने की बैठक

● कहा, कोई भी व्यक्ति अगर आस्था के साथ खिलवाड़ करेगा, तो उसे कानून के दायरे में लाकर कठोरता पूर्वक सजा दिलाई जाएगी

प्रत्येक नागरिक के मन में कृतज्ञता का भाव होना चाहिए, लेकिन इसके लिए बाध्य नहीं किया सकता और जबर्न किसी पर थोपा



सकता। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोई भी व्यक्ति अगर आस्था के साथ खिलवाड़ करेगा, महापुरुषों, देवी-देवता, संप्रदाय आदि की आस्था के खिलाफ अभद्र टिप्पणी करेगा, तो उसे कानून के दायरे में लाकर कठोरता पूर्वक सजा दिलाई जाएगी, लेकिन सभी मत, मजहब, सम्प्रदाय के लोगों को एक-दूसरे का सम्मान करना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि विरोध के नाम पर अराजकता, तोड़-फोड़ अथवा आगजनी स्वीकार नहीं है, जो कोई ऐसा दुस्साहस करेगा, उसे उसकी कीमत चुकानी होगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पुलिस प्रशासन को निर्देश दिए कि शारदीय नवरात्र, विजयदशमी का

पर्व हर्षोल्लास हर्ष उल्लास शांति और सौहार्दपूर्ण माहौल के बीच संपन्न हो, यह प्रत्येक जनपद-प्रत्येक थाना को सुनिश्चित करना होगा। माहौल खराब करने वालों को चिन्हित कर कठोर कार्रवाई करें। उन्होंने निर्देश दिए कि कानून के विरुद्ध कार्य करने वालों के साथ सख्ती से निपटें। महिला सुरक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि बीड़भाड़ वाले इलाकों में फुट पेट्रोलिंग और पीआरवी 112 की पेट्रोलिंग तेज की जाए। उन्होंने कहा कि महिलाओं-बेटियों की सुरक्षा व सुविधा सुनिश्चित होनी चाहिए, इसके लिए सभी विभाग मिलकर काम करें।

हरियाणा और जम्मू कश्मीर विस चुनाव की मतगणना आज

चंडीगढ़, जम्मू। हरियाणा और जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए मतगणना होगी। हरियाणा में सतारूढ़ भारतीय जनता पार्टी की भरोसा है कि वह लगातार तीसरे कार्यकाल के लिए सत्ता बरकरार रखने में कामयाब होगी, वहीं एजिजट पोल के अनुमान से उत्साहित विपक्षी दल कांग्रेस भी 10 साल बाद सत्ता में वापसी की उम्मीद कर रही है। आठ अक्टूबर को सुबह आठ बजे से शुरू होने वाली मतगणना प्रक्रिया के लिए सुरक्षा व्यवस्था समेत सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। दूसरी ओर जम्मू-कश्मीर की 90 सदस्यीय विधानसभा चुनाव के नतीजे भी मंगलवार को घोषित किए जाएंगे।

समय से निस्तारित किए जाएं राजस्व न्यायालयों के लंबित वाद

काकोरी क्षेत्र में अवैध कॉम्प्लेक्स व गोदाम समेत चार अवैध निर्माण सील

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मंडलायुक्त द्वारा वर्चुवल मीटिंग कर राजस्व न्यायालयों के लंबित वादों को निस्तारित करने के निर्देश दिए गए। विशेषकर धारा 24 व 34 में दर्ज वादों को निर्धारित अवधि में निस्तारण नहीं किये जाने से वादी प्रतिवादीगण के बीच आपसी विवाद, फौजदारी के मामलों बढ़ते हैं। ऐसे में इन्हें निस्तारित किए जाने की आवश्यकता है। साथ ही मंडलायुक्त द्वारा धारा 80 के मामले समयांतर्गत निस्तारित किये जाने के निर्देश भी दिए गए। सोमवार को मंडलायुक्त डॉ रोशन जैकब की अध्यक्षता में मंडल के सभी जिलाधिकारी के साथ वर्चुअल से धारा 24, 34 व धारा 80 आदि के सम्बंध में महत्वपूर्ण बैठक की। मंडलायुक्त ने कहा कि विभिन्न राजस्व न्यायालयों में लंबित वादों में से सर्वाधिक वाद धारा-24, धारा-34 एवं धारा-80 के हैं। धारा 24 व 34 में दर्ज वादों को निर्धारित अवधि में निस्तारण नहीं किये जाने के कारण वादी प्रतिवादीगण के बीच आपसी विवाद, फौजदारी आदि के मामले बढ़ते हैं। धारा 80 के मामले समयांतर्गत निस्तारित न होने के कारण उद्यमी हतोत्साहित होते हैं और अधिक प्रगति बाधित



डीएम को निर्देश, निस्तारण की प्रतिदिन करें समीक्षा

मंडलायुक्त ने निर्देशित किया कि अभियान में जिलाधिकारी स्तर से कार्ययोजना बनाते हुए विशेष अभियान चलाकर राजस्व वादों का समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाये। सभी जिलों में समस्त राजस्व न्यायालयों में प्रत्येक प्रकार के न्यायालय वार लम्बित वादों की स्थिति प्राप्त कर वादों के निस्तारण की समीक्षा जिलाधिकारी द्वारा नित्य प्रतिदिन की जाए।

होती है। उपर्युक्त धाराओं में दर्ज वादों को अभियान चला कर तेज गुणवत्तापरक निस्तारण किया जाना अति आवश्यक है। बैठक में मंडलायुक्त ने कहा कि उक्त अवधि प्रकरण व वादों के निस्तारण के लिए अधिकतम समय है एवं उक्त समयावधि से पहले निस्तारण होना चाहिये। उपरोक्त के दृष्टिगत शासन द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि धारा-24, 34 तथा धारा-80 के राजस्व वादों के निस्तारण के लिए 45 दिन का विशेष अभियान चलाया जाए।

सभी कार्यदिवस में हो वादों का निस्तारण

जिलाधिकारी अपना कुशल नेतृत्व देते हुए दिन-प्रतिदिन समीक्षा कर उपरोक्त अभियान अवधि में सम्बन्धित धाराओं के वादों का निस्तारण सुनिश्चित कराएंगे। किसी अधिकारी द्वारा निर्देशों की अवहेलना अथवा निस्तारण में कोई विलम्ब किया जाता है। तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। राजस्व वादों का निस्तारण सप्ताह के सभी कार्यदिवस (पांचों दिन) किया जाये। यदि पैमाईश के मामलों में पुलिस बल की आवश्यकता हो, तो वह भी लिया जाये। इसके लिए पुलिस प्रशासन द्वारा ससमय आवश्यक सहयोग दिया जायेगा।

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

काकोरी में एलडीए द्वारा अवैध काम्प्लेक्स व गोदाम सहित अन्य निर्माण को सील कर दिया गया। विहित प्राधिकारी द्वारा बिना मानचित्र पास कराए निर्माण को सीलिंग का आदेश दिया था। आदेश पर एलडीए प्रवर्तन टीम द्वारा चारों निर्माणों को सील कर दिया गया। सोमवार को एलडीए की टीम ने काकोरी क्षेत्र में कार्रवाई की। बिना स्वीकृत मानचित्र के निर्मित किये जा रहे व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स व गोदाम समेत चार अवैध निर्माणों को सील किया गया। प्रवर्तन जौन-3 की जौनल अधिकारी वन्दना पाण्डेय ने बताया कि चन्द्र यादव व अन्य द्वारा काकोरी के कटिंगरा में आगरा एक्सप्रेस.वे पर लगभग 1500 वर्गफिट क्षेत्रफल के भूखण्ड पर लोअर ग्राउंड फ्लोर में दुकानों व अपर ग्राउंड फ्लोर पर गोदाम व स्टोर रूम का निर्माण



कराया जा रहा था। प्रंजल मिश्रा व अन्य द्वारा काकोरी के बड़ा गांव में आगरा एक्सप्रेस.वे के बायें किनारे पर लगभग 2500 वर्गफिट क्षेत्रफल के भूखण्ड पर व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स का निर्माण करवाया जा रहा था। हरिराम, सचिन कुमार व अन्य द्वारा काकोरी में मोहन रोड पर पानखेड़ में लगभग 225 वर्गमीटर क्षेत्रफल के भूखण्ड पर तीन मंजिला व्यावसायिक बिल्डिंग का निर्माण करवाया जा रहा था। इसके अलावा राजेश गुप्ता व अन्य द्वारा काकोरी में मौदा रोड पर ग्राम.थर में लगभग 150 वर्गमीटर क्षेत्रफल के भूखण्ड पर दुकान व गोदाम आदि का व्यावसायिक निर्माण कराया जा रहा था। सीलिंग के आदेश पारित किये थे। आदेश पर अवर अभियंता संजय शुक्ला व एसके सिंह द्वारा प्राधिकरण पुलिस व स्थानीय थाने के पुलिस बल के सहयोग से चारों अवैध निर्माणों को सील कर दिया गया।

डीएलएड से छात्रों का मोह भंग रिवत सीटों के सापेक्ष आवेदन कम

व्यक्तिगत कल्याण को प्रभावित करती हैं आर्थिक चुनौतियां

लखनऊ में डेंगू के 22 रोगी मिले, 15 घरों को नोटिस जारी

लखनऊ। डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन (डीएलएड) दो वर्षों के लिए छात्रों का मोह भंग हो रहा है। जिसका नतीजा है कि रिवत सीटों के सापेक्ष आधे से भी कम आवेदन आये हैं। जबकि ऑनलाइन आवेदन के लिए अभी 48 घंटे का समय शेष है। उसके बाद आवेदन की तिथि बढ़ने की संभावना कम है। बेसिक शिक्षा विभाग को अधीन प्राइमरी विद्यालयों में शिक्षक भर्ती के लिए डीएलएड (पूर्व में बीटीसी) कोर्स अनिवार्य है। पहले इस कोर्स की अफाई थी। पिछले कुछ वर्षों से भर्ती न आने और भर्तियां विवादित होने के कारण इसके प्रति युवाओं का रूझान कम देखने को मिल रहा है। बेसिक शिक्षा परिषद की ओर से पांच वर्षों से भर्ती के लिए अध्यायन भी आयोग को नहीं भेजा गया है। बेसिक शिक्षा में जो शिक्षक हैं, उन्हें का समायोजन किया जा रहा है। इसीलिए शिक्षक बनने के इच्छुक अध्यायी डीएलएड के बजाय अन्य कोर्स कर रहे हैं। डीएलएड के अन्य

2024-25 में आवेदन के लिए परीक्षा नियामक प्राधिकारी (पीएनपी) ने 18 सितंबर को पोर्टल खोला था। इस पर नौ अक्टूबर तक आवेदन लिया जाएगा। आवेदन के बाद 10 अक्टूबर तक शुल्क जमा कर सकते हैं। 12 अक्टूबर तक आवेदन का प्रिंट लिया जा सकता है। अब तक करीब एक लाख आवेदन हुए हैं। इस कोर्स के लिए सरकारी और निजी विद्यालयों में कुल 2.28 लाख सीटें हैं। पिछले वर्ष करीब 50 हजार सीटें खाली रह गई थीं। डायट में प्रतिवर्ष प्रशिक्षण शुल्क 10,200 रुपये और निजी विद्यालयों में प्रशिक्षण शुल्क 41,000 रुपये है। पीएनपी के सचिव अनिल भूषण चतुर्वेदी ने बताया कि इसमें स्नातक उत्तीर्ण 18 से 35 वर्ष के अध्यायी आवेदन कर सकते हैं। 16 अक्टूबर तक काउंसिलिंग और विद्यालय आवंटन होगा। 10 दिसंबर तक प्रवेश प्रक्रिया पूरी होगी और 12 दिसंबर से प्रशिक्षण शुरू हो जाएगा।

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग ने लखनऊ प्रबंधन संघ के सहयोग से शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए खुशी विषय पर सोमवार को एक पेनल चर्चा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव और एलएमए के पूर्व अध्यक्ष आलोक रंजन सहित प्रतिष्ठित पेनलिस्ट एक साथ आए। सत्र की शुरुआत पेनलिस्टों के गर्मजोशी भरे स्वागत भाषण से हुई, जिसके बाद संघ के सचिव राहुल दत्त ने कार्यक्रम के विषय का परिचय दिया, जिन्होंने वक्ताओं का परिचय भी कराया। सत्र का संचालन आलोक रंजन ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में, आलोक रंजन ने केवल भौतिकवादी लक्ष्यों की खोज के बजाय सफलता के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में खुशी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने हमारी व्यक्तिगत ताकत और कमजोरियों को पहचानने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा



कि हमारी सफलता से खुशी नहीं मिलती बल्कि इसका उल्टा होता है। उसके बाद प्रोफेसर मधुरिमा प्रधान ने मन की शक्ति और खुशी की आंतरिक प्रकृति पर जोर देते हुए भारतीय मनोविज्ञान से अंतर्दृष्टि प्रदान की, और दर्शकों को याद दिलाया कि हम जैसा सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं। उन्होंने एक कविता सुनाकर अपना संबोधन समाप्त किया, जो शिक्षा, हल निकलेगा, आज नहीं तो, कल निकलेगा। अर्जुन के तीर-सा साथ, मरुस्थल से भी जल निकलेगा, अभ्यास को पानी दे, बंजर मंजिल से भी फल

निकलेगा। डॉ. अर्चना शुक्ला ने अपने संबोधन में आत्म-नियमन, आत्मनिरीक्षण और भावनात्मक नियंत्रण की आवश्यकता पर जोर दिया, छात्रों को अपनी ताकत और कमजोरियों को समझने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रो. अरविंद मोहन ने खुशी को अर्थशास्त्र से जोड़ा, यह समझाते हुए कि आर्थिक चुनौतियाँ व्यक्तिगत कल्याण को कैसे प्रभावित करती हैं और ज्ञान और खुशी दोनों को बढ़ावा देने में कक्षा में बातचीत के महत्व को रेखांकित किया। चर्चा एक इंटरैक्टिव

प्रश्नोत्तर सत्र के साथ समाप्त हुई, जहाँ छात्रों ने शैक्षणिक यात्रा का आनंद कैसे ले, आध्यात्मिकता का प्रभाव और रिश्तों में खुशी के महत्व जैसे विषयों के बारे में पूछताछ की। पेनलिस्टों ने दर्शकों द्वारा उठाए गए प्रत्येक प्रश्न को सोच-समझकर संबोधित किया, अपने बिंदुओं को स्पष्ट करने के लिए वास्तविक जीवन के उदाहरण साझा किए। अपने समापन भाषण में, रंजन ने छात्रों से वर्तमान क्षण को अपनाने और अंतिम लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया से खुशी प्राप्त करने का आग्रह किया। उन्होंने दैनिक जीवन में दयालुता, उदारता और कृतज्ञता के कार्यों को शामिल करने के महत्व पर भी जोर दिया, यह देखते हुए कि यह अभ्यास स्वाभाविक रूप से खुशी को भावना को बढ़ावा देता है। यह कार्यक्रम खुशी, व्यक्तिगत कल्याण और शैक्षणिक उत्कृष्टता के बीच गहरे संबंधों की एक मूल्यवान याद दिलाते के रूप में कार्य करता है।

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ जनपद में डेंगू का प्रकोप धमने का नाम नहीं ले रहा है। स्थिति यह है कि स्वास्थ्य विभाग के तत्वाव में डॉ. सिल्वर जुबली-2, अलीगंज-3, एनके रोड-2, चिनहट-1, इन्दिरानगर-2, दृष्टिगंग-1) धनात्मक रोगी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त मलेरिया के 1 धनात्मक रोगी पाये गये। माह जनवरी 2024 से अब तक जनपद में डेंगू के कुल 801 एवं मलेरिया के 426 धनात्मक रोगी पाये गये। आज लगभग 2183 घरों एवं आस-पास मच्छरजनित स्थितियों का सर्वेक्षण किया गया और कुल 15 घरों में मच्छरजनित स्थितियां पाए जाने पर नोटिस जारी किया गया। नगर मलेरिया इकाई एवं जिला मलेरिया अधिकारी की टीमों द्वारा जनपद के विभिन्न स्थलों/भवनों का निरीक्षण किया गया तथा लार्वा रोधी रसायन का छिड़काव किया गया। क्षेत्रीय जनता को घर के आस-पास पानी जमा न होने, पानी से भरे हुए बर्तन एवं टैंकों को ढंक कर रखें, हर सप्ताह कूलर के पानी को खाली करके साफ कपड़े से पीछ कर सूखा एवं साफ करने के बाद ही पुनः प्रयोग में लाने, पूरी बाह के कपड़े पहनने, बच्चों को घर से बाहर न निकलने, मच्छर रोधी क्रीम लगाने एवं मच्छरदानी में रहने तथा डेंगू एवं मच्छर जनित रोगों से बचाव हेतु क्या करें, क्या न करें सम्बंधित स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान की गयी।



शिक्षकों की प्रोन्नति और चयन पर लविवि कार्यपरिषद की मोहर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विवि में सोमवार को सम्पन्न हुई कार्य परिषद की बैठक शिक्षकों के नाम रही। बैठक में जहाँ शिक्षकों की प्रोन्नति से संबंधित लिफाफे खोले गये, वहीं नव चयनित शिक्षकों के नाम पर भी कार्य परिषद की मोहर लगी। विवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय की अध्यक्षता में आयोजित कार्य परिषद की बैठक में पहले शिक्षकों की प्रोन्नति से संबंधित प्रकरण खोला गया। प्रोन्नति पाने वाले शिक्षकों में डिफेंस स्टडीज के डॉ. ओपी शुक्ला, संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के डॉ. रिचा पाण्डेय, डॉ. अशोक कुमार शथपथी, डॉ. भुवनेश्वरी, डॉ. सत्यकेतु, डॉ. अभिमन्यू और ओरिएंटल स्टडीज एवं संस्कृत में डॉ. प्रेरणा माथुर, डॉ. श्यामलेश कुमार तिवारी का नाम शामिल है।

एफएसडी ने विभिन्न क्षेत्रों में 15 प्रतिष्ठानों से भरे सैम्पल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन उप्र द्वारा नवरात्र एवं अन्य पर्वों के अवसर पर मिलावटी खाद्य एवं पेय पदार्थों के विक्रय पर प्रभावी रोकथाम लगाने का अभियान चलाया गया। एफएसडीए द्वारा रहीमाबाद के कुष्म जनरल स्टोर से सिंघाड़ा आटा सहित अन्य प्रतिष्ठानों से 15 नमूने लिए गए। नमूनों को जांच के लिए प्रयोगशाला में भेजा गया है। सोमवार को एफएसडीए ने जानकीपुरम, रहीमाबाद के प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जानकीपुरम के शोपोनिक्स से कुट्टु आटा, मलिहाबाद के सत्यम जनरल स्टोर से साबूदाना सहित 14 प्रतिष्ठानों से नमून लिये। नमूनों को जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा है।



गौरतलब है कि प्रमुख प्रतिष्ठानों से विशेषकर कुट्टु का आटा, सिंघाड़े का आटा, सूखे मेवे, मूगफली, साबूदाना, रामदाना व अन्य पस्ताहार आदि की बिन्की पर रोकथाम के लिए प्रवर्तन कार्यवाही की।

चाची पर हमलाकर लूट करने वाले भतीजे को सात वर्ष की सजा

विधि संवाददाता। लखनऊ

चाची पर हमलाकर घर का कीमती सामान लूटने के एक मामले में दोषी करार दिए गए चचेरे भतीजे विपुल उर्फ अभिषेक मिश्रा को सत्र अदालत ने सात वर्ष की सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। एडीजे राम किशोर, चतुर्थ ने इस पर पांच हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। सरकारी वकील मो. इंतजार, अहमद गाजी के मुताबिक 26 मई 2015 को इस मामले की एफआईआर अशोक मिश्र ने थाना अलीगंज में दर्ज कराई थी। अशोक इस रोज इलाहाबाद हाईकोर्ट गए थे। घर में उनकी पत्नी सुचित्रा मिश्रा अकेले थीं। तभी उनका चचेरा भतीजा विपुल अपने दोस्त के साथ आया। उनकी पत्नी ने दोनों को नशाना वीरह करवाया। फिर चाय बनाने किचन में गईं। इतने में पीछे से आकर विपुल ने तबे से उनकी पत्नी के सिर पर कई बार कर दिए। वह गंभीर रूप से घायल होकर गिर पड़ीं। वह बेहोश होने से पहले तल्लाई। आवाज सुनकर घर के पीछे से लोग दौड़े। चबल तब घर का कीमती सामान लूटकर आरोपी भाग गया। विवेचना के दौरान पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर सामान बरामद कर लिया।

नवयुग में स्तन कैसर जागरूकता पर कार्यक्रम का आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नवयुग कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर मंजुला उपाध्याय के प्रोत्साहन से 'मिशन शक्ति, राष्ट्रीय सेवा योजना व हाइजीन क्लब' के संयुक्त तत्वावधान में 'ब्रेस्ट कैंसर जागरूकता' पर एक महत्वपूर्ण 'व्याख्यान' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. रेशम श्रीवास्तव (सोनिपर कंसल्टेंट, रेडिफेन्ट ऑन्कोलॉजी, कैंसर केयर, मेदांता हॉस्पिटल) द्वारा ब्रेस्ट कैंसर की रोकथाम, लक्षणों की पहचान और उपचार से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी पावरपॉइंट के माध्यम से साझा की गई। डॉ. रेशम श्रीवास्तव ने स्तन कैंसर के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। डॉ. श्रीवास्तव ने स्तन कैंसर की समय पर पहचान के लिए मैमोग्राम और अन्य स्क्रीनिंग तकनीकों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नियमित स्क्रीनिंग से स्तन कैंसर का प्राथमिक चरण में पता लगाया जा सकता है, जिससे उपचार अधिक प्रभावी होता है। कार्यक्रम में स्तन कैंसर से जुड़े मिथकों का खंडन किया गया और सही जानकारी प्रदान की गई। डॉ. श्रीवास्तव ने स्पष्ट किया कि स्तन



कैंसर के बारे में कई भ्रांतियां हैं, जिन्हें दूर करना आवश्यक है। स्तन कैंसर के विभिन्न उपचार विकल्पों पर चर्चा की गई, जिसमें सर्जरी, कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी और हार्मोन थेरेपी शामिल हैं। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि व्यक्तिगत स्थिति पर निर्भर करता है स्तन कैंसर के आंकड़ों और इसके प्रभाव पर भी चर्चा की गई। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि भारत में स्तन कैंसर के मामलों में वृद्धि हो रही है, और इसके प्रति जागरूकता बढ़ाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वस्थ जीवनशैली और व्यायाम का स्तन कैंसर की रोकथाम में महत्व पर जोर दिया गया। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया

कि नियमित व्यायाम और स्वस्थ आहार से स्तन कैंसर के जोखिम को कम किया जा सकता है। कार्यक्रम के अंत में एक खुला प्रश्न-उत्तर सत्र आयोजित किया गया, जहाँ उपस्थित लोगों ने अपने सवाल पूछे और डॉ. श्रीवास्तव ने उनके उत्तर दिए। इस सत्र ने सभी को स्तन कैंसर के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया। डॉ. श्रीवास्तव ने गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के बारे में भी जानकारी दी, जो महिलाओं में दूसरा सबसे आम कैंसर है। उन्होंने इसके लक्षण, रोकथाम और उपचार के बारे में बताया और नियमित जांच की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. श्रीवास्तव ने गर्भाशय ग्रीवा कैंसर की रोकथाम में पेप्समीयर टेस्ट, टीकाकरण की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमावायरस) वैक्सिन गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के खिलाल सुरक्षा प्रदान करती है और इसे किशोरावस्था में ही लगवाना चाहिए। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राओं और संकाय सदस्यों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। उनकी सक्रिय सहभागिता ने इस कार्यक्रम को और भी सफल बनाया।

छात्रहितों और शैक्षिक सुधारों से जुड़े मामलों में देरी अस्वीकार्य: योगेन्द्र उपाध्याय

उच्च शिक्षा मंत्री ने की विभागीय कार्यों की व्यापक समीक्षा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री योगेन्द्र उपाध्याय ने सोमवार को विधान भवन स्थित अपने कार्यालय में विभागीय कार्यों की व्यापक समीक्षा की। इस महत्वपूर्ण बैठक में प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा एम.पी. अग्रवाल, विशेष सचिव शिपू गिरी, गिरिजेश त्वगी, निदेशक उच्च शिक्षा प्रयागराज डॉ. अमित भारद्वाज सहित विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। बैठक का मुख्य उद्देश्य विभागीय कार्यों की प्रगति का आकलन करना और लंबित प्रकरणों का त्वरित निस्तारण सुनिश्चित करना था। मंत्री उपाध्याय ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए



कि उच्च शिक्षा विभाग में प्राप्त सभी प्रकरणों और संदर्भों का निस्तारण त्वरित और निर्धारित समयसीमा के भीतर किया जाए। उन्होंने कहा कि छात्रहितों और शैक्षिक सुधारों से जुड़े मामलों में किसी भी प्रकार की देरी अस्वीकार्य है, और सभी लंबित मामलों को प्राथमिकता के आधार

पर निपटया जाना चाहिए। उन्होंने अधिकारियों से यह भी सुनिश्चित करने को कहा कि की गई कार्यवाही की जानकारी समयबद्ध रूप से संबंधित अधिकारियों और मंत्री कार्यालय को दी जाए, ताकि पारदर्शिता और उत्तरदायित्व बनाए रखा जा सके। बैठक में यह भी जोर दिया

गया कि विभागीय प्रक्रियाओं में सुधार लाकर कार्यों को और अधिक सुचारू रूप से संचालित किया जाए। बैठक के दौरान उच्च शिक्षा मंत्री ने विभागीय अधिकारियों से फीडबैक लेते हुए आवश्यक सुझावों को अमल में लाने पर भी बल दिया। उन्होंने विभागीय कार्यों में तेजी लाने के लिए सभी अधिकारियों को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य करने की अपील की। इस अवसर पर प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने मंत्री उपाध्याय को आश्वासन दिया कि उनके निर्देशों के अनुरूप कार्यवाही की जाएगी और विभागीय कार्यों में गुणवत्ता और गति को सुनिश्चित किया जाएगा। मंत्री उपाध्याय ने अंत में कहा कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए सभी स्तरों पर सक्रियता और समर्पण आवश्यक है, और प्रदेश की सरकार इस दिशा में कोई भी कोताही बर्दाश्त नहीं करेगी।

विश्वस्तरीय शिक्षा और संचार क्रांति ने आसान की भविष्य की राह: डॉ. राजेश्वर

सरोजनीनगर विधायक ने कहा, युवाओं की प्रगति को केंद्रित है इनोवेशन और ऑपर्युनिटी से भरा आज का भारत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

युवाओं को रोजगार, स्वरोजगार के क्षेत्र में प्रेरित, प्रोत्साहित करने के सतत क्रम में सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने सोमवार को ट्वीट कर लिखा, आज के युवा नवप्रवर्तन और अवसरों से भरे भारत में अपना भविष्य संभारने के लिए अविवशनीय रूप से भाग्यशाली हैं। डॉ. राजेश्वर सिंह ने शिक्षा के क्षेत्र में भारत की प्रगति का उल्लेख करते हुए लिखा वर्ष 2023 तक भारत में 1,100 से अधिक विश्वविद्यालय और 50,000 कलेज हैं। नई शिक्षा नीति (एनईपी) ने व्यावसायिक कौशल पर जोर देकर सीखने के तरीकों को बदला है।

विधायक ने क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2024 का हवाला देते हुए लिखा शीर्ष 1,000 में भारत के 23 विश्वविद्यालय हैं, जो शिक्षा की बढ़ती गुणवत्ता को दर्शाता है। ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स 2023 में भारत 37वें स्थान पर है, जो अनुसंधान और विकास पर इसके बढ़ते फोकस को दर्शाता है। कौशल भारत क्रांति का उल्लेख कर सरोजनीनगर विधायक ने लिखा कौशल भारत मिशन के तहत, 5 करोड़ से अधिक युवाओं को नौकरी के लिए तैयार करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। आज युवा सरकार समर्थित कार्यक्रमों के माध्यम से डिजिटल मार्केटिंग, एआई, ब्लॉकचेन और कोडिंग सीख सकते हैं, जिससे वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन सकते हैं। विश्व आर्थिक मंच की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता रिपोर्ट 2023 में भारत 66वें स्थान पर है, जो अपने आर्थिक परिदृश्य में कुशल श्रम के महत्व को परिभाषित करता है। डॉ. सिंह ने भारत में शिक्षा के बदलते परिदृश्य का उल्लेख कर लिखा विश्व स्तरीय शिक्षा आपके द्वार पर है,



200 से अधिक विदेशी विश्वविद्यालय अब भारतीय संस्थानों के साथ सहयोग कर रहे हैं, जिससे युवाओं को बिना देश छोड़े अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा मिल रही है। 2023 टाइम्स हायर एजुकेशन रैंकिंग में, कई भारतीय संस्थानों ने शिक्षण और अनुसंधान के लिए उच्च अंक हासिल किए, जिससे उनकी वैश्विक प्रतिष्ठा बढ़ी। 2024 क्यूएस हायर एजुकेशन सिस्टम स्ट्रथ रैंकिंग में भारत अपनी उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए दुनिया का उल्लेख कर सरोजनीनगर विधायक ने लिखा 2023 में, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 85 करोड़

को पार कर गई। 5जी तकनीक के तेजी से विस्तार के साथ, ग्रामीण क्षेत्र भी डिजिटल क्रांति का हिस्सा बना, जिसने लोगों को आपस में जुड़ने के साथ सीखने के लिए अपूर्व रूप से सशक्त बनाया। जीवन की डिजिटल गुणवत्ता सूचकांक 2023 में भारत को 117 देशों में से 57वां स्थान दिया गया, जो इसके डिजिटल बुनियादी ढांचे में सुधार को दर्शाता है। सरकारी विभागों में निष्पक्ष नौकरी भर्ती का उल्लेख कर डॉ. राजेश्वर सिंह ने लिखा राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी (एनआरए) और सामान्य पात्रता परीक्षा (सीईटी) के साथ, सरकारी नौकरियों के लिए भर्ती अधिक पारदर्शी हो गई है, लाखों युवाओं के लिए योग्यता-आधारित भर्ती सुनिश्चित हो रही है। 2023 वैश्विक प्रतिभा पारदर्शी सूचकांक प्रकाशित करने के आधार पर, 62वें स्थान पर सूचकांक, जो प्रभावी नौकरी नीतियों के माध्यम से प्रतिभा को पोषित करने की क्षमता को उजागर करता है। अंत में विधायक ने युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए लिखा अब, उठने और इन असाधारण अवसरों का लाभ उठाने की आपकी बारी है।

मुख्यमंत्री ने हिंदू समाज से किया एकजुटता का आह्वान

● सीएम ने भारत सेवाश्रम सिगरा में की मां दुर्गा की पूजा-अर्चना

● 100 महिलाओं को सिलाई मशीन का भी किया वितरण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ वाराणसी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हिंदू धर्म किसी का अंत नहीं चाहता। वह 'अहिंसा परमो धर्मः' की बात कहता है, लेकिन वह 'धर्म हिंसा तथैव च...' की भी बात करता है यानी अहिंसा परम धर्म है, लेकिन राष्ट्र-धर्म की रक्षा और निर्दोषों को बचाने के लिए हिंसा करना पड़े तो यह धर्मसम्मत मान्य है। यह आह्वान भारत का शास्त्र करता है। स्वामी प्रणवानंद ने भारत सेवाश्रम संघ की

स्थापना के समय भी यही आह्वान किया था।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भारत सेवाश्रम संघ सिगरा में श्री श्री दुर्गा पूजा समारोह में शामिल हुए। सीएम ने यहां मां दुर्गा की पूजा-अर्चना की और महिलाओं को 100 सिलाई मशीन का भी वितरण किया। सीएम ने सभी आंगतुकों, अतिथियों व आमजन को शारदीय नवरात्रि की शुभकामना दी। सीएम योगी ने कहा कि 'अहिंसा परमो धर्मः' का पक्ष कहता है कि हम सेवा के कार्य से जुड़ें। दीन-दुखियों की सेवा के लिए जीवन समर्पित करें, लेकिन एकता-अखंडता को कोई चुनौती देगा और सीमाओं का अतिक्रमण करेगा तो राष्ट्र की सुरक्षा-संप्रभुता, देश की रक्षा के लिए धर्म सम्मत हिंसा के पक्षधर भी हैं, जो जनता को सुरक्षा प्रदान कर सके और भारत को एक भारत-श्रेष्ठ भारत रख सके।

योगी ने कहा कि हर लोककल्याण के लिए हर जाति, मत,



मजहब से जुड़े महापुरुषों का सम्मान होना चाहिए। कोई व्यक्ति किसी महापुरुष, योगी-सन्यासी के खिलाफ अभद्र भाषा का प्रयोग करता है तो वह दंड का भागी बनता है, उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए, लेकिन विरोध का मतलब तोड़फोड़ या लुटपाट नहीं है। यह कर्तई स्वीकार नहीं हो सकता।

योगी ने कहा कि एक तबका हिंदू धर्म के देवताओं के खिलाफ

अपमान जनक टिप्पणी, महापुरुषों को अपमानित व मूर्तियों को खंडित करना जन्मसिद्ध अधिकार समझ लेता है। यदि किसी के द्वारा विद्वेष में कोई शब्द कहे जाते हैं तो उसे लेकर जमीन-आसमान एक करने का कुत्सित प्रयास होता है। सीएम ने आगाह किया कि कानून को हाथ में लेने का दुस्साहस न करें। ऐसा करने वालों को कानून की गिरफ्त में आना ही होगा। अपराजकता को बढ़ावा देने

वाले से कानून सखी से पेश आएगा। सीएम योगी ने कहा कि हर मत, पंथ व संप्रदाय को आस्था का सम्मान है, लेकिन कानून को हाथ में लाने की स्वतंत्रता नहीं होगी। बाधा डालने वाले कीमत चुकानी पड़ेगी।

योगी ने कहा कि शारदीय नवरात्रि मां दुर्गा के पूजन का अनुष्ठान है। पूरे देश में यह आयोजन हर्षोल्लास से हो रहा है। जिस बंगाल में जनतजनी मां भगवती के अनुष्ठान का शुभारंभ होता है, उस बंगाल में आज सनातन धर्म असहाय व असुरक्षित दिखता है। बंगाल राष्ट्रगान व राष्ट्रगीत देने वाली भूमि है। भारत के बौद्धिक आधार देने वाली भूमि है। आजादी में तमाम महापुरुषों को देने वाली भूमि है। जिस बंगाल ने जगदीश चंद्र बसु, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी प्रणवानंद, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसा सपूत भारत माता को प्रदान किया। आज उस बंगाल में क्या हो रहा है।

अयोध्या में भव्य दीपोत्सव का होगा आयोजन: जयवीर

● मोबाइल एप्लीकेशन के माध्यम से अयोध्या की संस्कृति, इतिहास व विविध आयामों की जानकारी श्रद्धालुओं को उपलब्ध होगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपोत्सव-2024 का राज्य सरकार द्वारा भव्य आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर सरयू नदी के तट तथा राम की पैड़ी पर रिकार्ड संख्या में दीप जलाये जायेंगे। इसके देखने के लिए देश विदेश से भारी संख्या में श्रद्धालु एवं पर्यटकों के अयोध्या आने की संभावना है। इस वर्ष दिव्य अयोध्या ऐप के माध्यम से विश्वभर में डिजिटल दीप प्रज्वलित करने की व्यवस्था की गयी है। इस एप्लीकेशन के माध्यम से श्रद्धालुओं में जागरूकता बढ़ाने के लिए

व्यापक प्रचार-प्रसार की रणनीति भी बनाई गयी है। दीपोत्सव मेले में दिव्य अयोध्या मोबाइल एप्लीकेशन के प्रचार-प्रसार के लिए अयोध्या विकास प्राधिकरण ने विशेष कार्ययोजना तैयार की है। 14 जनवरी, 2024 को मुख्यमंत्री ने दिव्य अयोध्या मोबाइल एप्लीकेशन एवं वेबपोर्टल का शुभारम्भ किया था। ऐप के माध्यम से अयोध्या आने वाले पर्यटकों/तीर्थ यात्रियों के लिए होम स्टे, गाइडेड टूर, टैक्सी सेवायें एवं अन्य आवश्यक सेवाओं को एकल पटल पर उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। अयोध्या विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अश्विनी कुमार पण्डेय ने दीपोत्सव-2024 के व्यापक प्रचार-प्रसार में दिव्य अयोध्या पोर्टल का भी प्रचार-प्रसार करने की अपेक्षा की है। यह मोबाइल एप्लीकेशन अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं की बुनियादी आवश्यकताओं जैसे टहलने हेतु होमस्टे, भ्रमण हेतु इलेक्ट्रॉनिक कार, 50 इलेक्ट्रॉनिक बसों की रूट की स्थिति, संचालन का समय, ऑनलाइन टिकट बुकिंग, वाहन, व्हील चेयर तथा प्रशिक्षित टूरिस्ट गाइड आदि की ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा उपलब्ध कराता है। अयोध्या नगर एवं समीपवर्ती विभिन्न मंदिरों, मठों, दार्शनिक एवं ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी भी उपलब्ध कराता है। मोबाइल ऐप के द्वारा स्थानीय व्यंजन, पार्किंग की ऑनलाइन बुकिंग भी की जा सकती है। अयोध्या विजन-2047 की जानकारी के लिए यह ऐप अति उपयोगी है। अयोध्या नगर में पहुंचने के लिए हवाई, रेल एवं सड़क मार्ग द्वारा यात्रा की जानकारी के लिए यह ऐप उपयोगी है। ऐप पर भारतीय संविधान के 8वें अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में जानकारी उपलब्ध कराई जायेगी, जिससे विभिन्न भाषा-भाषियों को मदद मिलेगी। आने वाले समय में इस ऐप को इटीग्रेटेड कंट्रोल एण्ड कमांड सेंटर के साथ जोड़ा जायेगा, जिसके माध्यम से नगर में समुचित सफाई व्यवस्था के साथ नगर के विभिन्न कैमरों से जोड़कर नगर की समस्त गतिविधियों पर निगरानी रखी जा सकेगी।

अंतरराज्यीय तस्कण गिरोह का सरगना ओडिशा से गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

एसटीएफ ने अंतरराज्यीय स्तर पर मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले गिरोह के सरगना व 25 हजार के ईनामी अभियुक्त राम कुमार बारीक को ओडिशा से गिरफ्तार किया है। उल्लेखनीय है कि एसटीएफ, उत्तर प्रदेश को विगत काफ़ी दिनों से उड़ीसा प्रान्त से मथुरा-आगरा व उसके आस-पास के जनपदों में मादक पदार्थ की तस्करी करने वाले अपराधियों/ तस्करी के सक्रिय होने की सूचनाएं प्राप्त हो रही थीं। यह जानकारी आई थी कि मादक पदार्थ उड़ीसा से झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान होते हुए श्रीनगर-कन्याकुमारी राष्ट्रीय राजमार्ग से भेजा जा रहा था। 125 फरवरी 2022 को एसटीएफ ने इसी गिरोह के 2 तस्करी को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से लगभग 11.57 कुन्तल से अधिक गांजा (अनुमानित मूल्य लगभग 2.90 करोड़ रुपये) श्रीनगर-कन्याकुमारी राष्ट्रीय राजमार्ग थाना क्षेत्र कोतवाली, ललितपुर से बरामद किया था। जिसके विरुद्ध थाना कोतवाली,

जनपद-ललितपुर में मुकदमा पंजीकृत कराया गया था। विवेचना के क्रम में राम कुमार बारीक निवासी ओडिशा के विरुद्ध पर्याप्त साक्ष्य होने के उपरान्त था। ज्ञात हुआ कि अभियुक्त राम कुमार बारीक भुवनेश्वर में छिपकर रह रहा है। इस सूचना पर टीम भुवनेश्वर (ओडिशा) रवाना की गयी। एसटीएफ टीम भुवनेश्वर पहुंचकर स्थानीय पुलिस से सम्पर्क करके उनके सहयोग से वांछित अभियुक्त उपरोक्त को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार अभियुक्त ने पूछताछ पर बताया कि वह उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान सहित अन्य राज्यों के गांजा तस्करी से सम्पर्क करके ओडिशा राज्य से उनको गांजा उपलब्ध कराता है, जिसका पैसा हवाला एवं अपने बैंक खाते में लेता है। अभियुक्त को न्यायालय सीजेएम जनपद खोर्दवा (ओडिशा) के समक्ष प्रस्तुत करके 72 घण्टे का रिमाण्ड प्राप्त किया गया है। अग्रिम विविध कार्यवाही जनपद ललितपुर की पुलिस द्वारा की जा रही है।

जेवर एयरपोर्ट पर स्थापित होगा एक्सपोर्ट हब

● कृषि उत्पादों के निर्यात को मिलेगा बढ़ावा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योगी सरकार प्रदेश के किसानों की आय, कृषि उत्पादकता एवं कृषि से जुड़े उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए यूपी एग्रीज परियोजना के तहत जेवर एयरपोर्ट के पास एक्सपोर्ट हब की स्थापना करने जा रही है। इसे विश्व बैंक की मदद से धरातल पर उतारा जाएगा। इसके अलावा विश्व स्तर पर 2 से 3 उपज का बड़े पैमाने पर निर्यात करने के लिए कृषि एसजैड (स्पेशल इकॉनॉमिक जोन) की स्थापना की जाएगी। साथ ही, 2 से 3 विश्व स्तरीय हैचरी भी स्थापित की जाएगी। सीएम योगी ने यूपी एग्रीज योजना के तहत किसानों को कृषि क्षेत्र में ऋण को बढ़ावा देने के लिए व्यापक इंतजाम करने के निर्देश दिये हैं। योगी सरकार का यह प्रयास प्रदेश के कृषि सेक्टर को पूरे देश का पावर हाउस बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के एग्रीकल्चर सेक्टर की तस्वीर

बदलने एवं कृषि उत्पादों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने के लिए हाल ही में उत्तर प्रदेश एग्रीकल्चर ग्रोथ एंड रूरल इंटरप्राइजिज इकोसिस्टम स्ट्रेटेजिक (यूपी एग्रीज) परियोजना को हरी झंडी दी है। इसके तहत कृषि उत्पाद को बढ़ावा देने के लिए जेवर एयरपोर्ट के पास एक्सपोर्ट हब की स्थापना की जाएगी। इसके जरिये, हाई वैल्यू कृषि उत्पाद जैसे मूंगफली, सब्जी, काला नमक चावल, तिल आदि को विदेशों में एक्सपोर्ट किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि मीठ, बासमती चावल, फल-सब्जियां व खाद्य प्रसंस्करण सेक्टर से जुड़े विभिन्न उद्योग के प्रोजेक्ट्स का एक्सपोर्ट उत्तर प्रदेश बड़े स्तर पर करता है। ऐसे में, कृषि उत्पादों के जरिये एक्सपोर्ट की प्रक्रिया को बढ़ावा देना के लिए एक विश्व स्तरीय कार्बन क्रेडिट मार्केट की स्थापना की जाएगी। प्रदेश के अन्नदाताओं को मौसम की सटीक की सूचना देने के लिए स्थानीय मौसम स्टेशन की स्थापित किया जाएगा। इसी तरह मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए 2 से 3 विश्व स्तरीय हैचरी की स्थापना की जाएगी।

की स्थापना की जाएगी, जो फॉरवर्ड लिंकेज और निर्यात बाजारों के बड़े हिस्से पर कब्जा करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। इन्हें प्रदेश के 11 जिलों में विकसित किया जाएगा। इनमें काला नमक चावल के लिए सिद्धार्थनगर और गोरखपुर में एसजैड की स्थापना की जाएगी। वहीं मूंगफली के लिए झांसी, उरद के लिए ललितपुर, सब्जियों के लिए जौनपुर, भदोही, बनारस, गाजीपुर और बलिया में एसजैड की स्थापना की जाएगी। परियोजना के तहत अगले पांच वर्षों में प्रदेश की प्रमुख फसलों की उत्पादकता में 30 से 50 प्रतिशत की वृद्धि के लिए व्यापक कदम उठाए जाएंगे। इससे किसानों की आय में कम से कम 25 प्रतिशत की बढ़ोतरी होगी। इसके अलावा, जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए एक विश्व स्तरीय कार्बन क्रेडिट मार्केट की स्थापना की जाएगी। प्रदेश के अन्नदाताओं को मौसम की सटीक की सूचना देने के लिए स्थानीय मौसम स्टेशन की स्थापित किया जाएगा। इसी तरह मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए 2 से 3 विश्व स्तरीय हैचरी की स्थापना की जाएगी।

हिंदू महासभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री कांग्रेस में शामिल

लखनऊ। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधारा से प्रेरित होकर जनपद कानपुर से अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री उमाशंकर बाजपेई ने अपने समर्थकों के साथ प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष, प्रभारी प्रशासन दिनेश कुमार सिंह के समक्ष कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की। इस मौके पर दिनेश सिंह ने उनके गले में तिरंगा पट्टिका पहनाकर तथा कांग्रेस सदस्यता कार्ड देकर उन्हें विधिवत रूप से पार्टी में शामिल कराया। बाजपेई के साथ सदस्यता ग्रहण करने वालों में प्रमुख रूप से कुमार बाजपेई, अक्षय कुमार सिंह, अभिषेक सिंह, मनीष श्रीवास्तव, विकास दीक्षित, आर्यन बाजपेई, मनीष बाजपेई, मो. अख्तर आदि शामिल रहे।

सपा का प्रतिनिधिमंडल आज जाएगा अलीगढ़

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल मंगवार 8 अक्टूबर को जनपद अलीगढ़ पहुंचेगा। अलीगढ़ जनपद के खैर रोड गोविन्द नगर गुरुद्वारे वाली गली निवासी खटिक समाज के श्री अविनाश सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी। जिसकी जानकारी तथा शोक संतप्त परिवार से संवेदना प्रकट करने हेतु समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधिमंडल उनके आवास अलीगढ़ जाएगा। समाजवादी प्रतिनिधिमंडल में डॉ. रागिनी सोनकर विधायक विधानसभा क्षेत्र मछली शहर जौनपुर, डॉ. राजपाल कश्यप प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ, चौधरी बिजेन्द्र सिंह पूर्व सांसद, अश्विनी श्रवास्तव, विकास दीक्षित, समाजवादी पार्टी अलीगढ़, लक्ष्मी धंगर जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी अलीगढ़, पप्पू प्रधान खटिक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष माननीय मुलायम सिंह वृद्ध ब्रिगेड एवं मोहम्मद साजिद विधानसभा अध्यक्ष शहर अलीगढ़ शामिल हैं।

यूपी के किसानों में बढ़ा केले की खेती का क्रैज

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

काम समय की नकदी फसल और पूरे साल मांग बनी रहने के नाते उत्तर प्रदेश के किसानों को केले की खेती खूब रास आ रही है। प्रदेश के पूर्वी तट, अवध आदि क्षेत्रों के कृषीनगर, गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, महाराजगंज, अयोध्या, गोंडा, बहराइच, अंबेडकरनगर, बाराबंकी, प्रतापगढ़, अमेठी, कौशांबी, सीतापुर और लखीमपुर जिलों में केले की खेती होती है। योगी सरकार द्वारा केले की प्रति हेक्टेयर खेती पर करीब 31 हजार रुपये का अनुदान दिया जाता है। पारदर्शी तरीके से अनुदान पर मिलने वाले कृषि यंत्रों का वितरण और सिंचाई के अपेक्षाकृत प्रभावी ड्रिप और स्पिंकलर और सोलर पंप पर मिलने वाले अनुदान के नाते किसानों का क्रैज केले जैसी नकदी

फसलों की ओर और बढ़ा है। परंपरागत रूप से केला दक्षिण भारत की फसल है। पर, कुछ दशक पूर्व महाराष्ट्र के भुसावल और इसके आसपास के कुछ इलाकों में इसकी खेती शुरू हुई तो भुसावल और केला (चिचोदार) एक दूसरे के पर्याय बन गए। देखते-देखते भुसावल का हरी छाल केला पूरे उत्तर भारत के बाजार में छा गया। करीब दो दशक पहले बिहार के नीगछिया के केले ने भुसावल के हरी छाल को लगभग बाजार से बाहर कर दिया। बिहार से सटे कृषीनगर के किसान बड़े पैमाने पर इसकी खेती कर रहे हैं। केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान रहमानखेड़ा, लखनऊ से मिले आंकड़ों के अनुसार पूरे भारत में लगभग 3.5 करोड़ मीट्रिक टन केले का उत्पादन होता है। देश में केले की फसल का रकबा करीब 9,61,000 हेक्टेयर है।

बिहार सरकार के मंत्री ने चंदौली में की जदयू के विस्तार व सदस्यता अभियान की समीक्षा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ चंदौली

बिहार सरकार के ग्रामीण विकास विभाग मंत्री और प्रभारी जनता दल (यूनाइटेड) उत्तर प्रदेश श्रवण कुमार पार्टी के संगठनात्मक कार्य के सिलसिले में उत्तर प्रदेश के चंदौली पहुंचे। चंदौली जिले के पीडब्ल्यू गेस्ट हाउस में श्रवण कुमार ने जनता दल (यूनाइटेड) संगठन के सभी स्थानीय वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ बैठक में पार्टी के संगठन विस्तार एवं सदस्यता अभियान के समीक्षा की। इस बैठक में काफी अधिक संख्या में कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए श्रवण कुमार ने बिहार के लोकप्रिय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में जनता दल यूनाइटेड के संगठनात्मक कार्य को सुदृढ़ करने का निर्देश दिया



तथा वहां उपस्थित पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का भी विचार जाना। स्थानीय तौर पर निचले स्तर पर दल की नीति एवं विचारों को जनता के बीच प्रसारित प्रचारित करने पर बल दिया गया तथा जनता की बातों सुनकर स्थानीय स्तर पर ही लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने पर विचार किया गया। इस बैठक में मुख्य रूप से देवेश मौर्या (पूर्व राज्य मंत्री उग्र सरकार), संतोष पटेल (पूर्व प्रदेश

पशुचिकित्साधिकारी गौआश्रय स्थल जाकर करें गोवंश का स्वास्थ्य परीक्षण

लखनऊ। पशुधन विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने सोमवार को विधान भवन स्थित कार्यालय कक्ष में प्रदेश के गौ आश्रय स्थलों की अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को सख्त रूप से निर्देश दिये कि पशुचिकित्साधिकारी सप्ताह में दो बार अपने क्षेत्र के गौआश्रय स्थल पर जाएं और गोवंश के उत्तम स्वास्थ्य, चिकित्सा एवं औषधिकी व्यवस्था सुनिश्चित करें। केयरटेकर रात्रि में गौआश्रय स्थल पर ही रूके और गोवंश हेतु आवश्यक कार्य सुचारू रूप से पूरे करें। जनपद के नोडल अधिकारी गौ आश्रय स्थलों का नियमित रूप से निरीक्षण कर चारा, भूसा, पानी प्रकाश आदि व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें।

गोवंश के गले में लगेगी रेडियम पट्टी

लखनऊ। प्रमुख सचिव, दुग्ध विकास तथा पशुधन विकास के. रवीन्द्र नायक ने बताया कि गोवंश को सड़क दुर्घटना से बचाने के लिए अब गोवंश के गले में रेडियम पट्टी लगाई जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने उत्तर प्रदेश गो संरक्षण एवं संवर्धन कोष के अन्तर्गत गठित आरक्षित कोश में जमा धनराशि 50 लाख रूपये से अधिक की धनराशि का उपयोग गोवंशों के सड़क दुर्घटना से बचाव हेतु राजमार्ग, जनपदीय मार्ग एवं अन्य मुख्य सड़कों के समीप स्थित गांवों के किसानों एवं पशुपालकों के गोवंशों के गले में रेडियम पट्टी बांधी जाने के सम्बन्ध में आदेश जारी कर दिया है। प्रमुख सचिव, दुग्ध विकास तथा पशुधन विकास के. रवीन्द्र नायक ने इस सम्बन्ध में सभी जिलाधिकारियों को प्रेषित परिपत्र में निर्देशित किया है कि गो संरक्षण एवं संवर्धन नियमावली, 2019 के अन्तर्गत गठित कोष के उपयोग के सम्बन्ध में व्यवस्था की गई है कि गठित कोष का उपयोग गोवंश विषयक सभी आवश्यक व्ययों पर किया जायेगा जो शासन द्वारा समय-समय पर निर्धारित किये जायेंगे।

रिपोर्ट उच्च अधिकारियों को भेजी जा रही है। मुफ्त राशन के लालच में कई आयकर रिटर्न भर रहे लोग भी लाभार्थी बन गए। यही नहीं 5 एकड़ से अधिक भूमि के मालिक भी राशन कार्ड लाभार्थियों की सूची में शामिल हैं। जिनकी वजह से कई वास्तविक गरीब और जरूरतमंद लोग भी राशन कार्ड के लिए ब्किंग और तहसील के चक्कर काट रहे हैं। राशन कार्ड की लिस्ट में अपात्रों के शामिल होने की शिकायत के बाद आपूर्ति विभाग ने आयकर विभाग से आई आयकर रिटर्न भर रहे लोगों की लिस्ट का मिलान और सत्यापन शुरू किया तो कई निरस्त किए जा रही हकीकत खुलकर सामने आ गई। अधिकारियों की मानें तो सत्यापन के बाद आईटीआर भर रहे ऐसे सभी अपात्रों के राशन कार्ड निरस्त किए जा रहे हैं। हालांकि किसी चूक की वजह से लिस्ट में जिन जरूरतमंद लोगों के नाम आ गए हैं उनसे प्रमाण लेकर

पुलिस ने 15 लोगों को लौटाए उनके गुम हुए मोबाइल

संवाददाता। मोहनलालगंज

मोबाइल फोन गुम होने के बाद वापस मिलने की उम्मीद खो चुके लोगों को पुलिस ने मोबाइल वापस सौंपे तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मोहनलालगंज पुलिस ने ऐसे एक नहीं 15 लोगों को तस्करीबन चार लाख कीमत के मोबाइल फोन बरामद कर वापस लौटाए। जिसे लेकर सभी ने एसीपी की टीम का आभार जताया। मोहनलालगंज नगर पंचायत के गौरा निवासी सभासद हिमांशु सिंह का 75 हजार का नया मोबाइल लगभग दो वर्ष पूर्व भंवरेश्वर मंदिर में खो गया था। गुप्तसुदगी दर्ज कराने के बाद हिमांशु ने मोबाइल वापस मिलने की उम्मीद ही छोड़ दी थी। पुलिस टीम ने सर्विलांस की मदद से मोबाइल की तलाश की तो मोबाइल नेपाल में चलता मिला। पुलिस के अथक प्रयासों से मोबाइल बरामद हो सका। एसीपी रजनीश वर्मा ने हिमांशु को मोबाइल वापस लौटाकर उनके चेहरे पर



सुकान बिखेर दी। सभासद ने एसीपी और उनकी टीम का आभार जताया। बिहार के भद्रा मजदूर सुरेश माझी का मोबाइल भी डेढ़ साल पहले गुम हो गया था। जिसे पुलिस ने बरामद कर सोमवार को थाने में उन्हें सौंप दिया। मोबाइल पाकर सुरेश की आंखे भर आई। इसी तरह कस्बे के काशीशंकर महादेव मंदिर से भी दो छात्राओं के मोबाइल फोन खो गए थे। जिन्हें गौतम सिंह व रविनारायण सिंह और संजय वर्मा

की पुलिस टीम ने सफलतापूर्वक बरामद कर लिया। एसएचओ आलोक राव ने पुलिसकर्मियों को शाबासी देकर उनकी हौसला अपजवाई की। एसीपी रजनीश वर्मा ने बताया पुलिस कर्मियों की मेहनत से 15 मोबाइल फोन बरामद कर उनके असल मालिकों को सौंप दिए गए। उन्होंने लोगों से मोबाइल खोने पर यूपीकाॅप एप और सीईआईआर पोर्टल पर विवरण अवश्य दर्ज कराने की अपील की।

बीएलओ को झांसा देकर जालसाजों ने लगाया हजारों रुपए का चूना

संवाददाता। मोहनलालगंज

निर्वाचन कार्यालय से फोन का झांसा देकर जालसाजों ने बीएलओ के एकाउंट से हजारों रुपए उड़ा लिए। पीड़ित परिवार की शिकायत पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मोहनलालगंज के मौनापुर निवासी रमाशंकर पटेल तहसील में बीएलओ हैं। 3 अक्टूबर को उनकी बेटी वैशाली को फोन कर जालसाजों ने निर्वाचन कार्यालय मोहनलालगंज से बात करने की बात कही। जालसाजों के झांसे में आकर वैशाली ने उन्हें आधार कार्ड और डेबिट कार्ड की सारी डिटेल् बता दी। कुछ देर बाद पिता के बैंक एकाउंट से दो बार में 21 हजार से अधिक रुपए निकाल लिए गए। मैसेज आते ही वैशाली के होश उड़ गए। ठगी का अहसास होने पर वैशाली ने एफआईआर दर्ज कराई है। एसएचओ आलोक राव ने बताया मामले की जांच की जा रही है।

बनावटी गरीबों पर सरकार ने कसा शिकंजा, निरस्त होंगे राशन कार्ड

● आईटीआर भर रहे लोगों और जमींदारों का सत्यापन कर राशन कार्ड काटने की कार्रवाई शुरू

मोहनलालगंज। मुफ्त राशन के लिए बनावटी गरीबों पर अब सरकार ने शिकंजा कस दिया है। आयकर रिटर्न भर रहे और पांच एकड़ से अधिक भूमि के मालिकों के राशन कार्ड काटने के लिए सत्यापन कराया जा रहा है। हालांकि त्रुटिवश लिस्ट में शामिल जरूरतमंद लोगों से प्रमाण लेकर उन्हें राहत भी दी जा रही है। आधिकारिक सूत्रों की मानें तो यह सिलसिला लगातार चलता रहेगा। कोरोना काल में जरूरतमंद लोगों को सरकार ने मुफ्त राशन देने का ऐलान किया तो कई अपात्रों ने भी सही जानकारी छिपाकर

रिपोर्ट उच्च अधिकारियों को भेजी जा रही है।

मुफ्त राशन के लालच में 5 एकड़ से अधिक भूमि के मालिकों ने भी राशन कार्ड बनवा लिए। आपूर्ति विभाग ने फसल खरीद के लिए कएए का रहे पंजीकरण का ब्योरा मांगकर सत्यापन शुरू किया तो ऐसे कुछ अपात्रों के नाम भी सामने आ रहे हैं। अधिकारियों के मुताबिक 5 एकड़ से अधिक भूमि स्वामियों का सत्यापन कर उनके राशन कार्ड भी निरस्त किए जाएंगे। उनके स्थान पर गरीब और जरूरतमंद लोगों के राशन कार्ड जारी किए जाएंगे। ई पांस मशीन के जरिए राशन वितरण से अब प्रतिमाह राशन न लेने वाले लाभार्थी भी आसानी से चिन्हित हो रहे हैं। लिहाजा पांच माह तक लगातार राशन न लेने वाले कार्डधारकों को भी आपूर्ति विभाग अपात्र मानकर उनके राशन कार्ड काटने की तैयारी कर रहा है।

विधानसभा चुनाव परिवर्तन का अनुमान

एकिकृत पोल हरियाणा में परिवर्तन तथा जम्मू कश्मीर में 'त्रिंशु विधानसभा' का अनुमान लगा रहे हैं। हरियाणा में जहां एकिकृत पोल कांग्रेस की निर्णायक विजय की भविष्यवाणी कर रहे हैं, वहीं जम्मू कश्मीर में उनका अनुमान त्रिंशु विधानसभा का है। चूंकि ये अनुमान प्रभावशाली राजनीतिक विमर्श के आधार पर होते हैं, इसलिए वे इन दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों में केवल संभावित परिवर्तन की झलक देते हैं। हरियाणा में एकिकृत पोलों ने अनुमान लगाया है कि कांग्रेस भारतीय जनता पार्टी-भाजपा नीत सरकार को सत्ता से हटा कर सत्ता में आ सकती है जो 2014 से सत्ता में बनी हुई है। यदि ये अनुमान सही सिद्ध होते हैं तो हरियाणा के मतदाताओं में बढ़ती निराशा का संकेत होगा जो खासकर किसानों और ग्रामीण मतदाताओं में है। वे भाजपा द्वारा 2020 में किसान विरोध प्रदर्शनों से निपटने के तरीकों और इसके बाद हुए कृषि सुधारों से संतुष्ट नहीं हैं। कांग्रेस मतदाताओं में व्याप्त निराशा का लाभ उठा कर संभवतः उनको, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों व जाट समुदाय में लाभबंद करने में सफल रही है। इस बीच जम्मू कश्मीर में एकिकृत पोल त्रिंशु सदन का अनुमान लगा रहे हैं जिससे संकेत मिलता है कि इस संघर्षासित क्षेत्र में स्थिर सरकार बनाना एक चुनौती होगी। किसी एक दल को बहुमत न मिलने के कारण आने वाले सप्ताहों में राजनीतिक



दोषों व गठबंधन बनाने जैसी गतिविधियां महत्वपूर्ण होंगी। विभाजित जनादेश इस क्षेत्र के राजनीतिक परिदृश्य की जटिलता स्पष्ट करता है जो 2019 में अनुच्छेद 370 समाप्त करने के बाद

स्पष्ट रूप से सामने आई है। 'पीपुल्स एलार्गंस फार गुपकार डेक्लरेशन'-पीएजोडी के महत्वपूर्ण पक्ष के रूप में उभरने की उम्मीद है, पर भाजपा ने भी खासकर जम्मू क्षेत्र में अपनी उपस्थिति मजबूत की है। इसलिए न केवल आंकड़े, बल्कि चुनाव-पश्चात गठबंधन सरकार गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। वास्तव में त्रिंशु विधानसभा से वार्ताओं का लंबा दौर चल सकता है जिससे संभवतः एक अस्थिर गठबंधन सत्ता में आ सकता है। यह इस क्षेत्र में हालिया वर्षों में व्याप्त राजनीतिक अनिश्चितता को रेखांकित करेगा।

हरियाणा में कांग्रेस की विजय उसके लिए एक महत्वपूर्ण क्षण होगा। इससे वह आगे आने वाले विधानसभा चुनावों में अपनी स्थिति सुधार सकती है। इससे कांग्रेस राजस्थान और पंजाब में अपने समर्थकों को एकजुट करने का प्रयास कर सकती है। लेकिन यदि एकिकृत पोल के अनुमानों के अनुसार कांग्रेस को पूर्ण बहुमत न मिला तो उसे अपनी एकजुटता बनाए रखने में संकट का सामना करना पड़ेगा। कांग्रेस में व्याप्त भयानक गुटबाजी के चलते सत्ता मिलने पर भी उसे सभी गुटों में संतुलन बनाना कठिन होगा और कोई गुट छिटक कर विपक्ष के साथ जा सकता है। विद्रोहियों पर काबू करना उसके लिए आसान नहीं होगा। जम्मू कश्मीर में त्रिंशु विधानसभा से इस संघर्षासित क्षेत्र में व्याप्त अस्थिरता गहरा सकती है। गठबंधन सरकार को जम्मू और कश्मीर घाटी के बीच अक्सर टकराव वाले हिंदों में समन्वय बनाना होगा। चुनाव परिणामों से राष्ट्रीय पार्टियों को खासकर जम्मू कश्मीर जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के बारे में अपनी रणनीतियों की समीक्षा करनी होगी जहां सुरक्षा सकारों के साथ पहचान की राजनीति भी प्रभावी है। लेकिन जैसा कि सभी एकिकृत पोलों के साथ होता है, इन विधानसभा चुनावों के बारे में भी एकिकृत पोल अनुमानों की आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। पिछले अनेक चुनावों में एकिकृत पोलों के अनुमान सटीक नहीं पाए गए हैं।

भारत की प्रगति का नया मार्ग

स्वदेशी खोज एवं अद्यतन तकनीक का प्रयोग कर भारत लंबे समय से व्याप्त आर्थिक अवधारणाओं को चुनौती देते हुए विश्व मंच पर अपना नया विमर्श स्थापित कर रहा है।



अनुराग सक्सेना
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

स्वदेशी खोज एवं अद्यतन तकनीक का प्रयोग कर भारत लंबे समय से व्याप्त आर्थिक अवधारणाओं को चुनौती देते हुए विश्व मंच पर अपना नया विमर्श स्थापित कर रहा है। भारत आज पिछले लगभग एक दशक से 'मेक इन इंडिया' का लाभ उठाते हुए स्वयं को वैश्विक स्तर पर प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। इतिहास पर गौर करें तो स्पष्ट होगा कि शताब्दियों से पश्चिमी देश खोज, बौद्धिक संपदा-आईपी और तकनीकी प्रगति की अथक खोज का लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने अक्सर विनिर्माण व सेवा क्षेत्र में नई रचना का महामांडन किया है। इन देशों ने अपनी खोजों का आर्थिक लाभ उठाने का पूरा प्रयास किया और इसके साथ ही उन्होंने अपने विचारों का वैश्विक स्तर पर निर्यात कर स्वयं को आर्थिक महाशक्ति के रूप में विकसित किया। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका ने विखंडनकारी तकनीकों से अपने उद्योगों में व्यापक परिवर्तन किया। इनमें इंटरनेट, फार्मास्यूटिकल्स तथा एयरोस्पेस शामिल हैं। इससे उन्होंने अपने उत्पादों और सेवाओं का वैश्विक बाजार बनाया। इसी प्रकार यूरोपीय देशों ने ढांचगत विकास का लाभ उठाया जिसमें सड़कों व रेलों के व्यापक विस्तार से प्राप्त होने वाले लाभ शामिल हैं। इसके साथ ही ऑटोमोटिव, इंजीनियरिंग व शानोशोकत को वस्तुओं में उनके द्वारा की जाने वाली खोजों तथा आईपी का वैश्विक प्रभुत्व बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रहा। इसके उलट भारत और चीन जैसी अर्थव्यवस्थाएं ऐतिहासिक रूप से अपने आर्थिक विकास के लिए केवल विनिर्माण और सेवाओं पर निर्भर रही। इस प्रकार ये दोनों देश 'मूल्य संवर्धन' के मामले में निचले क्षेत्र में बने रहे।

यह दृष्टिकोण जहां औद्योगिकरण और रोजगार सृजन के मामले में प्रभावी रहा, पर उसने आईपी सृजन को प्राथमिकता नहीं दी। इस प्रकार वे अपनी बौद्धिक संपदाओं का अर्थिक लाभ नहीं उठा पाए। इससे ये देश उत्कृष्ट तकनीकों के निर्माता के बजाय केवल उनके उपभोक्ता बन कर रहे गए। हालांकि, हालिया वर्षों में चीन ने इस माडल से अलग होने का प्रयास किया और उसने खोजों, बौद्धिक संपदा तथा तकनीकी प्लेटफार्मों में भारी निवेश किया। चीन ने दूरसंचार, सोशल मीडिया और गेमिंग जैसे क्षेत्रों में अद्यतन तकनीकों का विकास एयरोस्पेस शामिल हैं। इससे उन्होंने अपने उत्पादों और सेवाओं का वैश्विक बाजार बनाया। इसी प्रकार यूरोपीय देशों ने ढांचगत विकास का लाभ उठाया जिसमें सड़कों व रेलों के व्यापक विस्तार से प्राप्त होने वाले लाभ शामिल हैं। इसके साथ ही ऑटोमोटिव, इंजीनियरिंग व शानोशोकत को वस्तुओं में उनके द्वारा की जाने वाली खोजों तथा आईपी का वैश्विक प्रभुत्व बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रहा। इसके उलट भारत और चीन जैसी अर्थव्यवस्थाएं ऐतिहासिक रूप से अपने आर्थिक विकास के लिए केवल विनिर्माण और सेवाओं पर निर्भर रही। इस प्रकार ये दोनों देश 'मूल्य संवर्धन' के मामले में निचले क्षेत्र में बने रहे।



केवल उनके उपभोक्ता बन कर रहे गए। हालांकि, हालिया वर्षों में चीन ने इस माडल से अलग होने का प्रयास किया और उसने खोजों, बौद्धिक संपदा तथा तकनीकी प्लेटफार्मों में भारी निवेश किया। चीन ने दूरसंचार, सोशल मीडिया और गेमिंग जैसे क्षेत्रों में अद्यतन तकनीकों का विकास एयरोस्पेस शामिल हैं। इससे उन्होंने अपने उत्पादों और सेवाओं का वैश्विक बाजार बनाया। इसी प्रकार यूरोपीय देशों ने ढांचगत विकास का लाभ उठाया जिसमें सड़कों व रेलों के व्यापक विस्तार से प्राप्त होने वाले लाभ शामिल हैं। इसके साथ ही ऑटोमोटिव, इंजीनियरिंग व शानोशोकत को वस्तुओं में उनके द्वारा की जाने वाली खोजों तथा आईपी का वैश्विक प्रभुत्व बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रहा। इसके उलट भारत और चीन जैसी अर्थव्यवस्थाएं ऐतिहासिक रूप से अपने आर्थिक विकास के लिए केवल विनिर्माण और सेवाओं पर निर्भर रही। इस प्रकार ये दोनों देश 'मूल्य संवर्धन' के मामले में निचले क्षेत्र में बने रहे।

इन प्रयासों से चीन न केवल अपने घरेलू उद्योगों का विकास करने में सफल हुआ, बल्कि वह बहुत महत्वपूर्ण वैश्विक प्रथमिकताओं के कारण भारत अकेले उसे दुनिया भर में मौजूद मूल्यवान डेटा तक पहुंच बनाई। दूसरी ओर भारत ने एक अलग रास्ता अपनाया। उत्पादन बढ़ाने तथा तकनीक सृजन के बजाय भारत कौटुक सेंटर्स, ग्लोबल कैपिबिलिटी सेंटर्स-जीसीसी तथा आईटी सेवाओं के पर्याय के रूप में उभरा। इस प्रकार के दृष्टिकोण तथा प्राथमिकताओं के कारण भारत अकेले प्रकाश से 'बैकरोम आफ वर्ड' बन गया। यह भूमिका उसके लिए आर्थिक रूप से लाभकारी थी, पर इससे देश खोज एवं उच्च मूल्य वाजी प्रौद्योगिकी सृजन में पीछे रह गया। हालांकि भारत ने सेवायें देने में अग्रणी भूमिका निभाई पर वह अक्सर

खोज तथा उत्पाद विकास प्रयासों में अन्य देशों के पीछे रह गया और इस मामले में नेतृत्वकारी भूमिका नहीं निभा सका। लेकिन पिछले दशक में भारत ने दुनिया के प्रति अपने दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन किया है। दृष्टिकोण में इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप आज भारत एक महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक व राजनयिक शक्ति के रूप में विकसित हुआ है और उसने सामर्थ्य के कारण भारत वर्तमान समय मजबूत की है। राजनयिक रूप से भारत ने विश्व मंच पर व्याप्त आक्रामक दृष्टिकोण अपनाया है। उसने अंतरराष्ट्रीय मामलों में रणनीतिक स्वायत्ता बनाए रखते हुए भी प्रमुख शक्तियों के साथ रणनीतिक साझेदारी की है। भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति तथा दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने के बावजूद दुनिया के अधिकांश निवेशक भारत को अपने निवेश का सबसे सुरक्षित स्थल समझने लगे हैं। इसके साथ ही भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत ने अपनी रक्षा क्षमताओं का विकास किया है और उसने 'क्वाड' जैसी पहलों में प्रमुख भूमिका निभाई है। भारत लंबे समय तक दुनिया में हथियारों का सबसे बड़ा आयातक बना रहा, पर अब वह हथियार निर्यातक प्रमुख देशों में शामिल हुआ है और 55 देशों को रक्षा सामग्री का निर्यात कर रहा है। इस प्रकार

वह हिंद-प्रशांत में चीनी प्रभाव का मुकाबला कर रहा है। व्यापार के मोर्चे पर भारत ने व्यापार समझौतों पर लगातार बातचीत की है और वह वर्तमान समय में महत्वपूर्ण वैश्विक सप्लाय श्रृंखला का मजबूत पक्ष माना जाता है। कोविड-19 वैश्विक महामारी के समय खासकर विश्व सप्लाय श्रृंखला में उसकी भूमिका उभर कर सामने आई है। इस हाल में प्राप्त आक्रामकता के कारण भारत वर्तमान समय में 'क्रिएट इन इंडिया' पर जोर दे रहा है जो सामर्थ्य तथा रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।

खोज की संस्कृति विकसित करने के साथ ही भारत स्वदेशी तकनीकों के विकास पर जोर दे रहा है। इस प्रकार भारत अगली शताब्दी में आर्थिक तथा भावनात्मक शक्ति के रूप में अपने प्रभुत्व का दृष्टिकोण सामने रख रहा है। आर्थिक रूप से उसने देश को मूल्य श्रृंखला में मजबूत करने का अवसर दिया है। इससे उसे अपनी बौद्धिक संपदा का लाभ मिल रहा है तथा विदेशी तकनीकों पर उसकी निर्भरता घट रही है। भावनात्मक व वैचारिक शक्ति यानी 'साफ्ट पावर' के रूप में भारत मीडिया और मनोरंजन जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इससे भारत लगातार विकृत पश्चिमी विमर्शों पर प्रतिक्रिया तक सीमित रहने के बजाय

लगातार अपने विशिष्ट विमर्शों को स्वरूप दे रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आह्वान किया था कि 'हमें एकसाथ मिल कर क्रिएट इन इंडिया को गति देने वाला आंदोलन खड़ा करना चाहिए।' उस समय बहुत से लोग इस विचार का व्यापक असर समझने में विफल रहे थे, जबकि इससे जमीनी और मध्यम स्तर पर व्यापक परिवर्तन होने वाले थे। प्रधानमंत्री मोदी का यह आह्वान खासकर वर्तमान समय में व्याप्त उस राजनीतिक-अर्थनीतिक विमर्श को सही करने वाला था जो पश्चिमी देशों ने हमारे ऊपर सदियों से थोपा रखा था। प्रधानमंत्री मोदी का इरादा भारतीय सभ्यता के विचारों का वैश्विक स्तर पर प्रचार और उनका निर्यात करना था। 'ईस्टमैन कलर' और 'विनाइल रिकार्डों' जैसी तकनीकों ने अमेरिका को अपने नायकों और रॉकस्टार को दुनिया भर में आगे बढ़ाने का मौका दिया था। इस प्रकार एक्सआर और गेमिंग के युग ने भारत को अपनी संस्कृति आगे बढ़ाने का मौका नहीं दिया। हाल ही में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने 'क्रिएट इन इंडिया चैलेंज' की घोषणा की है। यह घोषणा 'वर्ड आडियो विजुअल एंड इंटरटेनमेंट समिट'-वेक्स 2025 के अंतर्गत की गई है। यह दुनिया में प्रचारित करने की क्षमता में पहला आयोजन होगा। इस व्यापक चैलेंज में विषयवस्तु व गेम्स के मामले में 25 क्षेत्रों में हमारी प्रतिभा का प्रदर्शन सारी दुनिया के सामने होगा। भारत को ऐसे अनेकानेक आयोजनों की आवश्यकता है। समय आ गया है कि सारी दुनिया भारत की रचनात्मकता तथा देश की महत्वाकांक्षा का परिचय प्राप्त करे।

लेकिन इस संभावना को प्राप्त करने के लिए भारत को भारी निवेश की आवश्यकता है। एवीजीसी क्षेत्र में डिजिटल लेनदेन का भविष्य तथा मनोरंजन क्षेत्र का भविष्य भी निहित है। भारत की इस भावी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए कौशल विकास, निवेश पाइपलाइनों, इस व्यापक आयाम के प्लेटफार्मों के विकास तथा प्रतिशाली नियामक व्यवस्थाओं की आवश्यकता है। हालांकि, यह सब प्राप्त करना अभी कठिन लग सकता है, पर इस दिशा में 'गंगोत्री' की तरह शुरुआत कर भारत विश्व अर्थव्यवस्था में अपना नेतृत्व सुनिश्चित कर सकता है। इससे आने वाले सालों का विमर्श विकसित होगा।

कर्मचारियों का मानसिक स्वास्थ्य



नेतृत्व की सहायता से कर्मचारियों का तनाव घट सकता है तथा नौकरी से उनकी मानसिक संतुष्टि बढ़ सकती है।



साक्षी सेठी
(लेखिका, शिक्षाविद हैं)

वर्तमान समय के गतिशील कार्यबल में कर्मचारियों का मानसिक स्वास्थ्य संगठन के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे उत्पादक तथा सामंजस्यपूर्ण परिवेश बनता है। कर्मचारियों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर रखने में नेतृत्व की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। बाँस और प्रबंधन के पास कार्यस्थल पर संस्कृति को स्वरूप देने, कर्मचारियों का संतोष प्रभावित करने तथा सीधे उनकी मानसिक बेहतरी सुनिश्चित करने की शक्ति होती है। नेतृत्व को ऐसे अधिकार और शक्ति होती है जिससे वह कर्मचारियों के अपने कार्य परिवेश के प्रति दृष्टिकोण को बदल सकता है। नेतृत्व द्वारा निर्धारित दिशा संगठन की मूल संस्कृति निर्धारित करती है। इस तथ्य

से इनकार नहीं किया जा सकता है कि सकारात्मक, प्रोत्साहक परिवेश कर्मचारियों की एकाग्रता व संतोष सुनिश्चित करता है, जबकि हानिकारक परिवेश उनमें तनाव तथा बेचैनी पैदा करता है। अनेक शोधों से संकेत मिलता है कि अपने नेताओं का समर्थन प्राप्त कर कर्मचारियों में तनाव का स्तर कम रहता है तथा नौकरी के प्रति उनमें संतुष्टि बेहतर होती है। अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि इस प्रकार की परिवर्तनीय और सहायक नेतृत्व शैली का संबंध कर्मचारियों के बेहतर मानसिक स्वास्थ्य परिणामों से भी है। कर्मचारियों को भावनात्मक समर्थन देने तथा उनकी पहचान करने वाला नेतृत्व महत्वपूर्ण रूप से कर्मचारियों में दबाव का स्तर कम कर सकता है। इसके विपरीत तानाशाही नेतृत्व शैली का परिणाम अक्सर कर्मचारियों में बढ़ती बेचैनी तथा घटते उत्साह का कारण बनता है। परिवर्तनीय शैली कार्य व्यवस्थाएँ, जैसे रिमोट कार्य तथा काम के परिवर्तनशील घंटों का कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि वे काम की मांगों



के साथ अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं। प्रभावी नेतृत्व का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयाम समर्थन और पहचान प्रदान कर सकता है। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि कर्मचारी अपने योगदान और महत्व को स्वीकृति चाहते हैं। उनको रचनात्मक फीडबैक देने वाला बाँस और

उनकी उपस्थितियों का उत्सव मनाने वाला नेतृत्व उनमें जुड़ाव व प्रेरणा की भावना पैदा करता है। इस पहचान से कर्मचारियों का आत्मविश्वास बढ़ सकता है तथा संगठन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता मजबूत हो सकती है। दूसरी ओर पहचान स्वीकार न करने से उनमें अनुपयुक्त होने तथा निराशा की भावना घर कर सकती है जिसका प्रभाव अंततः उनके मानसिक

स्वास्थ्य पर नकारात्मक होता है। कार्यस्थल संबंधी आयामों तथा कर्मचारी के मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध बहुत जटिल है, पर इनको लगातार संगठन की सफलता के लिए पहचाना जाता है। सहायक नेतृत्व को बढ़ावा देने से एक सकारात्मक कार्य संस्कृति विकसित होती है जिससे कर्मचारियों को बेहतर को प्राथमिकता मिलती है। इससे संगठन मानसिक स्वास्थ्य परिणामों को बढ़ावा दे कर समग्र रूप से उत्पादकता को प्रोत्साहित करता है। इस क्षेत्र में लगातार शोध कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य रणनीतियों को विकसित करने में प्रभावी हो सकती है। कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर नेतृत्व का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है। बाँस को कार्यस्थल संस्कृति बदलने, सहायता एवं पहचान स्थापित करने, प्रभावी संप्रेषण करने, काम के बोझ का प्रबंधन करने, टकरावों का समाधान करने तथा आदर्श स्वस्थ व्यवहार विकसित करने की शक्ति प्राप्त होती है। इन आयामों का महत्व समझने से संगठन में स्वस्थ कार्य परिवेश

विकसित होता है जहां कर्मचारियों का महत्व समझ कर उनको प्रोत्साहन मिलता है।

बिजनेसों के लगातार विस्तार से कार्यस्थल पर जटिलताएँ पैदा होती हैं। ऐसे में मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने के लिए प्रभावी नेतृत्व बहुत जरूरी है जो न केवल कर्मचारियों के लिए प्राथमिकता मिलती है। इससे संगठन मानसिक स्वास्थ्य परिणामों को बढ़ावा दे कर समग्र रूप से उत्पादकता को प्रोत्साहित करता है। इस क्षेत्र में लगातार शोध कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य रणनीतियों को विकसित करने में प्रभावी हो सकती है। कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर नेतृत्व का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है। बाँस को कार्यस्थल संस्कृति बदलने, सहायता एवं पहचान स्थापित करने, प्रभावी संप्रेषण करने, काम के बोझ का प्रबंधन करने, टकरावों का समाधान करने तथा आदर्श स्वस्थ व्यवहार विकसित करने की शक्ति प्राप्त होती है। इन आयामों का महत्व समझने से संगठन में स्वस्थ कार्य परिवेश

आप की बात

एकिकृत पोल की विश्वसनीयता

पिछले चुनावों में हमने देखा कि अनेक सौदों के परिणाम एगिजट पोल के अनुमान के विपरीत आये। एगिजट पोल पर कितना भरोसा किया जा सकता है? यह तो एक अनुमान भर होता है। स्कूल-कॉलेज में होने वाली परीक्षाओं में पहले गैस पेपर परीक्षाओं द्वारा देखे जाते हैं किन्तु जरूरी नहीं कि उसके भरोसे परीक्षा में बेहतर परिणाम लाये जा सकते हों। ठीक इसी तरह प्रसारित या प्रकाशित चुनावी एगिजट पोल भी एक अनुमान होते हैं। मतदान के बाद सभी राजनीतिक पार्टियाँ भी अनुमान लगाती हैं किन्तु उनका गणित उनके दफ्तर तक सीमित रहता है या फिर उनके प्रवक्ता यह अनुमान टीवी पर होने वाली

जयशंकर का पाकिस्तान दौरा

भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर का प्रस्तावित पाक दौरा शंघाई सहयोग संगठन-एससीओ की प्रस्तावित शिखर बैठक में भाग लेने के लिए है। एससीओ की बैठक वर्तमान अंतरराष्ट्रीय युद्धग्रस्त तनावपूर्ण माहौल में अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। विदेश मंत्री का इस बैठक में भाग लेना महत्वपूर्ण है। इस मंच पर भारत अपनी अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का प्रदर्शन करने के साथ ही रणनीतिक स्वायत्ता को स्पष्ट रूप से रेखांकित कर सकता है। भारत ने पुरानी गुटनिरपेक्ष नीति पर चलते हुए उसे और सक्रिय रूप प्रदान किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि भारत सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना चाहता है। भारत इस बैठक में दुनिया भर में जारी युद्ध रोकने के लिए उपयुक्त सुझाव दे सकता है। विदेश मंत्री ने पाकिस्तान से किसी भी प्रकार की द्विपक्षीय बातचीत से इन्कार किया है, लेकिन पाकिस्तान भारत से व्यापार शुरू करने के लिए छटपटा रहा है। पाकिस्तान अभी भी भारत-विरोधी एजेंडे पर चल रहा है, आतंकवादी भेज रहा है तथा विश्व मंचों पर कश्मीर राग अलाप रहा है। ऐसे में द्विपक्षीय वार्ता लगभग असंभव है। पाकिस्तान में कानून-व्यवस्था की वर्तमान स्थिति को देखते हुए एससीओ बैठक टलने की आशंका भी है।
- सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

अनुसंधान और शोध

अनुसंधान और शोध के क्षेत्र में भारत के सामने कई चुनौतियाँ हैं, हालांकि इनके समाधान की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं। जिस गति से दुनिया में विज्ञान और तकनीकी का विकास हो रहा है, उसे देखते हुए अब समय आ गया है कि भारत अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को और मजबूत करे। विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि यह समाज के हर तबके तक पहुँचना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में जो शून्यता है, उसे केवल बेहतर नीति निर्माण से भरा जा सकता है। हमें सोचना होगा कि छोटे शहरों और गाँवों के युवाओं को वैज्ञानिक सोच कैसे दी जाए।
जब ये युवा अपनी समस्याओं के समाधान के लिए विज्ञान का सहारा लेंगे तभी सही मायनों में अनुसंधान का उद्देश्य पूरा होगा। अनुसंधान का उद्देश्य पूरा होना। अनुसंधान में विज्ञान और तकनीकी शिक्षा और कृषि अनुसंधान पर जोर देने की आवश्यकता है। सरकार को स्कूलों से ही बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की दिशा में ध्यान देना चाहिए। छोटे शहरों और गाँवों में वैज्ञानिक शोध केंद्र स्थापित करना एक अच्छा कदम होगा। इससे छात्रों को बेहतर अवसर मिलेंगे। स्थानीय उद्योगों को भी अनुसंधान के क्षेत्र में समुचित सहयोग देना चाहिए।
अवनीश कुमार गुप्ता, आजमगढ़

बसपा की स्थिति

बहुजन समाज पार्टी-बसपा के शिल्पकार मान्यवर काशीराम को उनके महापरिनिर्वाण दिवस 9 अक्टूबर पर याद करना उचित होगा। यह बसपा की स्थिति की समीक्षा करने का भी अवसर है। काशीराम ने उपेक्षित, दलित, आदिवासी और ओबीसी समुदाय के मान, सम्मान व सुरक्षा के लिए अपना जीवन कुर्बान कर दिया था। माना जाता है कि उन्होंने अपने जीवन में 4,000 किलोमीटर की साइकिल यात्रा कर सोते हुए उपेक्षित समाज को जगाया था। उनका सबसे बड़ा योगदान 10 वर्ष से ठंडे बस्ते में पड़ी मंडल कमीशन रिपोर्ट लागू कराने का प्रयास था। जब केन्द्र की वीपी सिंह सरकार ने मण्डल कमीशन रिपोर्ट लागू की तब बसपा तथा देश के दलित आंदोलनों ने उसका पुरजोर समर्थन किया था। सुश्री मायावती काशीराम के इसी आजीवन योगदान के चलते तीन बार भाजपा के सहयोग से और एक बार पूर्ण बहुमत से उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनीं। आज बसपा को समीक्षा करनी चाहिए कि वह काशीराम के आदर्शों पर चल कर अपना गौरव पुनः प्राप्त करे।
- वीरेंद्र कुमार राय, दिल्ली

लीकेज पाइप लाइन की मरम्मत के चलते जलापूर्ति ठप, मचा हाहाकार

टैकरों के माध्यम से मंगलवार को शुरू की जायेगी जलापूर्ति-ईओ बजरंगनगर स्थित नवनिर्मित पानी की टैंकी से जलापूर्ति के लिये नगर पंचायत ने शुरू की तैयारी

कानपुर देहात। जनपद की रूरा नगर पंचायत में निर्माणाधीन ओआरबी के नीचे जगह-जगह लीकेज के चलते बीते तीन दिनों से जलापूर्ति ठप है, जलापूर्ति ठप होने से बूंद-बूंद पानी को तरस रहे नगरवासियों में हाहाकार मचा हुआ है। ईओ रूरा मनीष कुमार ने मंगलवार की सुबह टैकरों के माध्यम से जलापूर्ति का आश्वासन दिया है, ईओ ने जलापूर्ति की विकराल समस्या के समाधान के लिये नगर पंचायत के दक्षिणी हिस्से में बजरंगनगर वार्ड के स्टेशन रोड पर स्थित नवनिर्मित पानी की टैंकी से पाइपलाइन जोड़कर दिन में



एक बार जलापूर्ति के लिये तैयारी के निर्देश दिये हैं। नगर पंचायत की जलापूर्ति लाइन का बड़ा हिस्सा निर्माणाधीन ओआरबी के नीचे से गुजरा है, ओआरबी निर्माण की समय जलापूर्ति लाइन को शिफ्ट करने में लापरवाही का खामियाजा अब लोगों को भुगतना पड़ रहा है, जगह-जगह पाइप लाइन में लीकेज की समस्या के समाधान के लिये

मरम्मत व शिफ्टिंग का काम किया जा रहा है। मरम्मत के काम के चलते नगर पंचायत की जलापूर्ति व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुयी है। कस्बे के दक्षिणी हिस्से में स्थित बजरंगनगर, शिवाजीनगर, शास्त्रीनगर व रामनगर वार्डों में तो जलापूर्ति बीते तीन दिनों से ठप है। जलापूर्ति ठप होने से करीब 10 हजार की आबादी बूंद-बूंद पानी



को मोहताज है। जलापूर्ति ठप होने से लोगों में हाहाकार मचा हुआ है। ईओ मनीष कुमार ने बताया कि मंगलवार की सुबह से नै टैकरों कि मंगलवार की सुबह से टैकरों कि पंचायत कर्मी पर भी कार्यवाही की सहमति बनी। बैठक में जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र को बनाने में लापरवाही करने वाली नगर पंचायत कर्मी पर भी कार्यवाही की सहमति बनी। बैठक में ईओ मनीष कुमार, सभासद अनुराग यादव संजय, अंशुल बाजपेई, सुरेश कुमार सहित लिपिक सैन्य अहमद मौजूद रहे। चैयरमैन रामजी गुप्ता ने बताया कि लीकेज पाइप लाइन मरम्मत करने वाले ठेकेदार को दो दिन के भीतर कार्य पूरा करने के सख्त निर्देश दिये गये, पाइप लाइन की मरम्मत के दौरान नगर में टैकरों के माध्यम से मंगलवार की सुबह जलापूर्ति सुनिश्चित करायी जायेगी।

सीडीओ ने प्राथमिक विद्यालय कुईतखेड़ा का किया निरीक्षण

कानपुर देहात। मुख्य विकास अधिकारी लक्ष्मी एन० ने विकासखंड अकरवापुर की ग्राम पंचायत कुईतखेड़ा के प्राथमिक विद्यालय का औचक निरीक्षण कियाए। निरीक्षण के दौरान आंगनवाड़ी केंद्र में 58 बच्चे रजिस्टर में दर्ज पाए गए। जिसमें 23 बच्चे उपस्थित मिले। इस पर मुख्य विकास अधिकारी ने बच्चों की उपस्थिति शत प्रतिशत करने के निर्देश दिए तथा विद्यालय में साफसफाई पेंटिंग बोर्ड ए टेबलए कुर्सिए लाइटए पंखा इत्यादि को व्यवस्थित तरीके से लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बच्चों को समय से पोषण आहार उपलब्ध कराए इसमें किसी प्रकार की लापरवाही ना की जाएए इसके उपरंत उन्होंने उपस्थित

अध्यापकों को विद्यालय में साफ सफाई के भी निर्देश दिएए उन्होंने कहा कि मिड डे मील बच्चों को समय से दिया जाए तथा निर्देशित किया कि मिड डे मील हेतु बच्चों के बैठकर खाने की व्यवस्था समुचित हूं से करायी जायेए अध्यापक विद्यालय में समय से उपस्थित हो इस पर भी विशेष ध्यान दिया जाएए बच्चों को ड्रेसपर मोजाए जूताए पुस्तके इत्यादि समय से उपलब्ध कराई जाए।

उसरी में भागवत कथा का हो रहा आयोजन

रसुलाबाद कानपुर देहात। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी रसुलाबाद क्षेत्र के उसरी में स्थित सत्या देवी मां काली देवी मंदिर में शारदीय नवरात्रि के अवसर पर

धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन चल रहा है। जहां मुख्य वका के रूप में साध्वी रूपम राधव ने चतुर्थ दिवस को मंदिर परिसर में भागवत कथा का रसपान कराया। इस मौके पर लवकुश आश्रम करौली कानपुर के करौली शंकर महाराज भी देवी मंदिर पहुंचे। उन्होंने कथा नाचिका को आरती उतारी। वहीं उनका स्वागत आयोजन समिति के अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने पुष्पमाला भेंट करके किया। रसुलाबाद क्षेत्र के उरी में स्थित काली देवी मंदिर में गत वर्षों की बात इस वर्ष भी शार्दी नवरात्रि के अवसर पर धार्मिक अनुष्ठान हो रहा है। रविवार को उसरी में स्थित सत्य देवी काली मंदिर में लव कुश आश्रम करौली कानपुर के करौली शंकर सरकार का आगमन हुआ।

ट्रक ने मारी मोटरसाइकिल सवारों को टक्करए बच्चे सहित दलोंगों की मौत

सडीला,फरुकेईटा। ट्रक द्वारा एक बाइक को टक्कर मार देने से उसपर सवार एक व्यक्ति और उसके बच्चे की मौत हो गयी जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कोतवाली बेगनगंज के अंतर्गत प्रतापनगर रोड पर स्थित झरुड़वा मोड़ के पास सामने से आ रहे एक ट्रक ने बाइक पर सवार एक बच्चे सहित तीन लोगों को टक्कर मार दी। इस संबंध में पता चला है कि गांव जायीपुवा निवासी शैलेन्द्र पुत्र रामलालए सुनील पुत्र जलिन निवासी गान समर्थी धान पिहली तीन वयस्की बच्चे बल्बू के साथ घर जा रहे थे। तभी इस ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर से शैलेन्द्र और तीन वयस्की बल्बू की मौत हो गयी जबकि सुनील गंभीर रूप से घायल हो गये। उसे सीएचसी कोषाबां भेजा गया है। पुलिस ने दोनों नृतकों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है।

मासिक विकास बैठक में उठा जलापूर्ति का मुद्दा



आवश्यक खबर फोटो 7 केडी-3 रूरा नगर पंचायत की मासिक विकास बैठक में मौजूद चैयरमैन रामजी गुप्ता, ईओ मनीष कुमार व सभासद गण रूरा, कानपुर देहात। जलापूर्ति ठप होने का दंश झेल रहे कस्बाईयों की समस्या के निदान के लिये सोमवार को नगर पंचायत सभागार में आयोजित बैठक में जोरदार बहस हुयी। चैयरमैन रामजी गुप्ते ने नेतृत्व में आयोजित बैठक में पुरानी पाइप लाइन के स्थान पर नई पाइप लाइन डालने के लिये ओआरबी को कार्यदायी संस्था 30प्र0 राज्य सेतु निगम की लापरवाही से हुये लीकेज को ठीक कराने के लिये होने वाले खर्च का हार्जना वसूलने की सहमति बनी। बैठक में जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र को बनाने में लापरवाही करने वाली नगर पंचायत कर्मी पर भी कार्यवाही की सहमति बनी। बैठक में ईओ मनीष कुमार, सभासद अनुराग यादव संजय, अंशुल बाजपेई, सुरेश कुमार सहित लिपिक सैन्य अहमद मौजूद रहे। चैयरमैन रामजी गुप्ता ने बताया कि लीकेज पाइप लाइन मरम्मत करने वाले ठेकेदार को दो दिन के भीतर कार्य पूरा करने के सख्त निर्देश दिये गये, पाइप लाइन की मरम्मत के दौरान नगर में टैकरों के माध्यम से मंगलवार की सुबह जलापूर्ति सुनिश्चित करायी जायेगी।

रूरा पुलिस ने चोरी का खुलासा कर चार अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

कानपुर देहात। रूरा पुलिस ने रूरा चौकी ईंचार्ज राकेश कुमार सिंह की अगुवाई में रूरा नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी की शिकायत पर दर्ज हुये लोहे की नाली जाल की चोरी के मामले में चार शांति चोरों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। रूरा चौकी ईंचार्ज ने बताया कि रूरा नगर पंचायत ईओ मनीष कुमार ने लोहे की जाली चोरी होने का मुकदमा दर्ज करवाया था, विवेचना व ममाले की जांच में संकलित साक्ष्यों व मुखबि की सूचना पर अभियुक्तों झुरीनाथ निवासी कारी कलवारी, रंजीत निवासी अम्बेडकर नगर रूरा, विकास निवासी अम्बेडकरनगर रूरा, शमशाद अली निवासी जवाहरनगर रूरा को बनीपारा मोड के पास से गिरफ्तार कर लिया गया, शिवली रोड पर स्थित कबाडी की दुकान से चोरी गयी लोहे की नाली को बरामद कर लिया गया है। पकड़े गये चोरों को न्यायालय में प्रस्तुत करने के बाद जेल भेजा जा रहा है।

डीएम ने मुफ्त बिजली योजना को लेकर किया महन मंथन



बांदा। जिलाधिकारी नगेन्द्र प्रताप की अध्यक्षता में कलेक्टरेट सभागार में पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने बताया कि भारत सरकार द्वारा इस योजना के अंतर्गत पीएम सूर्य घर मोबाइल ऐप तैयार किया गया है। योजना के अन्तर्गत प्रति किलोवाट विद्युत भार होने पर सोलर पैनल लगवाने हेतु 60 हजार रुपये उपभोक्ता को देने होगे। जिसमें एक एवं दो किलोवाट के लिए सोलर पैनल लगवाने पर 75 प्रतिशत की धनराशि का अनुदान दिया जाता है तथा उपभोक्ता के तहत 300 युनिट डी बिजली भी मिलती है। उन्होंने योजना का व्यापक प्रचार प्रसार सभी तहसीलए नगर पालिका एवं विकास खण्डों में करवाये जाने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी के अधिकारियों के निर्देश दिये कि पीएम सूर्य घर योजना में अधिक से अधिक उपभोक्ताओं का रजिस्ट्रेशन सुदृढ स्तर पर प्रचार प्रसार कराते हुए करवाये जाने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने इस योजना के अन्तर्गत उपभोक्ताओं को बैंको के माध्यम से ऋण उपलब्ध कराये जाने हेतु लीड बैंक मैनेजर को निर्देश दिये कि सभी बैंको में पीएम सूर्य घर योजना से सम्बन्धित पण्डलेट्स लगवाने हुए लोगों को जानकारी दी जाए। उन्होंने इस योजना के अन्तर्गत सोलर पैनल लगाने वाले वेफंडरो को भी निर्देशित किया कि वह अधिक से अधिक लोगों को योजना की जानकारी देते हुए गुणवत्तायुक्त पैनल उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराये।

डीएम ने निर्माणाधीन सड़क मार्ग, सेल्फी पॉइंट्स का किया निरीक्षण देखी गुणवत्ता

लखीमपुर खीरी। सोमवार की सुबह डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने शहर में नगर पालिका परिषद लखीमपुर की निर्माणाधीन संकटा देवी सड़क मार्ग और मां जानकी सौज्या चौक के सेल्फी पॉइंट्स का स्थलीय निरीक्षण कर गुणवत्ता परखीए संबंधित को जरूरी दिशा निर्देश दिए। शहर में सदर चौहारे से संकटा देवी चौराहे तक जाने वाली सड़क मार्ग के निर्माण कार्य का डीएम ने स्थलीय निरीक्षण कर दिया। उन्होंने अधिकारियों को मानक के अनुसार कार्य कराने का निर्देश दिया। उन्होंने ईओ नपाप संजय कुमार को कार्य को सड़क की उच्च गुणवत्ता के साथ ही कार्य को पूर्ण करने में समयबद्धता का विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने कड़े निर्देश दिए कि मार्ग में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने सड़क से नाली ऊंची बनाए जाने पर जाना सड़क के पानी नाली में कैसे जाएगा। निर्देश दिए कि नाले पर कुछ कुछ दूरी गोल छिद्र कर दिए जाएए जिससे बारिश के दौरान सड़क का जल आसानी से नाली में जा सके। डीएम ने निर्देश दिए कि भविष्य में सड़क की उच्च गुणवत्ता के साथ ही कार्य को पूर्ण करने में समयबद्धता का विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने कड़े निर्देश दिए कि मार्गों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने सड़क से नाली ऊंची बनाए जाने पर जाना सड़क

सजा मां वैष्णो का दरबार



गोला गोकर्णनाथ खीरी। नगर की पुरानी मिल कॉलोनी में 28 वॉ मां वैष्णो दरवार की बहुत सुंदर तरीके से सजाया गया है जिसमें स्थानीय बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुआ। गोला नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र के मां वैष्णो के भक्ति दुर्गम पहाड़ियों पर चलते हुए गुप्त के मध्य मां वैष्णो दरबार के दर्शन किये। और मां वैष्णो के दरबार में बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम में अच्छी-अच्छी झांकियां और सुंदर से गीत प्रस्तुत किया। भक्तजन बच्चों की झांकियां एवं गीत सुनकर मां वैष्णो माता के भक्त झूट उठे।

दुष्कर्म में असाफल होने पर मौसेरे माई ने युवती पर पेट्रोल डालकर लगाई आग

बांदा। दुष्कर्म में असाफल होने पर मौसेरे माई ने युवती के ऊपर पेट्रोल डालकर लगाई आग में एक शर्मसार कर देने वाला मामला सामने आया है जहाँ दुष्कर्म में असाफल होने पर मौसेरे माई ने अपनी ही बहन पर पेट्रोल डालकर जान से मारने का प्रयास किया है। आग लगते ही युवती ने पास में बह रहे नाले में छलांग लगा दी। जानकारी लेने परिजनो ने युवती को गिला अस्पताल में भर्ती कराया है जहाँ युवती का इलाज जारी वही पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार करने के लिए टीम लगाई है। शहर कोतवाली के पल्हरी गानगे जहाँ युवती को घर में अकेला पाकर मौसेरी के लड़के ने उसके साथ बलात्कार का प्रयास किया। युवती द्वारा विरोध करने पर आक्रोशित होकर युवती ने युवती के ऊपर पेट्रोल डाल दिया और आग लगाकर जान से मारने का प्रयास किया। आग लगते ही युवती वीथीपुकार करते हुए पास में नाले में कूनड़ी वही मौका पाकर युवत वहाँ से फरार हो गया। पीएसआर इंसुलकर युवती के परिजन मौके पर पहुंचे और आगन फलन में युवती को गिला अस्पताल में भर्ती कराया जाहाँ युवती का इलाज जारी है घायल युवती ने बताया की उसके मौसेरी के लड़के अर्थात मौसेरे माई ने बलात्कार करने की कोशिश की मैन अपनी इज्जत बचाने का प्रयास किया लेकिन भेरे कलसूणी माई ने पेट्रोल डाल कर जिन्दत जला दियाएनै दैडकर नाले में कूकर आग को बुझा लियाएहालाकि इमरजेंसी के डॉक्टर ने बताया कि इलाज तो चल रहा है लेकिन हालात काफी गंभीर है इस मामले में पुलिसअधीक्षक बांदा अंकुश अगवाल ने बताया कि पहले दोनों आपस में मिलकर रहते थे काफी समय रहते रहे है अब युवती अलबन हो गईं कुछ आपसी विवाद हुआ इसी के चलते आपसी तल्लियुगों की वजह से विवाद बढ़ गया एक दूसरे के खून के प्यासे हो गयेए इसके पुर 6महीने से आपसी सामंजस्य से लिविंग इन ने रह रहे थेए जब शादी करने का ट्कार बनाया इसी में आपसी टक्कर बढ़ गया एक पक्ष शायी के तैयार नहीं था इसी के चलते यह विवाद में घटना को अंजाम दिया गया।



माकियू राष्ट्रीयतावादी ने कटोघन टोल प्लाजा पर लगाई पंचायत

फतेहपुर। खागा तहसील क्षेत्र के अंतर्गत नेशनल हाईवे-2 पर बने कटोघन टोल प्लाजा पर किसानों से अवैध वसूली व गलत व्यवहार किए जाने सहित अन्य मांगों को लेकर भारतीय किसान यूनियन राष्ट्रीयतावादी के पदाधिकारियों ने टोल प्लाजा पर पंचायत का आयोजन किया। पंचायत में टोल कर्मियों के खिलाफ जमकर नाराजगी जाहिर की गई। मौके पर पहुंचे तहसीलदार को एसडीएम को संबोधित सारत सूत्रीय ज्ञापन सौंपकर मांगों को पूरा किए जाने की आवाज उठाई। पंचायत में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश उपाध्यक्ष एवं बुंदेलखण्ड प्रभारी शाहिद शेख ने शिरकत की। पंचायत की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष अचिनाशा वर्मा ने की। पंचायत को संबोधित करते हुए प्रदेश उपाध्यक्ष ने कहा कि कटोघन टोल प्लाजा पर स्थानीय किसानों के साथ जमकर अवैध वसूली की जा रही है। इतना ही नहीं जो किसान अवैध वसूली का विरोध करते हैं उनके साथ बदसलुकी की जाती है। जिसे संगठन कतई बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि जिले का किसान तमाम समस्याओं से जूझ रहा है। जिसका निस्तारण होना बेहद जरूरी है। पंचायत की सूचना पर आए तहसीलदार खागा को सात सूत्रीय ज्ञापन सौंपकर मांग किया कि जीटी रोड अर्माव में सर्विस रोड बनवाई जाए, ग्राम पंचायत अर्माव में पुरब में लगे ट्रांसफर्मर की कार्य क्षमता बढ़ाई जाए, ग्राम ददवा ब्लाक हथगाम में अवैध तरीके से दवगों द्वारा रास्ते में खड़ी की गई दीवार को ध्वस्त किया जाए, ग्राम पंचायत कल्लपुर मजरे सलेमपुर गोली के ट्रांसफर्मर को तत्काल बदलवाया जाए।



बच्चियों ने निकाली रैली

खागा, फतेहपुर। महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत सोमवार को कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय हथगाम में वाडें के नेतृत्व में बच्चों ने इम बनाते हुए जागरूकता रैली निकाली। बच्चे मिशन शक्ति के संबंध में तखियां लिए हुए थे। रैली में बच्चों ने आवासीय विद्यालय से शुरू होकर नगर के मुख्य मार्ग पर भ्रमण किया और नारी सशक्तिकरण तथा शासन द्वारा बालिकाओं की सुरक्षा संबंधी योजनाओं एवं कार्यक्रमों के प्रति लोगों को जागरूक किया। इसी विद्यालय में प्रीती रस्तोगी के नेतृत्व में स्काउट गाइड का सात दिवसीय प्रशिक्षण चल रहा है। मिशन शक्ति के पंचवे चरण एवं ऑपरेशन जागृति के तहत नारी सशक्तिकरण की कार्यवाही के अनुक्रम में समाज में नारी सुरक्षा, सम्मान तथा नारी स्वावलंबन के लिए सोमवार को कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय हथगाम में वाडें रैनू पांडेय के नेतृत्व में छात्राओं ने हाथों में नारी सशक्तिकरण से संबंधित स्लोगन लिखी तखियां लेकर एक बड़ी रैली निकाली। इसके बाद गोष्ठी में हेल्लोलाइन नंबरों 1090 वीमेन पॉवर लाइन, 181 महिला हेल्प लाइन, 108 एम्बुलेंस सेवा, 1076 मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, 112 पुलिस आपातकालीन सेवा, 1098 चाल्ड्रे लाइन, 102 स्वास्थ्य सेवा तथा थानों पर स्थानित महिला हेल्प डेस्क के बारे में विस्तृत जानकारी के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण से संबंधित उत्तर प्रदेश शासन की विभिन्न योजनाओं तथा प्राथमिकताओं के संबंध में भी जानकारी देते हुए जागरूक किया।

तांबेश्वर चौराहे पर नदी महाराज की प्रतिमा स्थापित

फतेहपुर। शहर के तांबेश्वर चौराहे में नदी जी की प्रतिमा को भागपा गिलाख्य मुखलाल पाल ने विधिवत हवन पूजन करके स्थापित किया। आचार्यों ने मंत्र पढ़कर बैड बाजे की धुन पर नदी जी को चौराहे पर स्थापित किया। बता दें कि पहले इस चौराहे पर कर्पूरी टक्कर की प्रतिमा लगनी थी लेकिन किन्हीं कारणों से कर्पूरी टक्कर की प्रतिमा को यहां से हटाया गया और फिर लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण भवन के सामने कर्पूरी टक्कर की प्रतिमा स्थापित की गई। यहां पर नदी जी की प्रतिमा को लगाया गया। इस दौरान कन्या मंज का आयोजन किया गया। विशाल शशि जागरण का भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया और प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर भागपा के पूर्व विधायक विरुम सिंह, समाजसेवी गोपाल गुप्ता, जिला महानंत्री भागपा पुष्पराज पटेल, नीरज सिंह, अजय सिंह उर्फ हिकू लोवरी, समाजसेवी मनोज गांधी, अमित शिवडे, समासेव विनय तिवारी, संजय लाला, अतीश पादवान, ऋतिक पाल, महिला मोर्चा की निराला महानंत्री पूनम श्रीवास्तव, स्नाक प्रमुख भिंदेर अमित तिवारी, अर्पणा सिंह गोग्रान, अर्चना निपटरी, संगीता द्विवेदी, संजय पांडेय, कुलदीप मदीरास, अनिशेक निवेदी, पवन मिश्रा, विवेक श्रीवास्तव उर्फ धीरू, डा. अरत श्रीवास्तव, डा. अतुल द्विवेदी, किरण सिंह, सटीप श्रीवास्तव, प्रभुदत्त दीक्षित सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

धूमधाम के साथ निकाली गई भगवान श्रीराम की बारात



गुरुसहयगंज (कन्नौज)। श्री आदर्श रामलीला समिति के तत्वाधान में पराधिकारियों द्वारा पाँच दान मध्य रथों के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की पूर्ण विधायक एवं पूर्व पालिकाध्यक्ष प्रतिनिधि द्वारा आरती वंदना कर मध्य बारात नगर के मोहल्ल रामगंज से प्रारंभ होकर नगर के प्रमुख मार्गों पर भूमधाम से निकाली गई। इस दौरान श्रद्धालुओं ने घर की छतों से पुष्पवर्षा कर राम बारात का मध्य स्वागत किया। रविवार की रात नगर के मोहल्ल रामगंज स्थित रामलीला मैदान में पूर्ण विधायक अखिलेश सिंह यादव व पूर्व पालिकाध्यक्ष प्रतिनिधि डूंगर कुमारा एवं भागपा जिला उपाध्यक्ष जीतू तिवारी द्वारा आरती वंदना कर बैडबाजे, बोल, नगाड़ों एवं पाँच दान मध्य रथों के साथ भगवान श्री राम की बारात का शुभारंभ किया गया। भगवान श्री राम की बारात में हजारों श्रद्धालुओं ने जय श्री राम के गानगाने नृत्य लगाते हुए संपूर्ण वातावरण को भक्तिमय कर दिया। इसके बाद नगर में कानोसे प्रदेश विद्यन मिश्रा, पूर्व वार एसोसियेशन अध्यक्ष राजेन्द्र बाबू, नगर के चौहारे पर पालिकाध्यक्ष प्रतिनिधि मयंक गुप्ता, श्रमिक संपर्क प्लोडर के जिला संयोजक संजीव गुप्ता अर्जुन, व्यापारी नेता शिवमराज वर्मा ने भगवान श्री राम की आरती वंदना की। राम बारात में सबसे आगे विक्निविनाशक गणेश भगवान, भगवान श्री राम, शिव तंडव, खाटू रथान जी की झांकी, राधा कृष्ण की झांकी, बंदर व आदिवासी नृत्य एवं रामनटि की झांकी आकर्षण का केंद्र रहे। भगवान श्रीराम की बारात को देखने के लिए नगर सहित क्षेत्र से हजारों की भीड़ उमड़ पड़ी। उधर सुस्था व्यवस्था में सदर क्षेत्राधिकारी कमलेश कुमार, प्रभावी निरीक्षक आलोक कुमार दुवे, निरीक्षक शैलेन्द्र कुमार सिंह, चौकी प्रभावी ज्ञानेन्द्र सिंह तहल रहे। इस अवसर पर कमेटी के अध्यक्ष उत्कल गुप्ता, आदि मौजूद रहे।

प्रतिमाओं की स्थापना पर हुआ प्रसाद का वितरण



गुरुसहयगंज (कन्नौज)। नगर के मोहल्ल अशोक नगर स्थित मॉ अंबिका मंदिर के स्थापना दिवस पर श्रद्धालुओं ने प्रतिमाओं की नगर में शोभायात्रा निकाली। जिसमें प्रमुख मार्गों पर भगण के उपरंत कार्यक्रम स्थल पर पहुंचकर शोभायात्रा का समापन किया गया। जिसके बाद महंत द्वारा विधि विधान से पूजा वंदना कर भुक्तियों की प्राण प्रतिष्ठा करवाकर कन्याओं के बाद परसद का वितरण किया गया। जिसमें हैकडों श्रद्धालुओं ने पहुंचकर प्रसाद ग्रहण किया। नगर के मोहल्ल अशोकनगर निवासी प्रमुख संस्थापक व्यक्तिसई अजय वर्मा द्वारा कन्या बाली गली में मॉ अंबिका के मध्य मंदिर का निर्माण कराया गया है। रविवार को श्रद्धालुओं ने अंबीर गुलाल की हेली खेलते हुये दुर्गा माता, गैरव, काली माता, हनुमान जी की चार प्रतिमाओं की मध्य शोभायात्रा निकाली गई। जो कि नगर के जीटी रोड चमोटे रोड होते हुए कार्यक्रम स्थल पर पहुंचकर शोभा यात्रा का समापन किया गया। जिसके बाद विधान महंत पं. प्रेमनाथ पाण्डेय द्वारा विधि विधान से हवन पूजन कर दो प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा करवाकर स्थापित कराया गया। इस दौरान श्रद्धालुओं ने गगनभेदी जयकारे लगाए। जिससे संपूर्ण वातावरण भक्तिमय हो गया।

सीएमओ की अडंगेबाजी से शुद्ध हो चिकित्साधीक्षक ने सौपा त्यागपत्र

सडीला सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सडीला को अपने 6 वर्षीय कार्यकाल में बुद्धिपूर्वक पर पहुंचाने वाले चिकित्साधीक्षक डॉ० शरद वैश्य ने चिकित्साधीक्षक के पद से त्यागपत्र दे दिया है। वे चिकित्सक के रूप में अपनी सेवाएं देते रहे। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सडीला के चिकित्साधीक्षक के रूप में डॉ० शरद वैश्य की पदोन्नती अक्टूबर 2015 में हुई थी। अपने कार्यकाल में उन्होंने सीएचसी सडीला को कार्यालय सम्मान तथा एनवयूएस सम्मान दिलाया। इसके अलावा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र को नई बुद्धियों तक पहुंचाने के साथ-साथ चिकित्सा सुविधाओं को आमजन तक सहलता से सुलभ होने का जबरदस्त प्रयास किया जिसमें वे काफी हद तक सफल भी हुए। जनपद में बुद्धिपूर्वक व्यक्तिसई अजय वर्मा द्वारा कन्या बाली गली में मॉ अंबिका के मध्य मंदिर का निर्माण कराया गया है। रविवार को श्रद्धालुओं ने अंबीर गुलाल की हेली खेलते हुये दुर्गा माता, गैरव, काली माता, हनुमान जी की चार प्रतिमाओं की मध्य शोभायात्रा निकाली गई। जो कि नगर के जीटी रोड चमोटे रोड होते हुए कार्यक्रम स्थल पर पहुंचकर शोभा यात्रा का समापन किया गया। जिसके बाद विधान महंत पं. प्रेमनाथ पाण्डेय द्वारा विधि विधान से हवन पूजन कर दो प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा करवाकर स्थापित कराया गया। इस दौरान श्रद्धालुओं ने गगनभेदी जयकारे लगाए। जिससे संपूर्ण वातावरण भक्तिमय हो गया।

सार्वजनिक पद पर मोदी के 23 वर्ष पूरे, भाजपा नेताओं ने प्रधानमंत्री की जमकर की प्रशंसा

नई दिल्ली (भाषा)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सार्वजनिक पद पर रहते हुए 23 वर्ष की अवधि पूरी कर ली है और इस मौके पर भाजपा ने सोमवार को गुजरात से लेकर केंद्र तक की उनकी यात्रा को जीवंत प्रेरणा बताया और कहा कि उनके नेतृत्व में देश की प्रगति और उसकी वैश्विक प्रतिष्ठा ने नए आयाम प्राप्त किए हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने सात अक्टूबर, 2001 को पहली बार गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी और इस पद पर लगातार 13 साल तक रहे। इसके बाद वह 2014 में देश के प्रधानमंत्री बने और गत जून महिने में उन्होंने लगातार तीसरी बार देश को कमान संभाला। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक्स पर लिखा, आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सार्वजनिक जीवन में मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री के रूप में 23 वर्ष पूरे हुए हैं। एक व्यक्ति अपना पूरा जीवन राष्ट्रहित और जनसेवा को कैसे समर्पित कर सकता है, यह 23 वर्षों की साधना उस अद्वितीय समर्पण की प्रतीक है। यह 23 वर्षीय यात्रा, सामाजिक जीवन जैने वालों के लिए जीवंत प्रेरणा है।

मोदी की राजनीतिक यात्रा में हमेशा उनके साथ रहे शाह ने कहा, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मैं मोदी जी को इस यात्रा का साक्षी रहा हूं। गृह मंत्री ने कहा, मोदी जी ने यह दिखाया कि कैसे गरीब कल्याण, विकास, देश की सुरक्षा व वैश्विक पहचान को मजबूती देने के कार्य समानांतर किए जा सकते हैं। उन्होंने समस्याओं को टुकड़ों में देखने की जगह, समग्र समाधान का दृष्टिकोण देश के सामने रखा। उन्होंने लिखा, बिना स्के, बिना थके, बिना अपनी पसंदाह किए देश और देशवासियों के लिए समर्पित ऐसे राष्ट्रसाधक मोदी जी को सेवा और समर्पण के 23 वर्ष पूर्ण करने पर मैं बधाई देता हूं। भाजपा अध्यक्ष और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री को बधाई देते हुए कहा कि अंत्योदय के मंत्र के साथ गरीबों और वंचित वर्गों के उत्थान की उनकी प्रतिबद्धता अनुकरणीय है। नड्डा ने एक्स पर लिखा, मां भारती के लिए समर्पण की उनकी भावना हम सभी के लिए प्रेरक है। अंत्योदय का मंत्र लेकर गरीब, वंचित वर्ग के उत्थान हेतु उनकी प्रतिबद्धता अनुकरणीय है। देश की प्रगति व वैश्विक प्रतिष्ठा ने उनके नेतृत्व में नए आयाम प्राप्त किए हैं। नड्डा ने कहा कि संगठन के सामान्य कार्यकर्ता से प्रधानमंत्री तक की संघर्षपूर्ण यात्रा में मोदी का जीवन सदैव समावेशी, सर्वस्पर्शी, सर्वसाधारण रहा है। उन्होंने कहा, जनसेवा व राष्ट्रोत्थान को उन्होंने समर्पित रखा। देश के जन-जन में आत्मविश्वास का संचार कर मोदी जी ने हमें विकसित भारत का लक्ष्य दिया है। भाजपा अध्यक्ष ने कहा, मैं भाजपा के कोटि-कोटि कार्यकर्ताओं की ओर से प्रधानमंत्री जी की इस प्रेरक यात्रा के लिए उन्हें बधाई देता हूं। उनका यशस्वी नेतृत्व हमारा सौभाग्य है। केंद्रीय मंत्री और पूर्व भाजपा अध्यक्ष नितिन गडकरी ने कहा कि मोदी का पूरा जीवन राष्ट्र हित और जन सेवा को समर्पित रहा है। उन्होंने एक्स पर लिखा, विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता और भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को संबोधित कर और सार्वजनिक जीवन में 23 वर्ष पूरे करने पर हार्दिक बधाई एवं बहुत शुभकामनाएं।

भारत, मालदीव में मुद्रा अदला-बदली समझौता

नई दिल्ली (भाषा)। भारत और मालदीव ने रिशतों को प्रगाढ़ बनाने के मकसद से सोमवार को 40 करोड़ डॉलर की मुद्रा अदला-बदली को लेकर समझौता किया। इससे मालदीव को विदेशी मुद्रा भंडार से जुड़े मुद्दों से निपटने में मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्यू ने मालदीव में रूपे कार्ड भी जारी किया। इसके अलावा हनीमाधु अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर नए रनवे का उद्घाटन किया और द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने पर सहमति जताई।

चार दिवसीय राजकीय दौरे पर आए मुइज्यू ने यहां हैदराबाद हाउस में प्रधानमंत्री मोदी से बातचीत की। बातचीत के बाद, भारत ने मालदीव को 70 सामाजिक आवास भी सौंपे। इसका निर्माण एफ़िज़म बैंक (भारतीय निर्यात-आयात बैंक) की खरीदार कर्ज सुविधा के तहत किया गया है। मोदी ने यहां मुइज्यू के साथ संवाददाताओं से कहा, आज, हमने पुनर्विकसित हनीमाधु हवाई अड्डे का उद्घाटन किया। अब ग्रेटर माले संपर्क परियोजना में भी तेजी लाई जाएगी। हम थिलाफूशी में एक नए वाणिज्यिक बंदरगाह के विकास में सहायता करेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और मालदीव ने आर्थिक संबंधों को और मजबूत करने के लिए मुक्त व्यापार समझौते पर बातचीत शुरू करने का फैसला किया है। उन्होंने मालदीव को एक घनिष्ठ मित्र बताया जिसका भारत



नई दिल्ली में राष्ट्रपति मुर्गु और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्यू तथा उनकी पत्नी साहिदा

को पड़ोस नीति और सागर (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और वृद्धि) दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण स्थान है। मोदी ने कहा, भारत ने हमेशा एक पड़ोसी देश की जिम्मेदारियों को निभाया है। आज, हमने अपने आपसी सहयोग को रणनीतिक दिशा देने के लिए एक व्यापक आर्थिक और समुद्री सुरक्षा साझेदारी का दृष्टिकोण अपनाया है। इससे पहले, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मुइज्यू का राष्ट्रपति भवन में औपचारिक स्वागत किया। इस मौके पर प्रधानमंत्री मोदी भी मौजूद थे।

भारत और मालदीव समुद्री सुरक्षा में सहयोग बढ़ाने पर हुए सहमत

नई दिल्ली(भाषा)। भारत और मालदीव ने सोमवार को नैसर्गिक साझेदार के तौर पर दोनों देशों के लोगों के साथ-साथ हिंद महासागर क्षेत्र के लाभ के लिए समुद्री सुरक्षा में सहयोग बढ़ाने के लिए मिलकर काम करने का संकल्प लिया। प्र धानमंत्रि नरेन्द्र मोदी और मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्यू के बीच यहां द्विपक्षीय

वार्ता के बाद जारी किए गए दृष्टिकोण

दस्तावेज में यह भी कहा गया कि दोनों देश हिंद महासागर क्षेत्र में समान चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। भारत और मालदीव: व्यापक आर्थिक क्षेत्र का जूझतों और आवश्यकताओं के अनुरूप संयुक्त सहयोगी उपाय करने में मालदीव के साथ मिलकर काम करेगा। इसमें कहा गया कि इस पर भी सहमति जताई गई कि भारत की सहायता से उद्युक्त फाल्हू (यूटीएफ) में चल रही मालदीव राष्ट्रिय रक्षा बल (एमएनडीएफ) की बंदरगाह परियोजना एकाथा, एमएनडीएफ की परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देगी और इसके समय पर पूरा होने के लिए पूर्ण समर्थन देने पर सहमति जताई गई।

सरकार प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, आवश्यक सेवाएं मजबूत करने को प्रतिबद्ध

नई दिल्ली (भाषा)। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे. पी. नड्डा ने सोमवार को कहा कि भारत की स्वास्थ्य प्रणाली सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज प्राप्त करने के लिए पूरी सरकार और पूरे समाज के दृष्टिकोण से अन्याती है, जिसमें प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा और आवश्यक सेवाओं को मजबूत करने पर जोर दिया गया है। नड्डा ने कहा, सभी को स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करने की प्रतिबद्धता के अनुरूप, केंद्र सरकार ने दुनिया की सबसे बड़ी सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित स्वास्थ्य आश्वासन योजना, आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री-जन आरोग्य योजना (एबी पीएम-जेव्हाई) शुरू की है। उन्होंने यहां विश्व स्वास्थ्य संगठन के दक्षिणपूर्व एशिया क्षेत्र (एसईएआरओ) के 17वें सत्र के उद्घाटन भाषण में कहा, इस पहल के तहत 12 करोड़ से अधिक परिवार शामिल हैं और प्रत्येक परिवार को सालाना 6,000 अमेरिकी डॉलर का अस्पताल में भर्ती पर होने वाले खर्च का लाभ मिलता है।

यहां जारी एक बयान में कहा गया कि नड्डा ने इस बात पर प्रकाश डाला कि सरकार ने हाल ही में इस योजना का विस्तार 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी नागरिकों के लिए किया है। उन्होंने कहा, इस विस्तार से लगभग 4.5 करोड़ परिवारों को लाभ मिलेगा, जिनमें छह करोड़ बुजुर्ग आबादी शामिल हैं, क्योंकि उन्हें मुफ्त स्वास्थ्य बीमा कवरेज प्रदान किया जाएगा। यह भारत की बढ़ती बुजुर्ग आबादी के लिए

सार्वभौमिक और समावेशी स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) से उत्पन्न बढ़ती सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियों के मद्देनजर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि भारत उच्च खतवाप, मधुमेह और हृदय संबंधी बीमारियों जैसी स्थितियों से निपटने के लिए 2010 से एनसीडी की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम को लागू कर रहा है। बयान में कहा गया है कि इस पहल के कारण प्रारंभिक चरण में निवारक उपायों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए 753 एनसीडी क्लीनिक, 356 डे केयर सेंटर और 6,238 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्थापित किए गए हैं।

नड्डा ने कहा कि डिजिटल स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक प्रकाश स्तंभ देश के रूप में भारत, डिजिटल स्वास्थ्य पर वैश्विक पहल - भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान शुरू की गई डब्ल्यूएचओ-प्रवर्धित नेटवर्क के माध्यम से तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करने आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन, ई-संजीवनी, एकीकृत स्वास्थ्य योजना मंच सक्षम आदि जैसे उपनए डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे को साझा करने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान कोविन डिजिटल मंच की सफलता के बाद, भारत ने सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के लिए ऑनलाइन डिजिटल प्लेटफॉर्म-यूविन की सहायता तैयार की है।

बंगाल के बीरभूम में कोयला खदान में विस्फोट, छह की मौत

कोलकाता (भाषा)। पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले में सोमवार को एक कोयला खदान में विस्फोट हो जाने से छह लोगों की मौत हो गई और कई अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। हालांकि, पश्चिम बंगाल विद्युत विकास निगम लिमिटेड (डब्ल्यूबीपीडीसीएल) ने कहा कि उसकी खदान में विस्फोट के कारण पांच लोगों की मौत हुई है। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि यह घटना सोमवार सुबह करीब साढ़े 10 बजे भटुलिया ब्लॉक की एक कोयला खदान में हुई। उन्होंने कहा, अभी तक हमने चार शव बरामद किए हैं। बचाव अभियान जारी है। डब्ल्यूबीपीडीसीएल के एक अधिकारी ने बताया कि विस्फोट उस समय हुआ जब गंगारामचक और गंगारामचक-भटुलिया कोयला खदानों में विस्फोट करने के लिए डेटोनेटर ले जाा जा रहे थे। घटनास्थल का दौरा करने वाले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता एवं स्थानीय विधायक अनूप साहा ने कहा, कम से कम पांच लोगों की मौत हुई है और तीन अन्य घायल हैं। उनकी हालत गंभीर बताई जा रही है। विस्फोटक सामग्री को पर्याप्त सावधानी बरते बिना ट्रक से उतारा गया था। डब्ल्यूबीपीडीसीएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक पी बी सलीम ने पीटीआई-भाषा से कहा, यह घटना कोयला ब्लॉक के डंप पार्क में हुई। विस्फोट के कारण का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी गई है। विस्फोट में मारे गए लोग खदान का संचालन कर रही एजेंसी के कर्मचारी थे। हम प्रभावित श्रमिकों को सहायता प्रदान कर रहे हैं।

आरजी कर मामले के चलते पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा उत्सव की रौनक फीकी

कोलकाता(भाषा)। पश्चिम बंगाल के सबसे बड़े उत्सव दुर्गा पूजा के इस वर्ष फीका रहने के आसार है, क्योंकि अगस्त में आरजी कर अस्पताल में एक महिला चिकित्सक से हुए बर्बर बलात्कार-हत्या की घटना को लेकर बढ़ते विरोध प्रदर्शनों के तहत उत्सव के बहिष्कार की मांग भी बढ़ रही है, जिससे कोलकता में लोगों के उत्साह पर असर पड़ रहा है। सरकारी आरजी कर मेंडिक्ल कॉलेज एवं अस्पताल में नौ अगस्त को ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक की हत्या की घटना ने पूरे राज्य में भावनात्मक रूप से उथल-पुथल मचा दी है। शक्ति की प्रतीक देवी दुर्गा की पूजा और हकीकत में निरंतर गंभीर खतरों का सामना कर रही महिलाओं के संबंध में दो अलग अलग विरोधाभासों के कारण दुर्गा पूजा उत्सव का उत्साह फीका पड़ गया है। कोलकता इस त्रासदी से जूझ रहा है। यह शहर परंपरा और बदलाव के बीच शक्ति, रक्षा और न्याय की प्रतीक देवी दुर्गा की भक्ति तथा महिलाओं के साथ होने वाली दैनिक हिंसा एवं न्याय की कठोर वास्तविकता के बीच फंसा हुआ है। समाजशास्त्री प्रशांत रॉय ने पीटीआई-भाषा से कहा, ऐसा लगता है कि इस साल की दुर्गा पूजा आरजी कर घटना और विरोध प्रदर्शनों के कारण काफी फीकी रहेगी। कई लोग पूजा में भाग ले सकते हैं लेकिन वे त्योहार मनाने से बचना प्रसन्न करेंगे। कई लोग पीड़िता और उसके परिवार से खुद को जोड़ सकते हैं, यही कारण है कि विरोध प्रदर्शन इतने स्वतःस्फूर्त ढंग से उभरे हैं।

इस घटना से पूरे राज्य में भवानात्मक आक्रोश फैल गया, विशेषकर पूर्वी महानगर में जहां लगभग 3,000 दुर्गा पूजाएं आयोजित की जाती हैं। कई कोलकातावासियों के लिए इस वर्ष की दुर्गा पूजा महज एक त्योहार नहीं रहकर न्याय के लिए जारी संघर्ष का प्रतीक बन गई है, जिससे एक देवी की पूजा के महत्व पर चिंतन की आवश्यकता को बल मिलता है क्योंकि वास्तविक जीवन में देवी की प्रतीक महिलाएं असुरक्षित महसूस करती हैं। सरकारी कॉलेज के एक प्रोफेसर ने कहा, शहर में ऐसे त्योहार कैसे मनाया जा सकता है जब एक तरफ तो देवी के नारीत्व का महिमांडन किया जाता है, जबकि दूसरी ओर वास्तविक जीवन में पीड़ित महिलाओं को लेकर आंखें मूंद ली जाती हैं? इस साल, दुर्गा पूजा उत्सव महिलाओं की सुरक्षा और न्याय के बारे में व्यापक बातचीत का मंच भी हो सकता है। दुर्गा पूजा के दिनों में कोलकाता आमतौर पर पूजा की तैयारियों से गुजरा रहता है, सड़कें पलटनों से सजी रहती हैं, रोशनी की जाती है और हवा त्योहारी व्यंजनों की खुशबू से भरी होती है, लेकिन इस साल एक सन्नाट की ओ अक्सर शहर भर में गुंजते हमें न्याय चाहिए के नारे से कुछ ढेर के लिए ट्यूटा है। सामाजिक-राजनीतिक विश्लेषक मैट्रुल इस्लाम ने कहा, उत्सवों से दूर रहने के इस आह्वान का दुर्गा पूजा के दौरान अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ने की संभावना है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देवी दुर्गा की स्तुति में लिखा गरबा गीत साझा किया

नई दिल्ली (भाषा)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक गरबा गीत साझा किया, जिसे उन्होंने देवी दुर्गा की स्तुति के लिए स्वयं लिखा था। मोदी ने एक्स पर लिखा, मां दुर्गा की भक्ति से जुड़े लोग नवरत्नि के शुभ अवसर पर अलग-अलग तरीकों से यह उत्सव मना रहे हैं। श्रद्धा और आनंद की इसी भावना में आवती कलाय गरबा पेश है जो मैंने उनकी शक्ति और कृपा के लिए उनकी स्तुति के रूप में लिखा है। उनका आशीर्वाद हमेशा हम पर बना रहे। उन्होंने गरबा गीत गाने और इसकी इतनी मधुर प्रस्तुति के लिए पूर्वा मंत्री को धन्यवाद दिया और उन्हें एक प्रतिभाशाली उभरती गायिका बताया। गरबा एक पारंपरिक गुजराती नृत्य है जो विशेष रूप से नवरत्नि उत्सव के दौरान किया जाता है।

उम्र संबंधी समस्याओं की जांच कर रहा हूं, चिंता की कोई बात नहीं - रतन टाटा

नई दिल्ली(भाषा)। उद्योगपति एवं टाटा संस के मानद चेयरमैन रतन टाटा ने सोमवार को कहा कि उनके स्वास्थ्य को लेकर चिंता की कोई बात नहीं है और वह उम्र संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं की जांच करा रहे हैं। मुंबई के एक अस्पताल में भर्ती होने की खबरों को अफवाह करार देते हुए टाटा (86) ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, ए दावे निराधार हैं। उन्होंने कहा, मैं उम्र संबंधी बीमारियों के कारण अभी चिकित्सकीय जांच करा रहा हूं। चिंता की कोई बात नहीं है। मैं सहित हूं। टाटा ने जनता और मीडिया से अनुरोध किया कि वे गलत जानकारी फैलाने से बचें। उन्होंने टाटा संस के चेयरमैन के रूप में मार्च 1991 से दिसंबर 2012 तक टाटा समूह का नेतृत्व किया। उन्होंने कहा, चिंता की कोई बात नहीं है। मैं अच्छे मूड में हूं। उन्होंने लोगों और मीडिया से गलत सूचना फैलाने से बचने का अनुरोध भी किया। कुछ खबरों में दावा किया गया था कि खतवाप में गिरवट के बाद सोमवार की सुबह मोदी को मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल ले जाया गया। अपने पोस्ट में टाटा ने कहा, मुझे अपने स्वास्थ्य के बारे में हाल ही में फैली अफवाहों की जानकारी है और मैं सभी को आश्चस्त करना चाहता हूं कि ए दावे निराधार हैं।

मोदी ने प्रेन कर झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन के स्वास्थ्य वी जानकारी ली

रांची(भाषा)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन को फोन कर उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली। हाल में, झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) को छोड़ कर भाजपा में शामिल हुए सोरेन को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सोरेन को रक्त शर्करा संबंधी समस्याएं आने के बाद शनिवार रात जमशेदपुर के टाटा मेन अस्पताल में भर्ती कराया गया। पूर्व मुख्यमंत्री के एक करीबी सहयोगी ने कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सुबह चंपई सोरेन जी को फोन कर उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। सोरेन को रक्त शर्करा के स्तर में गिरावट आने के चलते चक्कर आने के बाद, शनिवार रात करीब नौ बजे अस्पताल में भर्ती कराया गया। फोन करते के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद देते हुए चंपई सोरेन ने कहा कि वह काफी बेहतर महसूस कर रहे हैं और जल्द ही अस्पताल से छूट्टी मिलने की उम्मीद कर रहे हैं। इस बीच, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और झामुमो नेताओं ने भी पूर्व मुख्यमंत्री के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। मुख्यमंत्री ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, मरंग बुरु (आदिवासियों के सर्वोच्च देवता) से चंपई दा को जल्द स्वास्थ्य लाभ देने की प्रार्थना करता हूं। साथ ही, उनके दीर्घायु जीवन की कामना करता हूं। झामुमो ने कहा, मरंग बुरु से प्रार्थना है कि आप पुन: स्वस्थ होकर मैदान में आइए और दादा (चंपई) किसी भी बात की चिंता, परेशानी को खुद पर हावी नहीं होने दीजिए। कई बार हम किसी बात को लेकर मन में इतना बोझ ले लेते हैं जिसका दुष्प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है। अस्पताल के अधिकारियों ने बताया कि पूर्व मुख्यमंत्री सोरेन की हालत स्थिर है और उसमें सुधार हो रहा है। चंपई सोरेन (67) झामुमो में आनाइर और अपमान होने का आरोप लगाते हुए, अगस्त में भाजपा में शामिल हो गए थे।

राजग ने तेजस्वी के खाली किए गए बंगले से सामान चोरी होने क आरोप लगाया

पटना (भाषा)। बिहार में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने सोमवार को तेजस्वी यादव द्वारा हाल में खाली किए गए बंगले से सामान चोरी होने का आरोप लगाया। यह बंगला तेजस्वी को राज्य का उपमुख्यमंत्री रहने के दौरान आवंटित किया गया था। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने आरोपों पर पलटवार करते हुए कहा कि राजग तेजस्वी यादव और उनके पिता लालू प्रसाद को नौकरी के बदले जमीन घोटाले में दिल्ली की एक अदालत से जमानत मिलने पर अपनी हताशा जाहिर कर रहा है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सरकारी आवास के ठीक बगल में स्थित यह विशाल बंगला अब वर्तमान उपमुख्यमंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता सम्राट चौधरी को आवंटित किया गया है, जो कुछ ही दिनों में इस बंगले में रहने जा सकते हैं। प्रदेश भाजपा मीडिया प्रभारी दानिश इकबाल ने संवाददाताओं से कहा, हम 5, दोरेश लाल मार्ग का निरीक्षण कर रहे हैं, ताकि हमारे नेता के आने से पहले जरूरी काम कराए जा सकें। हम बहुत सारी चीजें गायब देखकर हैरान हैं। जाहिर है, पहले इस बंगले में रहे लोग इन सामान को अपने साथ ले गए। इकबाल ने कहा कि गायब हुई चीजों में आवास में बनाए गए बैडरिमंट कोर्ट की एक महंगी चटाई, एक सोफा सेट, एक एयर कंडीशनर, एक हाइड्रोसैलिक बिस्तर, एक वॉश बेसिन और पानी के कई नल शामिल हैं। उन्होंने कहा कि आवश्यक कार्रवाई के लिए विवरण भवन निर्माण विभाग के साथ साझा किया गया है, जिसके पास मंत्रियों के बंगलों के विशाख का जिम्मा है। जद (यू) के प्रवक्ता नीरज कुमार ने सहयोगी दल भाजपा के आरोप पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, तेजस्वी यादव को बंगला खाली करने में इतने महिने लगत हैं जब रहने के बाद आने में चिंता का विषय है। लेकिन, अगर उन्होंने अपने लोगों को सरकारी संपत्ति लूटने की अनुमति दी है, तो यह उनके चरित्र पर सवाल उठता है। उम्मीद है कि उपमुख्यमंत्री इस मामले को गंभीरता से लेंगे और इसे तार्किक निष्कर्ष तक ले जाएंगे।

पेज 1 का शेष त्योहार...

त्योहार में मिलियन टन रह सकता है। बैंगन, जिकीकंद और शिमला मिर्च जैसी अन्य सब्जियों का उत्पादन भी कम हो सकता है। आलू का उत्पादन भी 5.13 फीसदी घटकर 57.05 मिलियन टन रह सकता है। ये गिरावट दो आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को नियंत्रित करने में चुनौती पेश कर सकती है, जो खाद्य मुद्रास्फ़ीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

झारखंड...

भाजपा ने शनिवार को झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए अपने घोषणापत्र के पांच प्रमुख बिंदु जारी किए, जिसमें महिलाओं को हर महिने 2,100 रुपये की वित्तीय सहायता, युवाओं को पांच लाख नौकरियां, हर घर में 500 रुपये में एलपीजी सिलेंडर और पार्टी के सत्ता में आने पर सभी को लिए आवास का वादा किया गया। सोमवार को दिल्ली में किसान संगठनों के साथ प्रस्तावित बैठक के

बारे में बोलेते हुए उन्होंने कहा, वह हर हफ्ते किसानों और उनके संगठनों से मिलते हैं। वह आज भी उनसे मिल रहे हैं। हम उनसे बात करने के बाद उनके कल्याण के बारे में निर्णय लेते हैं। चौहान ने संविधान को रांची में भाजपा की चुनाव रमितिकी की बैठक में भाग लिया, जहां आगामी विधानसभा चुनावों की रणनीतियों पर चर्चा की गई।

दिवाली...

चार आरती भी शामिल होंगी। मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास वैदिक अनुष्ठानों का नेतृत्व करेंगे, जबकि मंदिर परिसर को स्थानीय रूप से प्राप्त फूलों और पारंपरिक साजवट से सजाया जाएगा, जो भारतीय कारीगरी पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर देगा। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग सरयू नदी के किनारे दीये जलाकर और भगवान राम की अयोध्या वापसी की खुशी को फिर से मनाने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करके उत्सव में योगदान दे रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी दीपोत्सव के दौरान 25 लाख दीये जलाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है,

जिसका उद्देश्य एक नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाना है।हालांकि, जैसे-जैसे शहर दिवाली की तैयारी कर रहा है, अयोध्या रामलीला पहले ही सुर्खियों में आ गई है, जिसने पहले तीन दिनों में ही 41 करोड़ लोगों के ऑनलाइन प्रसारण के साथ देशों के रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। फिल्म अभिनेताओं द्वारा की जाने वाली और दूरदर्शन और कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर लाइव प्रसारित की जाने वाली रामलीला 40 देशों में 26 भाषाओं में उपलब्ध है। इस साल की ऑनलाइन दर्शकों की संख्या पहले ही पिछले साल के 40 करोड़ दर्शकों के रिकॉर्ड को पा破 कर चुकी है और कार्यक्रम के अंत तक इसके 50 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। रामलीला समिति के अध्यक्ष सुभाष मलिक ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि संख्याएं खुद ही सब कुछ बयां करती हैं। हर साल, हम दर्शकों की संख्या में वृद्धि देखते हैं, और इस बार प्रतिक्रिया अभूतपूर्व रही है, मलिक ने कहा। अब तक, 22 करोड़ लोगों ने दूरदर्शन पर इस कार्यक्रम को देखा है, 17 करोड़ ने यूट्यूब पर और 2 करोड़ ने अन्य प्लेटफॉर्मों के माध्यम से। निदेशक शुभम मलिक ने बताया

कि रामलीला का प्रतिदिन शाम 7 बजे से रात 10 बजे तक 5,000 से अधिक यूट्यूब चैनलों और 70 सैटेलाइट चैनलों पर सीधा प्रसारण किया जा रहा है, जो अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका और रूस जैसे देशों के दर्शकों तक पहुंच रहा है। दर्शक हिंदी, तमिल, मलयालम, बंगाली और पंजाबी सहित विभिन्न भाषाओं में रामायण का आनंद ले रहे हैं।विंदु दारा सिंह, राजा मुराद और मनीष पाल जैसे अभिनेता प्रमुख भूमिकाएं निभा रहे हैं, जबकि भाग्य श्री और शोभा जैसी अभिनेत्रियां कार्यक्रम में चार चांद लगा रही हैं। सांसद मनोज तिवारी और रवि किशन भी कलाकरों में शामिल हैं, जो लाइव कार्यक्रम में उत्साह बढ़ाते हैं। पद्य श्री शबरी की भूमिका निभा रही हैं, जो रामलीला न केवल भारत के महाकाव्य से प्रेरणा लेती है, बल्कि शिल्प कौशल और कहानी कहने दोनों में भारत की आत्मनिर्भरता का जश्न भी मनाती है, क्योंकि दुनिया भर के दर्शक भावना राम की विरासत की भय्वता का अनुभव करते हैं।

बिहार ने सरकारी शिक्षकों के लिए नई स्थानांतरण नीति घोषित की

पटना(भाषा)। बिहार सरकार ने सोमवार को राज्य में सरकारी स्कूल शिक्षकों के स्थानांतरण और पदस्थापना के लिए नई नीति की घोषणा की, जिसमें गंभीर बीमारियों से पीड़ित और दिव्यांग शिक्षकों को प्राथमिकता दी जाएगी। शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ने नीति की घोषणा करते हुए कहा कि तबादलों के लिए सभी आवेदन ऑनलाइन ही स्वीकार किए जाएंगे क्विअर ने कहा, नई तबादला नीति राज्य के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के स्थानांतरण और पदस्थापना में एकरूपता लाएगी। इससे न केवल शिक्षकों को रहत मिलेगी बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार भी होगा। नीति में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं वाले शिक्षकों को प्राथमिकता दी गई है। मंत्री ने कहा, गंभीर रूप से बीमार, दिव्यांग, विधवा, तलाकशुदा, अकेले रहने वाले या पति-पत्नी शिक्षक जोड़े वाले शिक्षकों को तबादलों के दौरान प्राथमिकता दी जाएगी। मंत्री ने कहा कि किसी भी विद्यालय में महिला शिक्षकों की संख्या 70 से अधिक नहीं होनी चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि शिक्षकों को उनकी पदस्थापना के हर पांच साल बाद स्थानांतरित किया जाना चाहिए और विभाग उन्हें पदस्थापना के लिए प्राथमिकता देने के लिए 10 विकल्प देगा, जिससे निकटतम उपखंड या जिले में नियुक्ति सुनिश्चित होगी।

बिहार ने सरकारी शिक्षकों के लिए नई स्थानांतरण नीति घोषित की

पटना(भाषा)। बिहार सरकार ने सोमवार को राज्य में सरकारी स्कूल शिक्षकों के स्थानांतरण और पदस्थापना के लिए नई नीति की घोषणा की, जिसमें गंभीर बीमारियों से पीड़ित और दिव्यांग शिक्षकों को प्राथमिकता दी जाएगी। शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ने नीति की घोषणा करते हुए कहा कि तबादलों के लिए सभी आवेदन ऑनलाइन ही स्वीकार किए जाएंगे क्विअर ने कहा, नई तबादला नीति राज्य के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के स्थानांतरण और पदस्थापना में एकरूपता लाएगी। इससे न केवल शिक्षकों को रहत मिलेगी बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार भी होगा। नीति में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं वाले शिक्षकों को प्राथमिकता दी गई है। मंत्री ने कहा, गंभीर रूप से बीमार, दिव्यांग, विधवा, तलाकशुदा, अकेले रहने वाले या पति-पत्नी शिक्षक जोड़े वाले शिक्षकों को तबादलों के दौरान प्राथमिकता दी जाएगी। मंत्री ने कहा कि किसी भी विद्यालय में महिला शिक्षकों की संख्या 70 से अधिक नहीं होनी चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि शिक्षकों को उनकी पदस्थापना के हर पांच साल बाद स्थानांतरित किया जाना चाहिए और विभाग उन्हें पदस्थापना के लिए प्राथमिकता देने के लिए 10 विकल्प देगा, जिससे निकटतम उपखंड या जिले में नियुक्ति सुनिश्चित होगी।

भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने झारखंड चुनाव के लिए रणनीति, उम्मीदवारों के नामों पर चर्चा की

भाषा। नई दिल्ली

झारखंड में आगामी विधानसभा चुनाव के लिए रणनीति और उम्मीदवारों के नामों पर चर्चा करने की खातिर भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने सोमवार को यहां बैठक की। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा के आवास पर हुई बैठक में केंद्रीय मंत्री अमित शाह और शिवाज सिंह चोहान तथा असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा शामिल हुए। चौहान, पार्टी के झारखंड प्रभारी हैं और शर्मा सह-प्रभारी हैं। भाजपा की झारखंड इकाई के अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, राज्यसभा सदस्य समीर उरंव, केंद्रीय मंत्री अननूपमा देवी और राज्य से पार्टी के अन्य नेता भी उपस्थित थे।

बैठक में उन उम्मीदवारों के नामों पर चर्चा हुई जिन्हें पार्टी राज्य विधानसभा चुनाव में उतार सकती है। भाजपा की झारखंड इकाई संभावित उम्मीदवारों की सूची लेकर यहां आई थी, जिसमें प्रत्येक विधानसभा सीट के लिए कम से

कम तीन नाम सुझाए गए हैं। उन्होंने बताया कि बैठक में सहयोगी दलों के साथ पार्टी के सीट बंटवारे के फॉर्मूले पर भी चर्चा हुई। झारखंड में भाजपा, जद (यू) और ऑल झारखंड स्टूडेंट्स युनियन (आसयू) पार्टी के साथ गठबंधन में विधानसभा चुनाव लड़ने वाली है। साथ ही, भाजपा, केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के नेतृत्व वाली लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के साथ भी चुनाव पूर्व गठबंधन करने पर विचार कर सकती है।पासवान ने सोमवार को कहा कि उनकी पार्टी झारखंड विधानसभा चुनाव लड़ना चाहती है और इस बारे में जल्द ही अंतिम निर्णय लिया जाएगा कि वह भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के तहत चुनाव लड़ेगी या फिर अपने बूते चुनाव प्रदान में उतरेगी। लोजपा (रामविलास) के मैदान से यहां उद्योग मंडल फिक्की के एक कार्यक्रम से इतर संवाददाताओं से कहा, मैंने कल केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की।

इजराइल में हमारा के हमले के एक साल, युद्ध जारी

कई कर्कशकों का आयोजन

भाषा | तेल अवीव

इजराइल के इतिहास में सबसे घातक, हमारा के सात अक्टूबर को किए हमले के एक साल पूरे होने पर सोमवार को देशवासी रैली निकाल रहे हैं और शोक समारोह आयोजित कर रहे हैं। इस हमले ने गाजा में युद्ध को जन्म दिया और इजराइलियों को कभी न भूलने वाला घाव दे दिया। एक प्रमुख यहूदी अवकाश वाले दिन सीमा पार से किए गए इस हमले ने इजराइलियों के सुरक्षित होने के भ्रम को तोड़ दिया और नेताओं तथा सेना में उनके विश्वास को हिला कर रख दिया। इस हमले की गूंज एक साल बाद भी सुनाई दे रही है। गाजा में युद्ध आक्रमक हो गया है, इजराइल हिजबुल्ला के खिलाफ एक नया युद्ध लड़ रहा है और ईरान के साथ संघर्ष गहरा रहा है जिससे इस क्षेत्र के और खतरनाक संघर्ष की ओर बढ़ने का खतरा पैदा हो गया है। युद्ध की तबाही झेल रहे गाजा में कोई औपचारिक स्मारक कार्यक्रम की योजना नहीं है। इजराइलियों के सैकड़ों मृतकों, आतंकवादियों के कब्जे में कई बंधकों और उन्हे बचाने के लिए मारे गए या घायल हुए सैनिकों की याद में देशभर

सिंगापुर के भारतीय मूल के पूर्व मंत्री की एक साल कारावास की सजा शुरू

सिंगापुर। सिंगापुर के भारतीय मूल के पूर्व पहिलम मंत्री एस ईश्वरन ने शरावदार के एक मामले ने सोमवार को अपनी एक साल कारावास की सजा शुरू की। उन्होंने अपनी दोषिद्धि को चुनौती नही दी और टेरा से माफ़ी मांगी। ईश्वरन (62) को दो उद्योगपतियों से सात साल की अवधि में करीब 3,13,200 डॉलर के अवैध उधार हसिल करने और न्याय को अवरुद्ध करने केमाले ने भिजेले सातह इह्खुपदिवारे को कारावास की सजा सुनाई गई थी। पूर्व मंत्री ने इससे पहले आज इह्खुबुकर एकरावान ने कस कि वह अदालत उडा सुनाई गई सजा को चुनौती नही देगे। उन्होने 24 सितंबर को अपना गुनाह क्खूल कर लिया था।

सुरक्षा चिंताओं के कारण इमरान के 18 तक मिलने जुलने पर प्रतिबंध लगाया

लाहौर। पाकिस्तान की पंजाब सरकार ने जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को सुरक्षा चिंताओं के कारण 18 अक्टूबर तक उनके परिवार के सदस्यों, वकीलों और पार्टी नेताओं से मिलने पर सोमवार को प्रतिबंध लगा दिया। यह प्रतिबंध खान की पार्टी पाकिस्तान तहरिकए-इस्ताफ (पीटीआई) द्वारा कई शहरो ने सरकार-विरोधी प्रदर्शन किए जाने के बीच लगाया गया है। पीटीआई के संस्थापक खान अगस्त 2023 से कई मामलों में खलविली की अदियाला जेल में बंद है। गुजरनी मोहसिन नवाबी ने पीटीआई पर 15 और 16 अक्टूबर को इस्लामाबाद में होने वाले शघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन को बाधित करने केघरास व आरोप लगाया है और यह सुनिश्चित करने पर जोर दिया है कि ए साभितो जाबम हो। पंजाब सरकार के एक अधिकारी ने बताया, पीटीआई के संस्थापक इमरान खान और उनकी पत्नी इरशाद बेबी को खलविली की अदियाला जेल में अपने परिवार, वकीलों और पार्टी नेताओं से 18 अक्टूबर तक मिलने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

सूजन के उतरी दारफुर में जारी संघर्ष में कम से कम 13 बच्चों की मौत : यूनिसेफ

कहिस। सूजन के उतरी दारफुर में सूझनी सेना और उसके प्रतिद्वंदी अरसेनिक बल के बीच जारी संघर्ष में कम से कम 13 बच्चों की मौत हो गई और चार अन्य घायल हो गए। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) ने यह जानकारी दी। यूनिसेफ ने रविवार को एक बयान में कहा कि बच्चों की उम्र छह से 17 वर्ष के बीच थी। स्थानीय समाचार पत्र सूजन पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, सूझनी सेना के शुक्रवार को उतरी दारफुर की रणधानी अल फरिेश से लगभग 70 किलोमीटर पूर्व में स्थित अल कुत्ता शहर के एक बाजार को निशाना बनाकर हवाई हमले किए। सूजन दखिन समाचार पोर्टल के अनुसार, मेलिट शहर में हुए हवाई हमलों में कम से कम 45 लोगों की जान चली गई और कई अन्य घायल हो गए। अप्रैल 2023 में रणधानी खार्तूम में सूझनी सेना और रेफिड स्पॉर्ट फोर्स के बीच युद्ध शुरू हुआ था और यह पूरे देश में फैल गया है। दारफुर में विदेशी सशस्त्र भीषण संघर्ष देखा गया है। सूजन ने यूनिसेफ के प्रतिनिधि शेरलज एट ने कहा, ‘बच्चों पर ए हमले असह्यवर्ध है। युद्ध या नागरिकसंघर्ष में बच्चों की कोई भूमिका नही लेती है, लेकिन सूजन ने संघर्ष के चलते सबसे ज्यादा नुकसान बच्चों को ही उठाना पड़ रहा है।’



इजराइल के हमलों में 10 दमकल कर्मी मारे गए- लेबनान

बेरुत। लेबनान के दक्षिणी हिस्से में सोमवार को इजराइल के हमलों में कम से कम 10 दमकल कर्मी मारे गए। लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने यह जानकारी दी। मंत्रालय ने बताया कि कई लोग माल्बे ने दबे हुए है और गुप्तकसत्रा बद्द सक्ती है। मंत्रालय ने कस कि अहिनरामन कर्मी बाधित कस्बे में एक नगरपालिका भवन में थे, जल उस समय हमला हुआ, जब वे बचाव अभियान शुरू करने की तैयारी कर रहे थे।

में समारोहों, कब्रिस्तानों और स्मारक स्थलों पर लोगों की भीड़ उमड़ने की उम्मीद है। एक साल पहले आज ही के दिन सुबह ठीक साढ़े छह बजे जब हमारा ने हमला शुरू किया था तो नोवा संगीत महोत्सव में मारे गए

लोगों के परिवारजन उस स्थल पर एकत्रित हुए जहां करीब 400 लोगों को गोली मार दी गई थी और कई अन्य लोगों को बंधक बना लिया गया था। उसी वक्त गाजा में अब भी आतंकवादियों के चंगुल में फंसे लोगों

यूक्रेन ने रूस के तेल टर्मिनल को बनाया निशाना

भाषा | कोव

यूक्रेन की सेना ने दावा किया कि उसने क्रीमिया में रूस के अहम तेल टर्मिनल को निशाना बनाया है जहां से रूसी सेना को युद्ध में तेल की आपूर्ति की जाती है। वहाँ, यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेस्की ने कहा कि युद्ध अहम चरण में प्रवेश कर गया है। यूक्रेन के जनरल स्टाफ ने सोशल मीडिया के माध्यम से बताया कि रूस की सैन्य और आर्थिक संभावनाओं पर चोट पहुंचाने के इरादे से उसके कब्जे वाले क्रीमिया प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थित फियोदोसिया तेल टर्मिनल पर हमला किया गया क्योंकि वहां से रूसी सेना को युद्ध के लिए तेल की आपूर्ति की जा रही थी। फियोदोसिया में तैनात रूसी अधिकारियों ने बताया कि काला सागर के किनारे स्थित टर्मिनल में सोमवार सुबह आग लग गई लेकिन उन्होंने इसके कारणों का खुलासा नहीं किया। यूक्रेन तीसरे साल में प्रवेश कर गए युद्ध में रूस के कब्जे वाले अहम इलाकों को निशाना बना

जेलेस्की ने कहा- युद्ध अपने अहम चरण में

रहा है। उसने लंबी दूरी के ड्रोन विकसित किए हैं, जिनसे तेल डिपो और तेल शोधकों के साथ-साथ शस्त्रागारों पर भी हमला किया गया है जेलेस्की ने रविवार देर रात कहा कि युद्ध अहम चरण में प्रवेश कर गया है क्योंकि यूक्रेन की सेना पूर्व में बड़ी रूसी सेनाओं को रोकने के लिए कड़ा संघर्ष कर रही है, जबकि रूस के कर्सक सीमावर्ती क्षेत्र पर भी अपनी स्थिति पनबूत बना रखी है जिस पर उसने दो महीने पहले कब्जा कर लिया था। उन्होंने एक वीडियो संदेश में कहा, यूक्रेन रूस पर इस तरह दबाव डालना चाहिए जिससे रूस को यह पहरास हो जाए कि युद्ध से उन्हें कुछ हासिल नहीं होगा। जेलेस्की ने कहा, हम रूस पर और अधिक दबाव डालते रहेंगे – क्योंकि केवल ताकत के माध्यम से ही हम शांति को करीब ला सकते हैं। इस बीच, यूक्रेन की वायु सेना ने दावा

माइक्रो आरएनए की खोज के लिए दो अमेरिकी वैज्ञानिकों को मिलेगा नोबेल पुरस्कार

भाषा | स्टर्कहोम

माइक्रो आरएनए की खोज के लिए अमेरिकी वैज्ञानिकों विक्टर एंजोस और गैरी रुबकुन को चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा सोमवार को की गई। नोबेल असेंबली ने कहा कि इन वैज्ञानिकों की खोज जीवों के विकास और कार्यप्रणाली के लिए मौलिक रूप से महत्वपूर्ण साबित हो रही है। चिकित्सा क्षेत्र में अब तक कुल 227 विजेताओं को नोबेल पुरस्कार दिया गया है। जिनमें से केवल 13 महिलाओं को यह पुरस्कार मिला है। यह पुरस्कार जीतने वाले को एक करोड़ 10



लाख स्वीडिश क्रोना (करीब 10 लाख अमेरिकी डॉलर) दिए जाते हैं। यह पुरस्कार स्वीडन के वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल के नाम पर दिया जाता है। पुरस्कार विजेताओं को नोबेल की पुण्यतिथि 10 दिसंबर को आयोजित समारोह में पुरस्कार प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। चिकित्सा क्षेत्र के अलावा मंगलवार को भौतिकी, बुधवार को रसायन विज्ञान और बुधस्पर्तिक को साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार विजेताओं की घोषणा की जाएगी। शांति के लिए नोबेल पुरस्कार की घोषणा शुक्रवार को और अर्थशास्त्र के लिए यह घोषणा 14 अक्टूबर को की जाएगी।

कुत्ता पालना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक

भाषा | मेलबर्न

ऑस्ट्रेलिया के लोगों को कुत्ते बहुत पसंद हैं। हमारे पास दुनिया में पालतू जानवरों के स्वामित्व की दर सबसे अधिक है और हर दो घरों में से एक के पास कम से कम एक कुत्ता है। लेकिन क्या वे हमारे स्वास्थ्य के लिए ठीक हैं? एक साथी के तौर पर कुत्ता पहली पसंद होता है लेकिन मानसिक स्वास्थ्य का क्या? कई लोग जानते हैं कि कुत्ता पालने से हम स्वस्थ महसूस करते हैं – और उन्हें अपने शयनकक्ष में सोने देते हैं। कुत्तों के साथ अपने घरों को साझा करना हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए क्या मायने रखता है? क्या कुत्ता पालने से कोई शारीरिक स्वास्थ्य लाभ होता है? कुत्ता पालने से कालांतर में मृत्यु

स्वास्थ्य जोखिम : हालांकि, कुत्ते हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जोखिम भी पैदा कर सकते हैं। पालतू पशु मालिकों के लिए सबसे आम स्वास्थ्य समस्याओं में से एक एलर्जी है। कुत्ते की लार, मूत्र और स्त्री (उनके द्वारा छोड़ी गई त्वचा कोशिकाएं) एलर्जी को बढ़ा सकती है जिसके परिणामस्वरूप आंखों में खुजली और नाकबहने से लेकर सांस लेने में कठिनाई तक कई लक्षण दिखाई दे सकते हैं। लल ही के एक मेटा-रिव्लेक्षण ने लगभग 20 लाख बच्चों के आठवें व्यक्ति किए गए। निष्कर्षों से पता चलता है कि बचपन में कुत्ते के संपर्क में आने से अस्थमा होने का खतरा बढ़ सकता है (हालांकि उठाने नहीं मिलना बिल्कुल पालने से होता है)। कुत्ता पालने से आपसे कटने और खरोंच लगने का खतरा भी हो सकता है, जिससे संक्रमण हो सकता है और कर्णजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोगों के लिए खतरा पैदा कर सकता है। मानसिक स्वास्थ्य का क्या? कई लोग जानते हैं कि कुत्ता रखने के वैज्ञानिक प्रारंभिक प्रारंभ ही नहीं है। साथी के रूप में कुत्ते पिला, अक्सर और तनाव के लक्षणों को कम करने में महत्वपूर्ण मानवनामकसंयतता प्रदान कर सकते हैं। उनकी उपस्थिति मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करने वाले व्यक्तियों को आराम प्रदान कर सकती है। महत्वपूर्ण बात यह है किजो जानवर हमारे घरे में रहे हैं, वे गन्धुघ के स्वास्थ्य के लिए हिकॉ उपकरण नहीं है। मालिक और कुत्ते परस्पर लागूनिवित हो सकते हैं जब दोनों का क्याणा और खुशहाली बनी रहै।

का जोखिम कम होता है। 2019 में, एक व्यवस्थित समीक्षा में 70 वर्षों में प्रकाशित साक्ष्य एकत्र किए गए, जिसमें लगभग 40 लाख चिकित्सा मामले शामिल थे। इसमें पाया गया

कि जिन लोगों के पास कुत्ता था, उनके किसी भी कारण से मरने का जोखिम उन लोगों की तुलना में 24 प्रतिशत कम था, जिनके पास कुत्ता नहीं था। कुत्ता पालने का संबंध

मध्य तेल अवीव में सायरन बज उठे : इजराइली सेना

रीम (इजराइल)। इजराइल पर सात अक्टूबर को किए गए हमले के सोमवार को एक साल पूरे होने के बीच हमारा द्वारा गाजा से दारे गए रॉकेट के कारण मध्य तेल अवीव में सायरन बज उठे। इजराइली सेना ने यह जानकारी दी इस दौरान किसी प्रकार के जान-माल के नुकसान की कोई सूचना फिलहाल नहीं है। ए रॉकेट ऐसे समय में दारे गए हैं जब इजराइल के इतिहास में हुए सबसे घातक हमले के एक साल पूरे होने पर सोमवार को देशवासियों ने रैलियों निकालीं और शोक समारोह आयोजित किए। इस हमले ने गाजा में युद्ध को जन्म दिया और इजराइलियों को कभी न भूलने वाला घाव दे दिया।हमारा से सोमवार को फिर से रॉकेट दागकर यह दिखाया कि वह अब भी लड़ाई लड़ रहा है। उसने तेल अवीव और गाजा सीमा के निकट रॉकेट दागे, जिससे हवाई हमले के सायरन बजने लगे।

ट्यूनीशिया के राष्ट्रपति केस सईद के दूसरी बार चुनाव जीतने की संभावना

ट्यूनीशिया के राष्ट्रपति केस सईद के दूसरी बार चुनाव जीतने की संभावना

स्विट्जरलैंड में सुसाइड बैम्बूल से महिला की मौत के बाद इसका इस्तेमाल निलंबित

बर्न। स्विट्जरलैंड में तथार्थिक सुसाइड बैम्बूल के प्रयोगक समूहों ने रविवार को कस कि उन्होंने देश में इसके पहले इस्तेमाल की अपाधिक जांच पूरी लेने तक इसका इस्तेमाल करने के लिए आदेन लेने की प्रविद्या निलंबित कर दी है। इस सुसाइड बैम्बूल का इस्तेमाल करने के लिए पिछले मईने 370 से अधिक आदेन मिले थे। स्विट्जरलैंड केसंगनल द लास्ट रिजॉर्ट के अध्यक्ष पोलिशन विरेट को इस मामले में गुफ्तका चलाने से पूर्व हिस्सत में लिया गया है। विरेट ने कस कि इस समूह और इससे संबद्ध एक्टिव इंटरेनेशनल की स्थापना करीब 25 साल पहले ऑस्ट्रेलिया में हुई थी। एक्टिव इंटरेनेशनल ने उस सुसाइड बैम्बूल - सार्वों की विकसित प्रविद्या है। स्विट्जरलैंड की पुलिस ने मध्य पश्चिमी अमेरिख की 64 वर्षीय एक उड़ात महिला की मौत के बाद विरेट तथा कई अन्य लोगों को हिस्सत में लिया है। यह अमेरिखी महिला सार्वों के नाम से पहचाने जाने वाले इस उपकरण का इस्तेमाल करने वाली पहली महिला बनी।

नेटा ने जारी किए फेसिबल ट्रेंड्स

नबोबल। त्योहारों के उत्साह के बीच नेटा ने फेसिबल ट्रेंड्स के बारे में अपने सर्वे के परिणाम जारी किए हैं। यह सर्वे इतिथर में नेटा द्वारा कारया गया था और कंसुमर इन्साइट प्लेटफॉर्म जडब्यूआई द्वारा किया गया था। जिसका उद्देश्य इस साल फेसिबल शॉपिंग के ट्रेंड्स को समझना था। अरुण श्रीनिवास डायरेक्टर एंड हेड एस बिजनेस इंडिया एट नेटा ने कहा कि इस अध्ययन में सामने आया है कि एआईए क्लिक कॉमर्स, माईक्रो इन्फ्लुएंसर, एक क्षेत्रीय भाषा के कंटेंट भारत में फेसिबल शॉपिंग के ट्रेंड्स में बड़ा बदलाव लाकर त्योहारों की खरीदारी में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। खासकर हमारे प्लेटफॉर्म पर इन त्योहारों पर एआईपीवई एड फ्रॉंट से लेकर बिजनेस मैनेजिंग और टीएस तक सभी मुख्य उत्पादों को आनाए जाने में काफी वृद्धि हुई है। अध्ययन में एक विशेष ट्रेंड यह देखने को मिला कि ई-कॉमर्स बढ़ रहा है और क्लिक कॉमर्स का विस्तार नई श्रेणियों में हो रहा है। हर 4 इलेक्ट्रॉनिक शॉपर्स में से एक और हर 3 क्लिकले केयर शॉपर्स में से एक क्लिक कॉमर्स के माध्यम से खरीदारी कर रहे हैं। इस सर्वे में यह भी सामने आया कि इन त्योहारों पर खरीदारी करने वाले आधे से ज्यादा शॉपर्स ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर ज्यादा खरीदारी करना चाहते हैं। इस सर्वे के सुताबिक 10,000 से 100,000 फैंमोअस और माईक्रो इन्फ्लुएंसर्स त्योहारों की खरीदारी को उठाना ही प्रभावित करते हैं, गितना 100,000 से दस लाख फैंमोअर्स वाले मैक्रो इन्फ्लुएंसर।

फ्लोरिडा के टाम्पा खाड़ी क्षेत्र की ओर बढ़ने के साथ

और मजबूत हुआ तूफान मिल्टन

फ्लोरिडा। अमेरिख के फ्लोरिडा में स्थित टाम्पा खाड़ी क्षेत्र की ओर बढ़ने केसाथ तूफान मिल्टन रविवार को और मजबूत हो गया। तूफान के महेजनर फ्लोरिडा में प्रशासन ने तदवर्ती श्रेजो को खाली करने केआदेश जारी किए हैं, जो अब भी हेलन तूफान केबाद उसकेपभाव से गुज़ रहे हैं। मौसम विज्ञान अधिकारियों ने कस कि तूफान केपूर्वगुनाम मॉडस ने काफी मिनताता है, लेकिन इसके सबसे संभावित मार्ग यह दर्शाते है कि मिल्टन बुधवार को टाम्पा खाड़ी क्षेत्र में दक्कन दे सकता है और यह मध्य फ्लोरिडा से अटलांटिक महासागर में आगे बढ़ेगा। उन्होंने बताया कि हालांकि दक्षिण-पूर्व के उन अन्य राज्यो को मिल्टन के प्रकोप से बचे रहने की संभावना है, जहां हेलन तूफान ने तबाही मचाई थी। हेलन ने फ्लोरिडा से लेकर अपालाचियन पर्वतीय श्रेजो तक विनाशकारी क्षति पहुंचाई। इस तूफान के कारण मरने वालों की संख्या रविवार को बढ़कर 130 हो गई थी। फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस ने रविवार को कस कि यह देखना बाकी है किमिनल कस दक्कन देगा, लेकिन यह स्पष्ट है कि फ्लोरिडा पर इसका बहुत बुरा असर पड़ने वाला है। नेशनल हरेडिज सेटर ने कस कि रविवार दोपहर को तूफान मिल्टन का केंद्र टाम्पा से लगभग 1,310 किलोमीटर पश्चिम-दक्षिणपश्चिम में था और अधिकतम 130 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पावर से निक्षरत तेज हवा चल रही थी।

एमरेजॉन पूरी दुनिया में सुरक्षा व कठ्याण पर जार देगा

यूके। एमेजॉन ने डिलीवरी एक्सोसिएट्स की बेहतरी पर जोर देते हुए डाल 4242 के साथ साझेदारी कर एम्बुलेंस सेवाओं को शुरू किया है। इसका उद्देश्य सुरक्षा के उपायों को बढ़ाना और डिलीवरी एक्सोसिएट्स के स्वास्थ्य को खत्मिमत देना है। इतना ही नहीं एमेजॉन ने बड़े मामले में एक स्वास्थ्य अभियान भी शुरू किया है, जो लगभग 6 महीनों तक चलेगा। इससे उनके डिलीवरी सफ़ाई कारगर और उनके डिलीवरी एक्सोसिएट्स साथ ही आई वैश्व रोक्येस और पलेस्य कार्यक्रमों के 50,000 से भी ज्यादा एक्सोसिएट्स को लाभ मिलेगा। इस अभियान के तहत डिलीवरी एक्सोसिएट्स को मुफ्त स्वास्थ्य जांच सुविधा मिलेगी जिसमें आंखों और दांतों की जांच शामिल ह, साथ ही उनमें मौजूदा स्वास्थ्य और दुर्घटना कवरेज के बारे में जागरूकता बढ़ाने का भी काम किया जाएगा, जिसमें महिला डिलीवरी एक्सोसिएट्स के लिए मातृत्व कवर को भी शामिल किया गया है। इन मजबूत प्रयासों से एमेजॉन की यह प्रतिबद्धता साफ़फ़लकारी है कि वह अपने डिलीवरी एक्सोसिएट्स को एक सुरक्षित और सहायक माहौल देना चाहते हैं। इस पलन पर टिप्पणी करते हुए र्ज़ कठ्याण थंकर पंडे, वाइस प्रीसिडेंट एमेजॉन लॉजिस्टिक्स भारत ने बताया कि एमेजॉन की फ्रंत्लाइन डिलीवरी कारग बल हमारे ऑपरेशंस का बहुत जरूरी अंग है और इसी लिए उनकी सुरक्षा और उनका कठ्याण हमेशा हमारे लिए सबसे आगे रहेगा।

हिंदू राजनीतिक समूह ने हैरिस के पाकिस्तानी-अमेरिखी नागरिक से संबंधों को लेकर सवाल उठाए

वाशिंगटन। अमेरिख में एक हिंदू राजनीतिक समूह ने डेमोक्रेटिक पार्टी की संरक्षति पर कई उन्मीदवार कमला हैरिस के यूएस कर्मीशन फॉर इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम (यूसएसआईआरएफ) के पाकिस्तानी-अमेरिखी सदस्य से संबंधों पर सवाल उठाए और कर्मिरी नैसे संदेदगीशल मुद्दे पर उनकेप्रशासन केरख को लेकर विता व्यवत की है। हिंदूज़ फॉर अमेरिख कर्ष्ट के संस्थापक और अध्यक्ष उत्तम सुदून ने यूएससीआईआरएफ की पिछले सपनाह जारी एक रिपोर्ट के बाद यह टिप्पणी की है जिससे आरोप लगाया गया है कि भारत से पाकिि संरक्षता की स्थितियां 2024 में भी बदतर रही, खासतौर से देश के आम चुनावों से पहले और तुरंत बाद केमहीनों में। भारत ने इस रिपोर्ट को दूनविनापूर्ण बताया है। पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप केसमर्थकसदूभा ने एएस पर एक वीडियो पोस्ट किया जिसने उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को उनके पवार अभियान का समर्थन करने के लिए पाकिस्तानी अमेरिखी और अब यूएससीआईआरएफ के असुरत संस्थापक मल्लिक मल्लूट की तारीफ करते हुए देखा गया। मल्लूट को पाकिस्तान की सरकार तथा भारत के अलोचकमाने जाने वाले नेताओं से गहरे संबंधों के लिए पहचाना जाता है। सुदून ने एक अन्य पोस्ट में कहा, इस साल नवंबर में कमला हैरिस पाकिस्तान में पसंदीदा उन्मीदवार है।

कराची हवाई अड्डे के पास विस्फोट में दो चीनी नागरिकों की मौत

भाषा | कराची

पाकिस्तान में कराची हवाई अड्डे के बाहर चीनी नागरिकों के कारफिले को निशाना बनाकर रविवार को किए गए बम विस्फोट की जिम्मेदारी एक पाकिस्तानी अलगाववादी संगठन ने ली है। अधिकारियों और अलगाववादी समूह ने यह जानकारी दी। इस हमले में चीन के दो कर्मचारियों की मौत हो गई और कम से कम आठ अन्य लोग घायल हो गए। दक्षिण बंदरगाह शहर कराची में हवाई अड्डे के बाहर यह हमला बलोच लिबरेशन आर्मी में हुआ। यह हमला ऐसे समय में हुआ है जब पाकिस्तान को एक सप्ताह बाद शंघाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करनी है। शंघाई सहयोग संगठन एक सुरक्षा

अलगाववादी संगठन ने ली जिम्मेदारी

समूह है जिसको स्थापना चीन और रूस ने पश्चिमी गठबंधनों का मुकाबला करने के लिए की थी। शुरुआत में पाकिस्तानी प्राधिकारियों ने विरोधाभासी जानकारी दी थी तथा संकेत दिया था कि विस्फोट संभवतः किसी तेल टैंकर में हुआ, लेकिन बाद में पुलिस ने पुष्टि की कि यह एक बम हमला था। पाकिस्तान समाचार चैनलों पर प्रसारित हमले के वीडियो में कारों से आग की लपटें और घटनास्थल से धुंएं का गुबार उड़ता दिखाई दे रहा है। सैन्य बलों और पुलिस ने घटनास्थल को चारों ओर से घेर लिया गया है। आतंकवाद-रोधी

इंग्लैंड का सेमीफाइनल का दावा मजबूत

●महिला विश्व कप : दक्षिण अफ्रीक को सात विकेट से हराया

भाषा। शारजाह

सोफी एक लेस्टन की शानदार गेंदबाजी (15 रन पर दो विकेट) के बाद नैटली सिवर ब्रंट (नाबाद 48) और सलामी बल्लेबाज डैनियल वायट (43) के बीच तीसरे विकेट के लिए 55 गेंद में 64 रन की साझेदारी से इंग्लैंड ने महिला टी20 विश्व कप के ग्रुप बी के अहम मैच में सोमवार को यहां दक्षिण अफ्रीका को सात विकेट से शिकस्त देकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की।अपने पहले मैच में बांग्लादेश को हराने वाली इंग्लैंड की टीम ने इस जीत के साथ ही सेमीफाइनल के लिए अपना दावा मजबूत किया।दक्षिण अफ्रीका को छह विकेट पर 124 रन पर रोकने के बाद इंग्लैंड ने चार गेंद शेष रहते तीन विकेट पर लक्ष्य हासिल कर लिया। सिवर ब्रंट ने 36 गेंद में नाबाद 48 रन की आक्रामक पारी में छह चौके



लगाकर दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजों को हावी नहीं होने दिया। उन्हें वायट का अच्छा साथ मिला जिन्होंने 43 गेंद की पारी में चार चौके लगाए।दक्षिण अफ्रीका के लिए मरीजान कैप, एन. मलाबा और नडीन डी क्लर्क ने एक-एक विकेट लिए। कैप ने इससे पहले बल्ले से भी 17 गेंद में 26 रन का योगदान दिया। कप्तान लारा वुलफार्ट ने 39 गेंद में 42 जबकि एनरी डर्कसन ने 11 गेंद में नाबाद 20 रन बनाए।इंग्लैंड की टीम की पिछले मैच की तरह इस मुकाबले में भी चार स्पिनरों के साथ मैदान में उतरने की योजना कारगर रही। प्लेयर ऑफ द मैच एकलेस्टन के दो विकेट के

अलावा लिसी स्मिथ, शार्ली डीन और सारा ग्लेन को एक-एक सफलता मिली।लक्ष्य का पीछा करते हुए इंग्लैंड के बल्लेबाजों को भी शुरुआती ओवरों रन बनाने में परेशानी का सामना करना पड़ा। माइया बूशे ने काप का पहला ओवर मेडन खेलने के बाद इस गेंदबाज के दूसरे ओवर में चौका लगाया। दूसरे छोर से डैनियन वायट ने अयाबोंगा खाका के खिलाफ चौका जड़ा। काप ने पारी के पांचवें ओवर में अपना दूसरा मेडन डालते हुए बूशेरो को पगबाधा कर उनकी 20 गेंद में आठ रन की धीमी पारी को खत्म किया। एलिस कैप्सी ने क्रीज पर आते ही क्लेई ट्राइऑन के

खिलाफ छठे ओवर में दो चौके जड़कर दबाव को कम किया। पावर प्ले में इंग्लैंड ने एक विकेट पर 28 रन बना लिए थे। उन्होंने इस गेंदबाज का आठवें ओवर में भी चौके से स्वागत किया। डी क्लर्क ने अगले ओवर में अपनी गेंद पर शानदार कैच लपककर कैप्सी को 16 गेंद में 19 रन की पारी को खत्म किया। नैट सिवर-ब्रंट ने आयाबोंगा खाका के खिलाफ बैकवर्ड प्वाइंट की बाई ओर से शानदार चौका लगाकर आत्मविश्वास दिखाया। उन्होंने दूसरे छोर से वायट का अच्छा साथ मिला। जिन्होंने 13वें ओवर में सुने लुस के खिलाफ चौका जड़ा तो वाई सिवर-ब्रंट ने शुरुआती तीन ओवर में पांच रन देने वाली काप के खिलाफ दो चौके लगाकर जरूरी रन गति को छह के करीब कर दिया। वायट 18 ओवर में मलाबा के खिलाफ चौका लगाकर मैच को खत्म करने की जल्दबाजी दिखाने की कोशिश में स्टंप हो गई लेकिन दूसरे छोर से सिवर-ब्रंट ने डी क्लार्क और अयाबोंगा खाका के खिलाफ चौके के साथ टीम की जीत पक्की कर दी।

दूसरे युवा टेस्ट में भारत अंडर-19 टीम बड़े स्कोर की ओर

ऑस्ट्रेलिया के शुरुआती दिन पहली पारी में पांच विकेट पर 316 रन बनाए

भाषा। चेन्नई

नित्य पंड्या के 94 रन की बढ़ोलत भारतीय अंडर-19 टीम ने सोमवार को यहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे युवा टेस्ट के शुरुआती दिन पहली पारी में पांच विकेट पर 316 रन बनाकर अच्छी शुरुआत की। पंड्या सोमवार को अर्धशतक जड़ने वाले भारत के चार खिलाड़ियों में शामिल रहे। वह छह रन से शतक से चूक गए। पंड्या ने 135 गेंद की अपनक पारी में 12 चौके मारे। पंड्या के अलावा केपी कार्तिकेय (71), कप्तान सोहम पटवर्धन (नाबाद 61) और निखिल कुमार (61) ने भी अर्धशतक जड़े। दिन का खेल खत्म होने पर हर्षवंश पंगालिया सात रन बनाकर कप्तान सोहम का साथ निभा रहे थे।भारत की



शुरुआत अच्छी नहीं रही। मेजबान टीम ने दूसरे ओवर में ही वैभव सूर्यवंशी (03) का विकेट गंवा दिया जिन्होंने हेरी होएक्स्टु (29 रन पर दो विकेट) की गेंद पर विकेटकीपर

गोवा ने सीनियर महिला राष्ट्रीय फुटबॉल में हिमाचल को 7-0 से रौंदा

पलवच्छ (चेरल)। गोवा ने 29 वीं सीनियर महिला राष्ट्रीय फुटबॉल चैम्पियनशिप ने सोमवार को यह ग्रुप ए मैच में हिमाचल प्रदेश को 7-0 से हराकर लगातार दूसरी जीत हासिल की। गोवा ने म्याचआर से पहले 5-0 की बढ़त बना ली। टीम केकेलिए स्ट्राइकर पर्ल फ्रान्डिस ने तीन गोल किए जबकिएनिएला बेट्टो, पुषा पक्ष, सुषिमत गांधव और स्पेलेन मर्शिया फ्रान्डिस भी गोल करने वाले खिलाड़ियों थे शामिल रहे।

लेवांडोव्स्की की हैट्रिक से बर्लिनोना शीर्ष पर पहुंचा

मैड्रिड। रॉबर्ट लेवांडोव्स्की ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए शीवार को यह खेले गए मैच में 25 निमिनट के अंतराल में हैट्रिक बनाई, जिससे बार्सिलोना अलासेस को 3-0 से हराकर स्पेनिश लीग फुटबॉल टूर्नामेंट ला लिगा में अंतरराष्ट्रीय टैक से पहले शीर्ष पर पहुंच गया। लेवांडोव्स्की ने सातवे, 22वे और 32वें निमिनट में गोल करकेलोगो ने नौ गोलों में आपने गोल की संख्या 10 पर पहुंचा दी। वह अभी तकवर्तमान सत्र में सभी प्रतियोगिताओ में 11 गोल में 12 गोल कर चुकेहैं। उन्होंने अपने पिछले पांच मैचों में आठ गोल किए हैं। पीलेट के स्ट्राइकर ने लगातार को चैम्पियंस लीग में बार्सिलोना की यंग बॉयज पर 5-0 से जीत में भी दो गोल किए हैं।

चैंपियंस ट्रॉफी का आयोजन पाकिस्तान में होने का भरोसा लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीबीसी) के अध्यक्ष मोहसिन नक्वी ने सोमवार को भरोसा जताया कि आईसीसी पैरिसमंत्रियों का आयोजन देश में होगा और फिर प्रिद्विदी भारत सहित सभी टीमों को टूर्नामेंट में हिस्सा लेगी। पैरिसमंत्रियों 2025 के 19 फरवरी को शुरू लेने का कार्यक्रम है जबकि इसके फाइनल भी लार्ड से खेला जाना है। आयोजन स्थल के स्प में लाहौर, कराची और शरवापीडी को चुना गया है।दोनों देशों के बीच तनावपूर्ण राजनीतिक हिस्तों के कारण भारत ने जुलाई 2008 केसमें से अपनी टीम को पाकिस्तान नहीं भेजा है।

त्रिवेणी कॉन्टिनेंटल किंग्स ने मुंबा मास्टर्स को हराया

लंदन। मौजूदा चैंपियन त्रिवेणी कॉन्टिनेंटल किंग्स ने टैमनरुदिया ग्लोबल शतरंज लीग के पांचवें दिन सोमवार को यह शुरुआती मैच में अपोजिट मुंबा मास्टर्स पर 10-8 से जीत हासिल की।ऑस्ट्रेलिया फिरोजा ने अपना शानदार पॉर्म जारी रखते हुए टूर्नामेंट में पांचवी जीत हासिल की।दोनों टीमों के पहले मुकबले में कॉन्टिनेंटल किंग्स ने सफेद मोहरी से खेलते हुए फिरोजा, डेई ई और वेलेटीना गुग्निना की जीत के साथ मुंबा को 12-3 से हराया।। इस मैच में मुंबा मास्टर्स केपास सफेद मोहरी से खेलने का मौक था।

समर्थ, प्रतीकफेनेस्टा ओपन राष्ट्रीय टैनिंस के दूसरे दौर में पहुंचे

नई दिल्ली। मन्सराष्ट्र के समर्थ साहिता और शीर्ष वरीय प्रतीक रथोराना सोमवार को यह 29वीं फेनेस्टा ओपन राष्ट्रीय टैनिंस चैंपियनशिप में आपने-आपने मैच जीतकर लड़कों के अंडर-16 वर्ग के दूसरे दौर में पहुंच गए। तीसरी वरीयता प्राप्त समर्थ ने पहले दौर के मैच में परजय सिवाव को 6-2, 6-2 से हराया। उनका अगला मुकबला मन्सराष्ट्र के नील केसवट से होगा, जिसनेले डिस्टो बाबू (कर्नाटक) को इसी स्वरूप से हराया। प्रतीक ने वडीगढ़ केरिंशव सरोस के खिलाफ 6-0, 6-4 से मुकबला जीता। हरियाणा के आदित्य मोर ने उत्तर प्रदेश के वंशराज जलोटा को 6-2, 6-1 से हराकर दूसरे दौर में प्रवेश किया।

गेंद की गति हमेशा मेरे दिमाग में रहती है : मयंक

●लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निरंतरता जरूरी

भाषा। ग्वालियर

बांग्लादेश के खिलाफ तीन मैचों की श्रृंखला के शुरुआती टी 20 अंतरराष्ट्रीय में यादगार पदार्पण करने वाले तेज गेंदबाज मयंक यादव ने कहा कि तेज गति ने उन्हें हमेशा प्रभावित किया है लेकिन वह इस बात को जानते हैं कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में फिटनेस संबंधी उतार-चढ़ाव के बीच वह सिर्फ निरंतरता से ही अपने करियर को आगे बढ़ा सकते हैं। इस साल आईपीएल की दस सबसे तेज गेंद (सभी 150 किलोमीटर प्रति घंटा से अधिक) फेंकने वाले इस 22 साल के गेंदबाज ने अपनी गति से बांग्लादेश के बल्लेबाजों को भी



परेशान किया। उनका पहला ओवर मेडन रहा। उन्होंने अपने चार ओवर के कोटों में 14 डॉट गेंद डाली और 21 रन देकर एक विकेट हासिल किया। मयंक ने अपने पदार्पण के बाद मैच के प्रसाकत जियो सिनेमा से कहा, मैं उत्साहित था लेकिन ईमानदारी से कहू तो मैं थोड़ा नर्वस भी था क्योंकि मैं चोट से उबरने कर लगभग तीन-चार महीने बाद वापसी कर रहा था। मुझे प्रतिस्पर्धी क्रिकेट खेलने के ज्यादा मौके नहीं मिले थे और फिर अचानक

मयंक और नीतीश ने कहा, शांतचित्त कप्तान है सूर्यकुमार, जो खिलाड़ियों को पूरी आजादी देते हैं

ग्वालियर। मयंकयादव और नितीश कुमार डेढ़ी बांग्लादेश के खिलाफ पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में भारत के लिए पदार्पण करने से पहले योज नर्सव थे लेकिन उन्होंने कहा कि कप्तान सूर्यकुमार यादव ने लगातार उनका हैसला बढ़ाया जिससे उन्हें बात बने रहने में मदद मिली। मयंक 22 और नीतीश 21 साल के है और उन्होंने अपने पहले अंतरराष्ट्रीय मैच में अपने कैप्टल का प्रभाव छोड़ा। तेज गेंदबाज मयंक ने इस साल आईपीएल में अपनी रणनीति से क्रिकेट जगत का रजान खींचा था लेकिन षेच भी मन्सपेशियो ने खिचाव के कारण वह इस टूर्नामेंट में केवल चार मैच ही खेले जाए थे। उन्होंने अपने पहले अंतरराष्ट्रीय मैच में चार ओवर में 21 रन देकर एक विकेट लिया। नितीश ने भी 15 गेदो पर नाबाद 16 रन बनाकर अपना प्रभाव छोड़ा। भारत ने यह मैच सात विकेट से जीता। मयंक ने बीसीसीआई टीवी से कहा,, वह (सूर्यकुमार) आपको पूरी आजादी देते हैं।

मुझे मौका मिला। उन्होंने कहा, मैं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदार्पण कर रहा था इसलिए थोड़ा घबराया हुआ था। आईपीएल में लखनऊसुपरजयंट्स के लिए खेलते हुए लगातार दो मैचों में मैंन ऑफ द मैच रहे मयंक को पेट की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण

रिहैबिलिटेशन के लिए राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में लंबा समय बिताना पड़ा। मयंक को पता है कि उन्हें पहचान तेज गेंदबाजी से मिली है लेकिन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में बने रहने के लिए लाइन लेंथ में निरंतरता जरूरी है।

फिट्ज और दिमित्रोव बारिश से प्रभावित मैच को जीतकर शंघाई मास्टर्स में आगे बढ़े

शंघाई। विश्व रैंकिंग में सातवें स्थान पर काबिज टेलर फिट्ज और 10वीं रैंकिंग के खिलाड़ी ग्रिगो दिमित्रोव बारिश से प्रभावित शंघाई मास्टर्स के दूसरे दौर के अपने-अपने मैच को जीतकर अगले दौर में पहुंच गए। इन दोनों खिलाड़ियों का मैच शनिवार को शुरू हुआ था लेकिन बारिश की बाधा के कारण यह सोमवार को पूरा हुआ। अमेरिकी ओपन के उपविजेता फिट्ज ने शनिवार को बारिश के कारण खेल रोके जाते समय फ्रांस के टेरेंस एटमाने के खिलाफ शुरुआती सेट में 4-3 की बढ़त बना ली थी। इस 26 साल के



अमेरिका के खिलाड़ी ने 122 मिनट के मैच में विश्व रैंकिंग में 161वें स्थान पर काबिज एटमाने को 7-6 (4), 7-6 (5) हराया। फिट्ज तीसरे दौर में जापान के झालीफायर योसुके वतनुकी से खेलेंगे। अपने 100वें मास्टर्स टूर्नामेंट में खेल रहे 33 साल के दिमित्रोव ने जिजौ बर्गस पर

सोमवार को एक सेट की बढ़त के साथ फिर से शुरुआत की। दिमित्रोव ने तीसरे सेट में बर्गस की तीन बार सर्विस तोड़कर मैच 6-3, 3-6, 6-2 से अपने नाम किया। बुल्गारिया के इस खिलाड़ी के सामने तीसरे दौर में ऑस्ट्रेलिया के एलेक्स पोपिगन की चुनौती होगी। अन्य मैचों में फ्रांसिस टियाफो ने चीन के झोउ ई को 6-2, 6-4 से हराया, जबकि टालोन रिक्मपूर ने 26वीं वरीयता प्राप्त जॉर्डन थॉमसन को 6-3, 6-2 से और रोमन सफीउलिन ने कजाकिस्तान के अलेक्जेंडर बुव्लिक को 6-4, 6-2 से शिकस्त दी।

भारत ने पुरुषों की 50 मीटर पिस्टल स्पर्धा में टीम स्वर्ण जीता

विश्व जूनियर निशानेबाजी चैंपियनशिप

भाषा। नई दिल्ली

दीपक दलाल (545), कमलजीत (543) और राज चंद्रा (528) की भारतीय टीम ने पेरू की राजधानी लीमा में विश्व जूनियर निशानेबाजी चैंपियनशिप के अंतिम दिन पुरुषों की 50 मीटर पिस्टल टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। भारतीय टीम ने अजरबैजान को एक अंक से हराकर कुल 1616 अंकों के साथ स्वर्ण पदक जीता। अर्मेनिया की टीम तीसरे स्थान पर रही। भारत ने इस तरह से 13 स्वर्ण, तीन रजत और आठ कांस्य पदक सहित कुल 24 पदकों के साथ चैंपियनशिप में शीर्ष स्थान हासिल किया। इटली पांच स्वर्ण, चार रजत और चार कांस्य पदकों के साथ दूसरे जबकि नॉर्वे चार स्वर्ण सहित कुल 10 पदकों के साथ तीसरे स्थान पर रहा। भारत के मुकेश नेलवल्ली ने 50 मीटर पिस्टल स्पर्धा में व्यक्तिगत कांस्य पदक जीता, जो प्रतियोगिता में उनका छठा पदक है। उन्होंने 548 अंक बनाकर तीसरा स्थान हासिल किया।



सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित।
प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, **स्थानीय सम्पादक:** विजय प्रकाश सिंह। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।

मसूद और शर्मक के शतक से पाकिस्तान के चार विकेट पर 328 रन

मुल्तान (पाकिस्तान)। कप्तान शान मसूद और अब्दुल्लाह शफीक के शतक से पाकिस्तान ने इंग्लैंड के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन सोमवार को यहां पहली पारी में चार विकेट पर 328 रन बनाकर अपनी स्थिति मजबूत की। चार साल में पहला टेस्ट शतक जड़ते हुए मसूद ने 177 गेंद में 151 रन बनाए जबकि सलामी बल्लेबाज शफीक ने 102 रन की पारी खेली। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 253 रन की बड़ी साझेदारी भी की। मसूद ने अपनी पारी में 13 चौके और दो छक्के मारे जबकि शफीक की 184 गेंद की पारी में 10 चौके और दो छक्के शामिल रहे। इंग्लैंड ने हालांकि अंतिम सत्र में तीन विकेट चटकानकर मैच में वापसी करने की कोशिश की। दिन का खेल खत्म होने पर सऊद शकौल 35 रन बनाकर खेल रहे थे जबकि रात्रि प्रहरी नसीम शाह ने अभी खाता नहीं खोला है।

ग्लोबल शतरंज लीग: अलास्कन नाइट्स ने एसजी पाइपर्स को हराकर लगातार पांचवी जीत दर्ज की

लंदन। पीबीजी अलास्कन नाइट्स ने यहां चल रही टेक महिंद्रा ग्लोबल शतरंज लीग (जीसीएल) में रविवार चौथे दिन के दूसरे मैच में अल्पाइन एसजी पाइपर्स को 9-7 के करीबी अंतर से हराकर अपना अपराजय अभियान जारी रखा। अलास्कन नाइट्स ने इस टूर्नामेंट के आंधे चरण तक हुए कुल 15 मैचों के बाद अपने सभी पांच मुकबले जीते हैं। अलास्कन के शीर्ष खिलाड़ी अनोश गिरी के मेनस कार्लसन से हारने के बावजूद उनकी टीम 58 गेम अंक हासिल करके शीर्ष पर है। वहीं गत चैंपियन त्रिवेणी कॉन्टिनेंटल किंग्स ने अपरांड मुंबा मास्टर्स को पराजित कर दूसरा स्थान हासिल किया और टीम शीर्ष स्थान पर काबिज अलास्कन से केवल तीन गेम अंक पीछे है। कॉन्टिनेंटल किंग्स के तेजतर्र खिलाड़ी अल्लोरिजा फिरोजा ने फ्रांस के शीर्ष रेटिंग वाले खिलाड़ी मैक्सिम वैचियर-लात्रोव को हराकर प्रतियोगिता में अपना विजय क्रम बरकरार रखा।

जूनियर महिला हॉकी : ओडिशा, झारखंड, हरियाणा व गोडिशा सेमीफाइनल में रंची

मध्य प्रदेश, झारखंड, हरियाणा और ओडिशा ने सोमवार को जूनियर महिला राष्ट्रीय हॉकी चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में जगह बनाई।मध्य प्रदेश ने दिन के पहले क्वार्टर फाइनल में उत्तर प्रदेश को 2-0 से हराया। कप्तान भूमिक्शा साहू (17वें और 38वें मिनट) ने दो गोल करके मध्य प्रदेश की जीत सुनिश्चित की जो सेमीफाइनल में ओडिशा से भीड़िया दुसरे क्वार्टर फाइनल में झारखंड ने महाराष्ट्र को 3-0 से हराया। टीम सेमीफाइनल में हरियाणा के खिलाफ खेलेगी। झारखंड के लिए तीनों गोल डुंगडुंग स्वीटी (दूसरे, 19वें, 31वें मिनट) ने दागरक हैट्रिक बनाई। हरियाणा ने तीसरे क्वार्टर फाइनल में पंजाब को 3-1 से हराया। पूजा मलिक (22वें मिनट) और खासा शशि (24वें मिनट) जल्दी दो गोल करके हरियाणा को 2-0 की बढ़त दिलाई।सुखवीर को (30वें मिनट) में पंजाब के लिए गोल दागा लेकिन भटेरी (59वें मिनट) ने खेल के अंतिम क्षणों में गोल करके हरियाणा की 3-1 से जीत सुनिश्चित की।आखिरी क्वार्टरफाइनल में ओडिशा ने छत्तीसगढ़ को 5-1 से हराया। कप्तान एल ममनेश्वरी (पहले मिनट) ने मैच को शुरुआत में छत्तीसगढ़ को बर्दत दिलाई ।

जिम्नास्ट दीपा कर्माकर ने संन्यास की घोषणा की



भाषा। नई दिल्ली

ओलंपिक में भाग लेने वाली पहली भारतीय महिला जिम्नास्ट बनकर इतिहास रचने वाली दिग्गज खिलाड़ी दीपा कर्माकर ने सोमवार को संन्यास लेने की घोषणा की। रियो ओलंपिक में चौथे स्थान पर रहकर मामूली अंतर से चुकने वाली दीपा का करियर इस तरह समाप्त हो गया जिसमें वह नियमित रूप से अत्यधिक कठिन प्रोड्युोवा वॉल्ट करके लोगों को प्रभावित करती थीं। त्रिपुरा की 31 वर्षीय इस छोटटी कद की खिलाड़ी ने 2016 रियो खेलों के वॉल्ट फाइनल में चौथे स्थान पर रहकर सुर्खियां बटोरी थीं जहां उन्होंने वह सिर्फ 0.15 अंक से ओलंपिक पदक से चूक गई थीं। दीपा ने बयान में कहा, बहुत सोच-विचार और चिंतन के बाद मैंने प्रतिस्पर्धी जिम्नास्टिक से संन्यास लेने का फैसला किया है।